Braj Ras Madhuri (Hindi) Part-1

Copy right © Radha Govind Samiti

Published by:

Radha Govind Samiti

Golok Dham, H.A.F. (B) Part-1, Sector-10, Dwarka,
New Delhi - 110075 Phone: 011-25081088
E-mail: rgs108del@yahoo.com

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ब्रजरस माधुरी

भाग – 1

श्रीमत्पदवाक्यप्रमाणपारावारीण,
वेदमार्गप्रतिष्ठापनाचार्य, निखिलदर्शनसमन्वयाचार्य,
सनातनवैदिकधर्मप्रतिष्ठापनसत्संप्रदायपरमाचार्य,
भक्तियोगरसावतार, भगवदनन्त श्रीविभूषित

जगद्गुरु १००८

स्वामि श्री कृपालु जी महाराज

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जगद्गुरु कृपालु परिषत्

प्रकाशकीय

जगद्गुरु श्री कृपालु जी महाराज की पुस्तक **ब्रजरस माधुरी** में उनके द्वारा रचित काव्य, काव्य ही नहीं अपितु, उनके दिव्य प्रेम से ओतप्रोत हृदय की मधुर-मधुर झनकारें हैं। जैसा कि पुस्तक के नाम से ही स्पष्ट है, दिव्य रसों में सर्वश्रेष्ठ ब्रजरस का माधुर्य निर्झरित होता है इस पुस्तक के संकीर्तनों से। प्रत्येक जीव आनन्द स्वरूप भगवान् का सनातन अंश है। अतएव अपने अंशी भगवान् को प्राप्त करके ही उसे वास्तविक आनन्द की प्राप्ति हो सकती है। समस्त भगवत्स्वरूपों में ब्रज के श्री राधाकृष्ण का स्वरूप ही मधुरतम है। अतएव उन्हीं की भक्ति से ही दिव्यानन्द के उज्ज्वलतम स्वरूप की प्राप्ति सम्भव है। श्री राधाकृष्ण-भक्ति की आधारशिलायें हैं- दीनता, अनन्यता एवं निष्कामता, (ब्रह्मलोक पर्यंत के सुखों एवं पाँचों प्रकार की मुक्तियों की कामना का परित्याग)। किन्तु कलियुग के विशेषरूपेण पतित जीवों के हृदय में इन बातों को उतारना, और वह भी ऐसे समय में जब अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिये अहंकार युक्त इस जीव की झूठी

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

प्रशंसा करके उसके अहंकार को और अधिक वर्धित करने वाले एवं सांसारिक कामनाओं की सिद्धि के लिये ही ईश्वर-भक्ति का उपदेश देने वाले लोकरंजन उपदेशक ही चारों ओर विद्यमान हों, अत्यन्त ही दुरूह कार्य है। किन्तु जगद्गुरु श्री कृपालु जी महाराज की भक्ति रचनाओं की यह अभूतपूर्व विशेषता है कि वे इस असम्भव से कार्य को सहज ही सम्भव कर देती हैं। संकीर्तनों में व्यक्त भाव इतने मार्मिक व हृदय को आलोड़ित करने वाले हैं कि दीनता एवं निष्कामता के भाव सहज ही साधक के हृदय में अपनी जड़ें जमाने लगते हैं, जिससे वह बिना किसी विशेष प्रयास के ही विशुद्धा भक्ति के मार्ग पर अग्रसर होता जाता है। भक्ति-पथ के पथिक प्रत्येक साधक को 'ब्रजरस माधुरी' के सहज माधुर्य का पान करके अपनी देवदुर्लभ मानव देह को अवश्य ही सफल करना चाहिये।

— राधा गोविंद समिति

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

प्राक्कथन

पुस्तक के नाम से ही पुस्तक की विषय–सामग्री का स्पष्टीकरण हो जाता है। दिव्यानन्द के अनेकों स्तर हैं, जिनमें सर्वश्रेष्ठ है– ब्रजरस। उस ब्रजरस की प्राप्ति श्री राधा–कृष्ण की निष्काम रागानुगा भक्ति के द्वारा ही संभव है। रागानुगा–भक्ति दास्य, सख्य, वात्सल्य, माधुर्य इन चार भावों से की जाती है। इन चारों भावों में भी माधुर्य भाव सर्वश्रेष्ठ है; क्योंकि प्रथम तो उसमें अन्य समस्त भावों का समावेश हो जाता है और दूसरा कारण यह है कि इसी माधुर्य भाव की निष्काम भक्ति द्वारा ब्रजरस के सर्वश्रेष्ठ स्तर कुंज रस की प्राप्ति हो सकती है। बस! यह अन्तिम कक्षा है, जहाँ तक कोई जीव जा सकता है। उस सर्वोच्च लक्ष्य की प्राप्ति–हेतु साधक के हृदय में जिन भावों की पुष्टि परमावश्यक है, उन्हीं को इस पुस्तक में संकलित संकीर्तनों में

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

अभिव्यक्त किया गया है। भगवदनुरागी जन इस पुस्तक से अवश्य ही कुछ न कुछ लाभ प्राप्त कर सकेंगे, ऐसी आशा है।

हरेर्नामैव नामैव नामैव मम जीवनम्।
कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा॥

(नारद पुराण)

जगद्गुरु कृपालु

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जगद्गुरु - आदेश

श्रीकृष्ण का माधुर्य-भाव युक्त निष्काम प्रेम प्राप्त कर, उनकी नित्य सेवा ही तुम्हारा लक्ष्य है।

वह दिव्य निष्काम प्रेम, गुरुकृपा द्वारा अंतःकरण-शुद्धि होने पर ही प्राप्त होगा।

वह अंतःकरण शुद्धि, गुरु द्वारा निर्दिष्ट साधना द्वारा ही संभव है।

साधना - श्रीराधाकृष्ण का रूपध्यान करते हुये (स्वेच्छा से बनाये हुये रूप में दिव्य-भावना रखना है) रो कर उनके नाम गुण लीलादि का संकीर्तन करो।

सदा श्रीकृष्ण को अपने साथ ही मानो।

मोक्ष पर्यंत की कामना छोड़कर, केवल दिव्य शुद्ध प्रेम की कामना से ही प्रेम करो।

"वे ही मेरे हैं," इस भावना को निरंतर दृढ़ करो, एवं श्यामिलन की परम व्याकुलता पैदा करो।

परदोष दर्शनादि कुसंगों से बचो।

मानव देह का प्रत्येक क्षण अमूल्य मानो।

— मैं सदा तुम्हारा सहायक हूँ — तुम्हारा कृपालु

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

— श्री गुरवे नमः —

र नागरिहिं श्याम रस,

याम नागरिहिं गौर ।

गरिहुं रस की बनी,

स दोउ रस । सिरमौर ॥

गुरु-चरण शरण गहु

तु श्री युगल किशोर ।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

र कृपालु हरि कृपा तें

लहु प्रेम चितचोर ॥

कृपालु

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

अनुक्रमणिका

दैनिक प्रार्थना	1
भगवती माँ की आरती	3
जगद्गुरु की आरती	4
युगल सरकार की आरती	6
श्री कृष्ण जी की आरती	11
श्री भानुदुलारी की आरती	13
आरती भानुदुलारी (बाल रूप)	15
आरती श्री कृष्ण (बाल रूप)	17
साधना के नियम	19
देखो भैया	20
साधक हेतु कतिपय स्मरणीय निर्देश	21
कृपालु दिव्यादेश	24
साधना	25
श्री जगद्गुरु मुखारविन्द से	27

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

क्रम सं.	ध्रुव-पंक्ति	पृष्ठ संख्या
1.	अजन्मा जनमेउ ब्रज महँ आय	271
2.	अब तो कृपा करो श्री राधे	67
3.	अब न और तरसावो रसिया	233
4.	अलबेली सरकार वृषभानुदुलार	69
5.	अस मेरो श्यामा श्याम धाम	157
6.	आज तो प्रकट भयो ब्रज बड़ो ठाकुर	288
7.	आजा आजा दरस दिखा जा	70
8.	आजा आजा पुनि ब्रज आजा नँदनंदन	32
9.	आजा आजा राजा राम, मन भाजा	241
10.	आजा आजा राधे आके ना जा मेरी राधे	74
11.	आजा नँदनंदन आजा नँदनंदन	32
12.	आजा प्रानहुँ ते प्यारे, आजा वृन्दावन वारे	35
13.	आजा प्यारी भानुदुलारी, आजा बरसाने	72
14.	आजा बरसाने वारी प्यारी प्यारी प्यारी	276
15.	आ जावो मम राजा राम	241
16.	आजु होरी है होरी है आजु होरी है	235
17.	आपका दर्शन गोविन्द राधे	272
18.	इक नज़र उनको देखा गज़ब हो गया	301
19.	इनकी नज़रों में मय का जाम है तोबा	301
20.	ऐसी पिला दे साकी, बन जाये तू हमारा	302

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

क्रम सं.	ध्रुव-पंक्ति	पृष्ठ संख्या
21.	ऐसी मेरी राधे रानी, प्रेम सुखदानी	93
22.	ओ प्यारी प्यारी प्यारी, प्यारी बरसाने	101
23.	ओ माँ श्यामा तेरी जो चरण शरण आये	100
24.	ओरे मोरे मन, राधिका रमन	159
25.	ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय	264
26.	ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय	265
27.	ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय	265
28.	ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय	266
29.	कदम्ब की डारी झूलें राधा प्यारी	104
30.	कृष्ण एव मम स्वामी, कृष्ण एव सखा	34
31.	गणपतये नमः गणपतये नमः	295
32.	गाइये गणपति जगवंदन	294
33.	गाने आयी मैं बधाई, प्रेम दे कौशल्या	242
34.	गावो शिव ध्यावो शिव करो शिव सेवा	268
35.	गुन गाओ रे मना, राधारमना	35
36.	गुरुः कृपालुर्मम शरणं	29
37.	चलु मन श्री वृन्दावन धाम	160
38.	चलो री बधाई गाने नंद महल में	272
39.	चाकर हम श्री गोवर्धन के	289
40.	छोटो सो कन्हैया गोविन्द राधे	295

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

क्रम सं.	ध्रुव-पंक्ति	पृष्ठ संख्या
41.	जगन्नाथ नाथों के नाथ	291
42.	जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा	293
43.	जय जय गोपाला, गोपाला, भोला	269
44.	जय जय जय जय भगवति माता	237
45.	जय जय जय जय माधव	192
46.	जय जय जय सद्गुरु सरकार	30
47.	जय जय दशरथ नंदन राम ललन	244
48.	जय जय दशरथ नंदन राम	248
49.	जय जय नँदनन्दा, ब्रजचन्दा	36
50.	जय जय नँदनंदन, जय जय यशुदा	268
51.	जय जय निज छवि पर हरि वारी	170
52.	जय जय नृसिंह अवतार की	292
53.	जय जय पिय प्यारी, सुकुमारी	109
54.	जय जय प्यारी प्यारी प्यारी जय जय	168
55.	जय जय बरसाने वारी प्यारी प्यारी प्यारी	109
56.	जय जय रसिक जीवन, जय जय गिरि	289
57.	जय जय राधा रमना, राधा रमना	39
58.	जय जय राधे प्रेम अगाधे	104
59.	जय जय राधे राधे राधे, जय जय राधे	136
60.	जय जय राम, जय जय राम	243

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

क्रम सं.	ध्रुव-पंक्ति	पृष्ठ संख्या
61.	जय जय वृषभानुदुलारी	224
62.	जय जय श्यामा जय ब्रजबाम	174
63.	जय जय सीताराम सीताराम	256
64.	जयति रँगीली महलन वारी	106
65.	जय बलराम जय जय घनश्याम	287
66.	जय राधे कृष्ण राधे	163
67.	जय राधे जय कृष्ण जय वृन्दावन	169
68.	जय राघवेन्द्र सरकार की, जय सीता	259
69.	जय राघवेन्द्र सरकार की,	260
70.	जय वृंदाविपिन बिहारी	132
71.	जय सीयाराम जय जय सीयाराम	260
72.	जय सीताराम, जय जय सीताराम	264
73.	जय हो जय हो जय हो जय हो जय	262
74.	जय हो जय हो जय जो प्यारी	226
75.	जय हो जय हो जय हो प्यारी बरसाने	276
76.	जय हो बड़े ठाकुर, हल मूसलधर	286
77.	जायो यशुमति लाला नाचे गावें	268
78.	जेंवत मम सद्गुरु सरकार	234
79.	जो पिय रुचि महँ रुचि राखे	40
80.	ठाकुर युगल किशोर हमारो	171

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

क्रम सं.	ध्रुव-पंक्ति	पृष्ठ संख्या
81.	तुम मेरे थे मेरे हो मेरे रहोगे	41
82.	तेरा अंत न पायो कोऊ अनंत	293
83.	तेरा नाम सुन के दाता दर पर फकीर	303
84.	तेरी यारी पै बिहारी	43
85.	तोपै वारी वारी बरसाने वारी प्यारी	80
86.	दाउ भैया सँग कन्हैया जायँ बलि लखि	287
87.	दीनबंधु दीनानाथ, मेरे नाथ भोले नाथ	267
88.	द्वापर युग महँ गिरि गोवर्धन	290
89.	धनि धनि रसिकन धन गोवर्धन	289
90.	धन्य जनक धनि जननी आज	237
91.	नहिं बिसरत सखि छैल बिहारी	43
92.	नाचो गाओ सब साधक समुदाय	236
93.	नित सेवा माँगूँ श्यामा श्याम तेरी	177
94.	नृप दशरथ घर अजिर बिहारी	246
95.	नृप दशरथ घर बजत बधाई	245
96.	पिय प्यारी पिय प्यारी	181
97.	पिय प्यारी वृषभानुदुलारी	115
98.	प्रथम नमन गुरुवर पुनि गिरिधर	31
99.	प्राण प्रियतम, प्राणधन मम	46
100.	प्यारी जू के प्यारे हैं, प्यारे प्यारे प्यारे हैं	45

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

क्रम सं.	ध्रुव-पंक्ति	पृष्ठ संख्या
101.	प्यारी प्यारी की जय, सुकुमारी की जय	118
102.	प्यारी प्यारी प्यारी हैं बरसाने वारी हैं	116
103.	प्यारी प्यारी भोरी भारी सुकुमारी	137
104.	प्यारो प्यारो प्यारो प्यारी प्यारी राधे	189
105.	बड़े भैया बलराम छोटे भैया घनश्याम	285
106.	बरसाने वारी हैं अति भोरी भारी हैं	117
107.	बलिहार ब्रजेन्द्रकुमार	48
108.	बलिहार युगल सरकार	186
109.	बलिहारी बरसाने वारी प्यारी के चरन	188
110.	बलिहारी वृषभानुदुलारी जाकर	125
111.	बाँके बिहारी जू पै वारी, वारी वारी वारी	49
112.	बोलो बोलो रे मना गौर हरी	238
113.	ब्रजराज आज फिर आजा	46
114.	भज प्यारो प्यारो प्यारो प्रानन प्यारो	49
115.	भज ब्रजरस खानी राधारानी	121
116.	भज श्रीकृष्णं भज श्री कृष्णं	195
117.	भज सतचित सुखघन नँदनन्दन	196
118.	भजु गौरांग भजु गौरांग	238
119.	भजु मन मेरे आठों याम	249
120.	भोरी भारी सुकुमारी मेरी राधा प्यारी	120

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

क्रम सं.	ध्रुव-पंक्ति	पृष्ठ संख्या
121.	मतवारी प्यारी चाल, मेरो यशुदा को लाल	51
122.	मन करु सुमिरन राधे रानी के चरन	122
123.	मन तेरो साँचो यार, ब्रजराजकुमार	52
124.	मम ठकुरानी अवढरदानी	127
125.	मम प्यारी वृषभानुदुलारी	172
126.	महाप्रभु चैतन्य आनंदकंदा	240
127.	मेरी अलबेली सरकार	161
128.	मेरी छैल छबीली राधे	196
129.	मेरी प्राण प्यारी बरसाने वारी प्यारी	203
130.	मेरी प्रानन प्यारी आजा	132
131.	मेरी प्यारी प्यारी प्यारी	193
132.	मेरी बरसाने वारी प्यारी प्यारी प्यारी	111
133.	मेरी राधारमण सों यारी	53
134.	मेरी राधारानी मेरी प्रेम रस खानी	94
135.	मेरी राधे जू मेरी राधे जू	128
136.	मेरी राधे रानी महरानी	119
137.	मेरी श्यामा मेरे श्याम	176
138.	मेरी श्यामा मेरे श्याम	197
139.	मेरी श्री वृषभानुदुलारी	130
140.	मेरी स्वामिनि श्यामा प्यारी	129

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

क्रम सं.	ध्रुव-पंक्ति	पृष्ठ संख्या
141.	मेरे प्राणाधार हैं	198
142.	मेरे प्रानन प्यारे आजा	47
143.	मेरे बड़े ठाकुर गोरे गोरे हलधर	286
144.	मेरे मन में समाय गयो साँवरिया	56
145.	मेरे साकी ने ऐसा करम कर दिया	303
146.	मेरो गोपाला मेरो नंद लाला	269
147.	मेरो प्यारो नँदनंदन बनवारी	227
148.	मेरो राधारमण चितचोर	55
149.	मेरो राधा रमन, मेरो जीवन धन	58
150.	मैं तो राधे राधे गाऊँ कालिंदी तट पे	134
151.	मोर गौर हरि गौर मोर गौर हरी	240
152.	मोरी भोरी सी किशोरी	137
153.	रँगीली महलन वारी, सोइ मम	131
154.	रटें राधे राधे गिरिधारी रे	143
155.	रस बरसाने वारी बरसाने वारी	97
156.	रसिकन को सिरमोर मोर पिय	62
157.	रसिया सँग अलि खेलहु होरी	236
158.	राघवेन्द्र रघुपति श्री राम	252
159.	राधा मेरी ठकुरानी	144
160.	राधे अधाधुंध दरबार रटे जा राधे राधे	139

RADHA GOVIND SAMITI

क्रम सं.	ध्रुव-पंक्ति	पृष्ठ संख्या
161.	राधा प्रेम अगाधा स्वामिनि	143
162.	राधावर पर सरवस हारी	200
163.	राधावल्लभ मेरो प्रानन प्रान	64
164.	राधे गोविन्दा गोविन्दा	207
165.	राधे ठकुरानी राधे महरानी	145
166.	राधे गोविन्द गोविन्द गोविन्द राधे	211
167.	राधे राधे गोविंद गोविंद राधे	206
168.	राधे गोविन्द गोविन्द बोल	208
169.	राधे गोविंद गोविंद राधे	216
170.	राधे राधे गोविंद, गोविंद राधे राधे	204
171.	राधे राधे प्रेम अगाधे	133
172.	राधे राधे राधे श्री राधे	140
173.	राम का जन्म सुनि नाचें सब चराचर	253
174.	राम राघव, राम राघव	253
175.	लाखों महफ़िल जहाँ में यूँ तो	304
176.	विट्ठल विट्ठल विट्ठला	64
177.	श्यामा आ गईं हैं संग लेके ब्रज बामा	277
178.	श्यामा प्यारी की जय, नथवारी की जय	217
179.	श्यामा माँ जो तेरी, पद रज ही मिलि	102
180.	श्यामा मेरी ठकुरानी श्याम मेरे ठाकुर	220

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

क्रम सं.	ध्रुव-पंक्ति	पृष्ठ संख्या
181.	श्यामा ही हैं श्याम अरु श्याम ही हैं	225
182.	शिव शंकर हर हर बम भोले	267
183.	श्री गणेश लंबोदर आदि पूज्यदेवा	295
184.	श्री गोविंद गोविंद बोल	210
185.	श्री ब्रजराजकुमार प्यारो प्यारो	218
186.	श्री राधे राधे गोविंद राधे	179
187.	श्री राम जै राम अवध बिहारी	247
188.	श्री राधे राधे राधे राधे राधे राधे	151
189.	श्री राधे राधे राधे राधे राधे	147
190.	श्री राधेरानी मेरी ठकुरानी	149
191.	श्री राधे श्री राधे प्रेम अगाधे श्री राधे	147
192.	श्री राम जय राम जय जय राम	242
193.	श्री राम जय राम जय जय राम	249
194.	श्री राम जय राम जय जय राम	259
195.	श्री राम पूर्णब्रह्म सुखधाम	247
196.	सत चित आनंद गोविन्द राधे	228
197.	सदा सुहागिनि स्वामिनि मोरी	151
198.	सरकार माफ हो गुस्ताखी	307
199.	साकी लुटा रहा है मयखाना ए ज़माना	308
200.	सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम	245

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

क्रम सं.	ध्रुव-पंक्ति	पृष्ठ संख्या
201.	सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम	255
202.	सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम	257
203.	सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम	263
204.	सुन के आया हूँ सरकार तेरे कूचे में	306
205.	स्वामिनि श्यामा स्वामी श्याम	162
206.	स्वामी सखा सुत पति श्याम बता दे	300
207.	हम तो तेरी अदा पर फ़िदा हो गये	308
208.	हमारी राधे रानी रस की खानी	153
209.	हमारे मन भाय गये श्यामा श्याम	229
210.	हमारो गोपाला। हमारो नंदलाला	270
211.	हमारो दोउ ठाकुर श्यामा श्याम	231
212.	हमारो धन राधा कृष्ण राधा कृष्ण राधा	232
213.	हमारो धन राधा राधा राधा राधा राधा	155
214.	हमारो पिय नँदनंदन बनवारी	65
215.	हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे	261
216.	त्रेता में जोइ बनि आये राम	258

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

दैनिक प्रार्थना

श्री राधाकृष्णाभ्यां नमः

श्री गुरवे नमः श्री गुरवे नमः श्री गुरवे नमः

आचार्यं मां विजानीयान्नावमन्येत कर्हिचित्।
न मर्त्यबुद्ध्याऽसूयेत सर्वदेवमयो गुरुः॥

हे परम प्रियतम पूर्णतम पुरुषोत्तम श्री कृष्ण! तुम से विमुख होने के कारण अनादिकाल से हमने अनन्तानन्त दुःख पाये एवं पा रहे हैं। पाप करते करते अन्तःकरण इतना मलिन हो चुका है कि रसिकों द्वारा यह जानने पर भी कि तुम अपनी भुजाओं को पसारे अपनी वात्सल्यमयी-दृष्टि से हमारी प्रतीक्षा कर रहे हो, तुम्हारी शरण में नहीं आ पाता।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

हे अशरण शरण! तुम्हारी कृपा के बिना तुम्हें कोई जान भी तो नहीं सकता। ऐसी स्थिति में, हे अकारण करुण! पतितपावन श्रीकृष्ण! तुम अपनी अहैतुकी कृपा से ही हमको अपना लो।

हे करुणा सागर! हम भुक्ति-मुक्ति आदि कुछ नहीं माँगते, हमें तो केवल तुम्हारे निष्काम प्रेम की ही एकमात्र चाह है।

हे नाथ! अपने विरद की ओर देखकर इस अधम को निराश न करो।

हे जीवनधन! अब बहुत हो चुका, अब तो तुम्हारे प्रेम के बिना यह जीवन मृत्यु से भी अधिक भयानक है। अतएव

प्रेमभिक्षां देहि, प्रेमभिक्षां देहि, प्रेमभिक्षां देहि।

साकेत बिहारी श्री राघवेन्द्र सरकार की जय।
वृन्दावन बिहारी श्री यादवेन्द्र सरकार की जय।
श्रीमद्सद्गुरु सरकार की जय।

जय जय श्रीराधे जय जय श्रीराधे जय जय श्रीराधे।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

भगवती माँ की आरती

आरती भगवति माँ की कीजै,
जय जय जननि जगद्गुरु की जै।
सुकृत कौन अस वेद बतायो,
जासों लाल कृपालुहिं पायो।
बनि जननी निज गोद खिलायो,
सब विधि हलरायो दुलरायो।
मोहिं निज सुत सेवा वर दीजै,
जय जय जननि जगद्गुरु की जै।
तेरो सुत मानत सब तेरो,
माँ इक काम करा दे मेरो।
मोहिं सो ले बनाय निज चेरो,
रहिहौं ऋणी तोर बहुतेरो।
माँ हौं हूँ तव सुत सुन लीजै,
जय जय जननि जगद्गुरु की जै।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जगद्गुरु की आरती

जयति जगद्गुरु गुरुवर की,
गावो मिलि आरती रसिकवर की।
गुरुपद-नख-मणि-चन्द्रिका प्रकाश,
जाके उर बसे ताके मोह तम नाश।
जाके माथ नाथ तव हाथ कर वास,
ताते होय माया मोह सब ही निरास।
पावे गति मति रति राधावर की,
गावो मिलि आरती रसिकवर की॥ 1॥

अरे मन मूढ़! छाँडु नारी नर हाथ,
गुरु बिनु ब्रह्म श्यामहूँ न देंगे साथ।
कोमल कृपालु बड़े कृपासिंधु नाथ,
पाके इन्हें आज तू अनाथ हो सनाथ।
इन्हीं के आधीन कृपा गिरिधर की
गावो मिलि आरती रसिकवर की॥ 2॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

भक्तियोग-रस-अवतार अभिराम,

करें निगमागम समन्वय ललाम।

श्यामा-श्याम नाम, रूप, लीला, गुण, धाम,

बाँटि रहे प्रेम निष्काम बिनु दाम।

हो रही सफल काया नारी नर की,

गावो मिलि आरती रसिकवर की ॥ 3 ॥

लली लाल लीला का सलोना सुविलास,

छाया दिव्य दृष्टि बिच प्रेम का प्रकाश।

वैसा ही विनोद वही मंजु मृदु हास,

करें बस बरबस उच्च अट्टहास।

झूमि चलें चाल वही नटवर की,

गावो मिलि आरती रसिकवर की ॥ 4 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधे राधे राधे राधे राधे राधे

युगल सरकार की आरती

आरती प्रीतम, प्यारी की, कि बनवारी, नथवारी की।
दुहुँन सिर कनक-मुकुट झलकै,
दुहुँन श्रुति कुण्डल भल हलकै,
दुहुँन दृग प्रेम - सुधा छलकै,
चसीले बैन, रसीले नैन, गँसीले सैन,
दुहुँन मैनन मनहारी की ॥ 1 ॥

दुहुँनि दृग चितवनि पर वारी,
दुहुँनि लट-लटकनि-छवि न्यारी,
दुहुँनि भौं-मटकनि अति प्यारी,
रसन मुख पान, हँसन मुसकान, दसन दमकान,
दुहुँनि बेसर छवि न्यारी की ॥ 2 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

एक उर पीताम्बर फहरै,
एक उर नीलाम्बर लहरै,
दुहुँन उर लर-मोतिन छहरै,
कंकनन खनक, किंकिनिन झनक,नूपुरन भनक,
दुहुँन रुनझुन धुनि प्यारी की ॥ 3 ॥

एक सिर मोर-मुकुट राजै,
एक सिर चूनरि-छवि छाजै,
दुहुँन सिर तिरछे भल भ्राजै,
संग ब्रज-बाल,लाड़िली-लाल,बाँह गल डाल,
'कृपालु' दुहुँन दृग चारी की ॥4॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मत्प्रेयान् राधिकाप्रेयान् मद्भवो राधिकाधवः।
तस्मादपि गरीयान्यो कृपालुर्मे जगद्गुरुः।।
गुरुं भजति श्रीकृष्णः श्रीकृष्णं भजते गुरुः।
सिद्धान्ततस्त्वभेदेऽपि कृपालुर्मे गुरुर्महान्।।

यस्य साक्षात् भगवति ज्ञानदीपप्रदे गुरौ।
मर्त्यासद्धीः श्रुतं तस्य सर्वं कुंजरशौचवत्।।
एष वै भगवान् साक्षात् प्रधान पुरुषेश्वरः।
योगेश्वरैर्विमृग्यांघ्रिर्लोकोऽयं मन्यते नरम्।।

यमुना निकट तटस्थित वृन्दावन कानने महारम्ये।
कल्पद्रुमतलभूमौ चरणं चरणोपरिस्थाप्य।।
तिष्ठंतं घननीलं स्वतेजसा भासयन्तमिह विश्वम्।
पीताम्बरपरिधानं चन्दनकर्पूरलिप्तसर्वांगम्।।
आकर्णपूर्णनेत्रं कुण्डलयुगमंडितश्रवणम्।
मंदस्मितमुखकमलं सकौस्तुभोदारमणिहारम्।।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

वलयांगुलीयकाद्यानुज्ज्वलयन्तं स्वलंकारान्।
गलविलुलितवनमालं स्वतेजसापास्तकलिकालम्।।
गुंजारवालिकलितं गुंजापुंजान्विते शिरसि।
भुंजानं सह गोपैः कुंजांतर्वर्तिनं नमत।।
मन्दारपुष्पवासितमंदानिल सेवित परानन्दम्।
मन्दाकिनीयुतपदं नमत महानन्ददं महापुरुषम्।।
सुरभीकृतदिग्वलयं सुरभिशतैरावृतः परितः।
सुरभीतिक्षपणमहासुरभीमं यादवं नमत।।

अशरण-शरण महाप्रभो, तुम स्वामी हम दास।
कीजै कृपा कृपालु मम, दीजै गुरु सहवास।।
तुम दीनन रखवार हम, अहंकार अवतार।
अस करु कृपा 'कृपालु' अब,दीन बनूँ सरकार।।
हौं ऐसो हौं पतित जो, पतित न आपुहिं मान।
ऐसे पतित विचित्र को, पावन करु तब जान।।
सबै भिखारी जगत के, जेतिक नातेदार।
दिव्य प्रेम आनन्द के, तुम इक साहूकार।।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

धनि गुरुवर धाम निवास सुनो मन,
पुण्यन पुंज सों पाइये जू।
बनि दीन प्रपन्न रहो गुरु के,
नित सेवा सों ताहि रिझाइये जू।
मन ते हरि को गुरु को सुमिरो,
रसना सों सदा गुन गाइये जू।
क्षणभंगुर जीवन जानि मना,
छनहूँ जनि व्यर्थ गँवाइये जू।

सब धामन वारो वृन्दावन पै,
औ वृन्दावन हूँ गुरुधाम पै वारो।
जो गुरु के पद प्रीति जुरी तो,
भज्यो चलि आवेगो ब्रह्म बिचारो।
है हरि निर्मल भक्तन को,
गुरु है अधमों को उधारन हारो।
औरन को गुरु हो या न हो,
गुरु मेरो 'कृपालु' सुभाग हमारो।।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

श्री कृष्ण जी की आरती

आरती आरति-हारी की, कि वृन्दाविपिन बिहारी की

बँधी सिर तिरछी सी पगड़ी,

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जड़ी मणि-मुक्तन मुकुट लड़ी,

अड़ी अड़बंग मोर- पँखुड़ी,

मुकुट की लटक, भृकुटि की मटक, लकुटि की अटक,

चटक केशर छवि न्यारी की ॥ 1 ॥

नाक बिच भल बुलाक हलकै,
कान कुण्डल झलमल झलकै,
दृगंचल चंचल रस छलकै,
अलक की हलक, पलक की छलक, कलक की झलक,
ललक देखन छवि प्यारी की ॥ 2 ॥

सुघर उपरैना उर राजै,
पीत पट अटपट छवि छाजै,
काछनी नट सी कटि भ्राजै,
नैन गति मैन, सैन अति पैन,बैन रति दैन,
लैन मति ब्रज नर नारी की ॥ 3 ॥

पाणि मणिमय कंकण सोहै,
कनक-किंकिनि-धुनि मन मोहै,
अनूपम की उपमा को है,
नन्द आनन्द,कन्द-आनन्द,सच्चिदानन्द,
'कृपालु',चन्द-तनु-कारी की ॥ 4 ॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

राधे राधे राधे राधे राधे राधे

श्री भानुदुलारी की आरती

आरती भानुदुलारी की, कि श्री बरसाने वारी की।
बिराजैं सिंहासन श्यामा,
दिव्य श्री वृन्दावन धामा,
ढुरावैं चँवर सुघर बामा,
पलोटैं पग पूरनकामा,
लली पग अंक, चापि निःशंक, श्याम जनु रंक,
पाइ निधि पारस प्यारी की ॥ 1 ॥

गौर सिर कनक मुकुट राजै,
चन्द्रिका चारु सुछवि छाजै,
कुटिल कुन्तल अलि भल भ्राजै,
लखत जेहि शिखि कलाप लाजै,
माँग सिन्दूर, मोतियन पूर, सजीवन मूर,
ब्रह्म गोवर्धनधारी की ॥ 2 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

श्रवण बिच करणफूल झलकै,
नासिका बिच बेसर हलकै,
नयन बिच प्रेम सुधा छलकै,
बन्धु बल के लखि लखि ललकै,
चपल नथ–चमक, दसन–दुति–दमक, सुमुखि–मुख–रमक
मधुर मुसुकनि सुकुमारी की ॥ 3 ॥

मोतियन लर उर मणि माला,
चिबुक झलकत इक तिल काला,
शम्भु शुक दैं सँग कर ताला,
लली गुन गावति ब्रजबाला,
कबहुँ मुख मुरनि, कबहुँ दृग दुरनि, कबहुँ दृग जुरनि
कबहुँ सुधि भुरनि बिहारी की ॥ 4 ॥

किनारिन जरिन नील सारी,
कंचुकी कुमकुम रँग वारी,
चुरी कर कंकन मनहारी,
छीन कटि किंकिनि छवि न्यारी,
पायलनि पगनि, मिहावरि लगनि, बीछुवनि नगनि,
'कृपालु' सुकीर्ति–कुमारी की ॥ 5 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

आरती भानुदुलारी

(बाल रूप)

आरति कीर्ति कुँवरि की कीजै,
जय जय भानुनंदिनि की जै।
कौन सुकृति अस कीरति तेरी,
सुता योगमाया भइ तेरी।
तेरी सुता स्वामिनी मेरी,
अगनित उमा रमा हैं चेरी।
मोहूँ निज सहचरि करि लीजै,
जय जय भानुनंदिनि की जै।।
जग जननी है लाली तेरी,
जग पालन कर लाली तेरी।
लाल स्वामिनी लाली तेरी,
सोइ लाली गति मति रति मेरी।
मोहिं 'कृपालु' टुक ब्रजरस दीजै,
जय जय भानुनंदिनि की जै।।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कीर्ति घर प्रकटीं कीर्तिकुमार।
विधि हरि हर कर जय जय कार।
करति स्वस्तिवाचन श्रुति चार।
ब्रह्मादिक आरती उतार।
नारद शारद कह बलिहार।
नेति नेति जेहि वेद पुकार।
सोइ बनि आईं भानुदुलार।
चिन्मय दिव्य गौर तनु धार।
छवि पर कोटि काम दउँ वार।
कुँवरि कृपा मूरति साकार।
दीनन आदर येहि दरबार।
करहु 'कृपालु' कृपा सरकार।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

आरती श्री कृष्ण

(बाल रूप)

आरति यशुमति शिशु की कीजै।
जय जय जय नँदनंदन की जै॥
सुकृत कौन यशुमति अस तेरो।
जासों ब्रह्म भयो शिशु तेरो।
विधि हरि हरहुँ सेव्य शिशु तेरो,
स्वामि सखा सुत पति सोइ मेरो।
मोहिँ अपनाय कृपा अस कीजै,
जय जय जय नँदनंदन की जै॥
जगतपिता है यह शिशु तेरो,
मैं भी इक जग महँ शिशु तेरो।
भलो बुरो जैसो हूँ तेरो,
कोउ अवलंब और नहिं मेरो।
मोहिँ 'कृपालु' अपनो करि लीजै,
जय जय जय नँदनंदन की जै॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

बलिहार यशुमति शिशु बलिहार।
शिशु पर कोटिन प्रानन वार।
शिशु आनन्दघन तन बलिहार।
शिशु तनु चिन्मय दिव्य निहार।
शिशु तनु नील वरन रिझवार।
शिशु को किय यशुमति शृंगार।
शिशु लखि कोटि काम दउँ वार।
शिशु लखि विधि हरि हर बलिहार।
शिशु अस्तुति कर वेदहुँ चार।
शिशु तनु चुवत प्रेम रस धार।
शिशु हित आशिष दें ब्रजनार।
शिशु चिरजीवें कह ब्रजनार।
शिशु लखि जोइ सुधि देय बिसार।
शिशु हित देति सखिन उपहार।
शिशु जयकार करें ब्रजनार।
भाल 'कृपालु' दिठौना डार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

साधना के नियम

1. रूपध्यान करते हुए ही संकीर्तन करो।

2. अत्यन्त दीन भाव उत्पन्न करो।

3. हरि गुरु के अनुकूल ही चिन्तन करो।

4. क्षण क्षण सर्वत्र-सर्वदा हरि स्मरण करो।

5. भाव प्रकट करने का दंभ कभी न करो।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

6. मोक्ष-पर्यन्त की कामना कभी न करो।

7. अन्य साधकों में सम्मान की भावना करो।

देवी मैया !

श्रीराधाकृष्ण ही तुम्हारे सर्वस्व हैं। उन्हें बिलकुल ही अपना समझो। यह न सोचो कि वे तो परात्पर सर्वेश्वर सर्वशक्तिमान भगवान आदि हैं। वे सदा अपने दोनों हाथों को पसारे हुये तुम्हारे लिये खड़े हैं। केवल तुम एक बार समस्त सांसारिक विषयों से मुख मोड़कर उनकी ओर निहार दो। बस, फिर वे तुम्हारे एवं तुम उनके हो जावोगी। वे तो अकारण करुण हैं, कुछ साधनादि की भी अपेक्षा नहीं रखते। उनका तो स्वभाव ही है अकारण कृपा करने का। तुम विश्वास करो, बस, काम बन जाय। तुम अपने आप को सदा के लिये उनके हाथों बेच दो, वे, तब ठीक कर देंगे। देखो उन्होंने महान से महान पापियों को भी हृदय से लगाया है, फिर तुम्हें क्यों अविश्वास सा संकोच है। एक बार ऐसा करके तो देखो।

तुम्हारा

कृपालुदास

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

साधक हेतु कतिपय स्मरणीय निर्देश

1. सतर्क होकर साधना करने के लिए बैठो। यदि आलस्य आने लगे तो अपने आप खड़े हो जाओ। लेकिन शर्त यह है, चिन्तन श्यामसुन्दर का ही हो।

2. अपने इष्टदेव का गुणगान करो। ध्यान रखो, किसी का मन किसी के गुण पर ही रीझता है। जैसे संसार में कोई किसी के गुण पर ही रीझता है। (सुन्दर रूप भी एक गुण है), इसी प्रकार अधम-उधारनहार, पतित-पावन, भक्त-वत्सल आदि ठाकुर जी के अनन्त गुण हैं। इन गुणों का निरन्तर चिन्तन करें।

3. केवल गुणगान करने से भी काम नहीं चलेगा। गान तो गवैये भी करते हैं, लेकिन उनको भगवत्प्राप्ति नहीं होती। अतएव गुणगान करते समय तदनुसार भाव भी लाओ। जैसे, हम वस्तुतः अधम हैं, पतित हैं, अनन्त जन्मों के किये अनन्त पापों की गठरी सिर पर लिये हैं और वे अकारण करुण, भक्त-वत्सल, पतित-पावन, अधम-उधारनहार आदि हैं।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

4. हमें कीर्तन में नींद क्यों आती है ? क्योंकि हम अपने इष्टदेव का रूपध्यान नहीं करते, श्यामसुन्दर को प्यार नहीं करते। प्यार नहीं है, इसलिये गुणगान करते समय हृदय नहीं पिघलता व हम ऊँघने लगते हैं।

5. नेत्र बन्द करके रूपध्यान करो, क्योंकि प्राथमिक अवस्था में आँखें खोलकर कीर्तन करने से दूसरे लोग आते जाते दिखाई देते हैं, श्यामसुन्दर नहीं। रूपध्यान की अत्यन्त आवश्यकता है। रूपध्यान नहीं करेंगे तो शारीरिक क्रिया का कोई फल नहीं मिलेगा।

6. ठाकुर जी का जैसा भी चाहें, रूपध्यान बना लें। बाल्यावस्था का, किशोर रूप का, युवावस्था का। ठाकुर जी उसी रूप में मिल जायेंगे। लेकिन भगवान् को पहले देखकर फिर रूपध्यान करने वाले नास्तिक बन जायेंगे, क्योंकि हमारी प्राकृत आँखें 'प्राकृत राम' को देखेंगी, भगवान् राम को नहीं। ''**चिदानन्दमय देह तुम्हारी, विगत विकार जान अधिकारी**''।

अत: अधिकारी बनने के पूर्व देखने की बात न करो।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

7. रूपध्यान करते हुए प्रिया प्रियतम के साथ जिस लीला में जाना चाहो, चले जाओ तथा उनके दिव्य मिलन व दर्शन के लिये अत्यन्त तड़पन पैदा करो। लाख आँसू बहाओ, लेकिन किसी भी आँसू को तब तक सच्चा न मानो, जब तक स्वयं श्यामसुन्दर आकर उसे अपने पीताम्बर से न पोंछ लें। इतनी व्याकुलता पैदा करो कि नेत्र और प्राणों में बाजी लग जाये। एक-एक पल युग के समान लगने लगे। लेकिन यदि प्राणवल्लभ न आयें तो निराशा न आने पाये, प्रेमास्पद में दोष बुद्धि न आने पाये।

8. पूर्ण लाभ लेने हेतु साधना समय के अतिरिक्त समय में गुरु एवं ईश्वर को साक्षी व अन्तर्यामी रूप में नित्य अपने साथ अनुभव करते हुए, मौन नियम का पूर्ण पालन करो।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कृपालु दिव्यादेश

प्रत्येक व्यक्ति, पूर्णतम पुरुषोत्तम ब्रह्म श्रीकृष्ण का नित्यदास है। अतः श्रीकृष्ण सुखैक तात्पर्यमयी सेवा ही प्रत्येक प्राणी का एकमात्र लक्ष्य है।

वह नित्य निष्काम सेवा, श्री कृष्ण के दिव्य-प्रेम प्राप्त होने पर ही मिलेगी। वह दिव्य-प्रेम, किसी श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ रसिक गुरु की कृपा से ही मिलेगा। वह रसिक गुरु कृपा, अंतःकरण की शुद्धि हो जाने पर ही प्राप्त होगी।

वह अन्तःकरण शुद्धि, गुरु निर्दिष्ट साधना भक्ति से ही होगी। अतएव गुरु-शरणागति में, गुरु निर्दिष्ट साधना द्वारा अंतःकरण पात्र शुद्ध करना सर्वप्रथम परमावश्यक है।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

साधना

श्री राधाकृष्ण का रूपध्यान करते हुये, उनके दिव्य प्रेम एवं दिव्य दर्शन की लालसा से रोकर, उनका नाम-गुण-लीलादि संकीर्तन करना है। रूपध्यान सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। रूपध्यान मन से बनाना सर्वश्रेष्ठ है। फिर भी स्वेच्छानुसार मूर्ति अथवा चित्रादि का अवलंब लिया जा सकता है। उस रूप में दिव्य भावना रखनी है, क्योंकि उनका देह चिदानंदमय दिव्य है।

रूपध्यान, नवजात शिशु से लेकर 16 वर्ष की आयु तक का करना है। उस रूप का शृंगार आदि स्वेच्छापूर्वक नित्य नया नया करते रहना है।

रूपध्यान के साथ-साथ, उनकी अनेक मनभायी लीलाओं का भी ध्यान करना है। तथा उनके दीनबंधुत्व, पतितपावनत्वादि गुण भी सोचना है।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

श्री कृष्ण, उनके नाम, उनके गुण, उनकी लीला, उनके धाम, उनके संतजनों में पूर्ण अभेद मानना है। ये सब श्री कृष्ण ही हैं।

मोक्षपर्यन्त की कामना एवं अपने सुख की कामना का पूर्ण त्याग करना है।

इष्टदेव एवं गुरु को सदा सर्वत्र अपने साथ निरीक्षक एवं संरक्षक के रूप में मानना है। कभी भी स्वयं को अकेला नहीं मानना है।

खाली समय में यत्र तत्र सर्वत्र श्वास से '**राधेश्याम**' नाम का जप करते रहना है।

परदोष–दर्शन, परनिन्दा (भले ही वह निन्दनीय हो), लोकरंजन, निराशा, आलस्य, विषयीजनों का संग आदि कुसंग से बचना है।

श्री कृष्ण, उनके नाम, गुण, धाम एवं भक्तों के प्रति अक्षम्य नामापराध से बचना है।

'**वे ही मेरे सर्वस्व हैं**' यही भावना दृढ़ करना है।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

निवेदक:

कृपालु

श्री जगद्गुरु मुखारविन्द से

जिस दिन किसी जीव को यह दृढ़ विश्वास हो जायगा कि भगवान् और भगवान् का नाम एक ही हैं, दोनों में एक सी शक्तियाँ हैं, एक से गुण हैं, उसी क्षण उसको भगवत्प्राप्ति हो जायेगी। स्वर्ण अक्षरों में लिख लो। भगवान् की इतनी बड़ी कृपा है कि वे कहते हैं कि मैं सर्वव्यापक हूँ, तू इसको मानता नहीं है, मैं गोलोक में रहता हूँ वहाँ तुम आ नहीं सकते, मैं तुम्हारे अन्तःकरण में तुम्हारे साथ बैठा हूँ इसका तुम्हें ज्ञान नहीं है, इसलिये लो मैं अपने नाम में अपने आपको बैठा देता हूँ। नाम में मैं मूर्तिमान बैठा हुआ हूँ, जिस दिन यह बात तुम्हारे मन में बैठ जायगी, उस दिन फिर एक नाम भी जब लोगे, जब एक बार राधे कहोगे तो कहा नहीं जायगा, वाणी रुक जायगी, मन डूब जायगा, कंठ गद्‌गद हो जायगा। फिर भगवत्प्राप्ति में क्या देर होगी? गुरु कृपा में क्या देर होगी? केवल इसी वचन पर विश्वास कर लो।

तुम्हारा

कृपालु

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

RADHA GOVIND SAMITI

1

गुरुः कृपालुर्मम शरणं, वंदेऽहं सद्गुरुचरणम्।
मंगलमपि मंगल करणं, वंदेऽहं सद्गुरुचरणम्।
माया मोहजाल हरणं, वंदेऽहं सद्गुरुचरणम्।
त्रिगुण- त्रिताप - पाप हरणं, वंदेऽहं सद्गुरुचरणम्।
मायिक भवसागर तरणं, वंदेऽहं सद्गुरुचरणम्।
कृपया पंचकोश जरणं, वंदेऽहं सद्गुरुचरणम्।
मायिक पंचक्लेश हरणं, वंदेऽहं सद्गुरुचरणम्।
योगक्षेम वहन करणं, वंदेऽहं सद्गुरुचरणम्।
अशरण शरणं गुरु चरणं, वंदेऽहं सद्गुरुचरणम्।
गोपी प्रेम भाव भरणं, वंदेऽहं सद्गुरुचरणम्।
राधा कृष्ण-प्रेम भरणं, वंदेऽहं सद्गुरुचरणम्।
प्रेम याचते नहि तरणं, वंदेऽहं सद्गुरुचरणम्।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधे राधे राधे राधे राधे राधे

2

(रघुपति राघव...)

जय जय जय सद्‌गुरु सरकार,
सद्‌गुरु पर तन मन धन वार।
जय जय मम सद्‌गुरु सरकार,
उऋण नाहिं तुम्हरे उपकार।
जय जय मम सद्‌गुरु सरकार,
तुम ही ब्रह्म सगुण साकार।
जय जय मम सद्‌गुरु सरकार,
तुम ही विधि हरि हर अवतार।
जय जय मम सद्‌गुरु सरकार,
तुम ही दीन जनन रखवार।
जय जय मम सद्‌गुरु सरकार,
तुम ही पतितन की पतवार।
जय जय मम सद्‌गुरु सरकार,
तुम ही निराधार आधार।
जय जय मम सद्‌गुरु सरकार,
मानत नित तुम्हरो आभार।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

जय जय मम सद्‌गुरु सरकार,
चह नहिं कबहुँ पदारथ चार।
जय जय मम सद्‌गुरु सरकार,
नेकु दिखावहु युगल विहार।
जय जय मम सद्‌गुरु सरकार,
तुम्हरे वश रह नन्दकुमार।
जय जय मम सद्‌गुरु सरकार,
तुम 'कृपालु' हमरी सरकार।

3

(जोइ नंदनंदन सोइ...)

प्रथम नमन गुरुवर पुनि गिरिधर,
जोइ श्री गुरुवर सोइ श्री गिरिधर।
हरि गुरु कृपा सदा सब ही पर,
अंतःकरण पात्र पावन कर।
करहु 'कृपालु' कृपा मोहूँ पर,
तन मन धन अर्पन चरनन पर।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

4

(परिक्रमा)

आजा आजा पुनि ब्रज आजा नँदनंदन।
ब्रजरस सरस पिला जा नँदनंदन।
मुरली मधुर सुना जा नँदनंदन।
मोहिनि छवि दिखला जा नँदनंदन।
सखि सँग रास रचा जा नँदनंदन।
मतवारी चाल दिखा जा नँदनंदन।
चित्त 'कृपालु' चुरा जा नँदनंदन।

5

(परिक्रमा)

आजा नँदनंदन आ जा नँदनंदन,
यह ब्रज तो है तोरा आजा नँदनंदन।
तेरे बिन सूना ब्रज आजा नँदनंदन।
मोटी रोटी माखन खा जा नँदनंदन।
दरस दिखा जा पुनि आजा नँदनंदन।
कलि को तू ब्रज ते भगा जा नँदनंदन।
ब्रज न तजौं कहा था आजा नँदनंदन।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ब्रजरस ब्रज बरसा जा नँदनंदन।
सखि सँग रास रचा जा नँदनंदन।
ऐसा आजा आ के पुनि ना जा नँदनंदन।
मैं जो जा जा कहूँ तो भी ना जा नँदनंदन।
आवे ना बुलानो मोहिं आजा नँदनंदन।
कहा घटि जाय तोरा आजा नँदनंदन।
पाछा नहिं छोड़ूँ तोरा आजा नँदनंदन।
मुरली की तान सुना जा नँदनंदन।
'दारीके' की ब्रजगारी खा जा नँदनंदन।
विरह की अगिनि लगा जा नँदनंदन।
मिलन की लगन लगा जा नँदनंदन।
तोको न सताऊँ अब आजा नँदनंदन।
जोई भावै सोई करु आजा नँदनंदन।
तू जो कहे सोई करुँ आजा नँदनंदन।
COPYRIGHT
भलो बुरो जो हूँ तेरो आजा नँदनंदन।
RADHA GOVIND SAMITI
काऊ सों बताऊँ नहिं आजा नँदनंदन।
चोरी चोरी उर में समा जा नँदनंदन।
तू ही मेरा मैं भी तेरा आजा नँदनंदन।
तू तो है 'कृपालु' अति आजा नँदनंदन।

6

(श्यामा मेरी ठकुरानी...)

कृष्ण एव मम स्वामी, कृष्ण एव सखा मम,
कृष्ण एव सुतः प्रेयान्, श्रीकृष्णः शरणं मम।
दास्यभावेन सख्येन, वात्सल्येन यदा कदा,
नित्यं माधुर्यभावेन, श्रीकृष्णः सेव्यते मया।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

7

गुन गाओ रे मना, राधारमना।
गुन राधारमना, गुन जीवनधना। गुन० ॥
गुन राधारमना, गुन प्रेमधना। गुन० ॥
गुन राधारमना, गुन श्यामधना। गुन० ॥
गुन राधारमना, गुन प्राणधना। गुन० ॥
गुन राधारमना, गावें रमा रमना। गुन० ॥
सोइ स्वामि, सखा, सुत, सोई सजना। गुन० ॥
गुन गाके बना 'कृपालु' अपना। गुन० ॥

8

(आजा प्यारी भानुदुलारी...)

आजा प्रानहुँ ते प्यारे, आजा वृन्दावन वारे।
सँग ला प्यारी कहँ प्यारे, आजा वृन्दावन वारे।
सँग ला सखियन कहँ प्यारे, आजा वृन्दावन वारे।
आजा मोर मुकुट वारे, आजा वृन्दावन वारे।
आजा भाल तिलक वारे, आजा वृन्दावन वारे।
चितवनि चोट चलावन वारे, आजा वृन्दावन वारे।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

आजा श्रुति कुंडल वारे, आजा वृन्दावन वारे।
आजा नक बेसर वारे, आजा वृन्दावन वारे।
आजा कर मुरली वारे, आजा वृन्दावन वारे।
मुरली मधुर बजावन वारे, आजा वृन्दावन वारे।
आजा कर कंकन वारे, आजा वृन्दावन वारे।
गल गुंजन माला वारे, आजा वृन्दावन वारे।
आजा पीत वसन वारे, आजा वृन्दावन वारे।
आजा कटि किंकिनि वारे, आजा वृन्दावन वारे।
कोटिन काम लजावन वारे, आजा वृन्दावन वारे।
गति शत हंस लजावन वारे, आजा वृन्दावन वारे।
भई बेर ओ नंददुलारे, आजा वृन्दावन वारे।
पतितन को अपनावन वारे, आजा वृन्दावन वारे।
बिगरी मोर बनावन वारे, आजा वृन्दावन वारे।
मोहिं 'कृपालु' अपनावन वारे, आजा वृन्दावन वारे।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

९

(जय जय पिय प्यारी...)

जय जय नँदनन्दा, ब्रजचन्दा, आनन्दकन्दा गोविन्दा।
जय जय गोविन्दा गोविन्दा, बालमुकुन्दा गोविन्दा।

जय जय गोविन्दा गोविन्दा, यदुकुलचन्दा गोविन्दा।
जय जय गोविन्दा गोविन्दा, यशुमतिनन्दा गोविन्दा।
जय जय गोविन्दा गोविन्दा, नंदनन्दा गोविन्दा।
जय जय गोविन्दा गोविन्दा, परमानन्दा गोविन्दा।
जय जय गोविन्दा गोविन्दा, आनन्दहुँ दे आनन्दा।
जय जय गोविन्दा गोविन्दा, नेति नेति कह श्रुति छन्दा।
जय जय गोविन्दा गोविन्दा, अगुन सगुन उभयानन्दा।
जय जय गोविन्दा गोविन्दा, विभुचित् सत् चित्आनन्दा।
जय जय गोविन्दा गोविन्दा, अगम अगोचर श्रुति छन्दा।
जय जय गोविन्दा गोविन्दा, रसन मिलिन्दा गोविन्दा।
जय जय गोविन्दा गोविन्दा, मन मिलिन्द करु पद द्वन्दा।
जय जय गोविन्दा गोविन्दा, दृग चकोर करु मुख चन्दा।
जय जय गोविन्दा गोविन्दा, मतिमन्दा भजु गोविन्दा।
जय जय गोविन्दा गोविन्दा, सेव्य सुनन्दा गोविन्दा।
जय जय गोविन्दा गोविन्दा, सँग सखि वृन्दा गोविन्दा।
जय जय गोविन्दा गोविन्दा, वृन्दा प्रियतम गोविन्दा।
जय जय गोविन्दा गोविन्दा, वन्दित वृन्दारक वृन्दा।
जय जय गोविन्दा गोविन्दा, वंदौ वृन्दावन चन्दा।
जय जय गोविन्दा गोविन्दा, लगन लगा पद अरविन्दा।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जय जय गोविन्दा गोविन्दा, प्रेम दान दो गोविन्दा।
जय जय गोविन्दा गोविन्दा, चातक रति दो गोविन्दा।
जय जय गोविन्दा गोविन्दा, हमरिहुँ सुधि लो गोविन्दा।
जय जय गोविन्दा गोविन्दा, चरण शरण दो गोविन्दा।
जय जय गोविन्दा गोविन्दा, करु निर्द्वन्दा गोविन्दा।
जय जय गोविन्दा गोविन्दा, काटो मम माया फन्दा।
जय जय गोविन्दा गोविन्दा, देहु कमल पद मकरन्दा।
जय जय गोविन्दा गोविन्दा, निज ढिंग हेरहु गोविन्दा।
जय जय गोविन्दा गोविन्दा, हरु छल छन्दा गोविन्दा।
जय जय गोविन्दा गोविन्दा, बरबस वर लो गोविन्दा।
जय जय गोविन्दा गोविन्दा, छुटै न जग-गोरखधन्धा।
जय जय गोविन्दा गोविन्दा, मो मन हर लो गोविन्दा।
जय जय गोविन्दा गोविन्दा, मोहूँ मोहो गोविन्दा।
जय जय गोविन्दा गोविन्दा, दीन बना दो गोविन्दा।
जय जय गोविन्दा गोविन्दा, उर घर कर लो गोविन्दा।
जय जय गोविन्दा गोविन्दा, विरह भाव दो गोविन्दा।
जय जय गोविन्दा गोविन्दा, रूपध्यान दो गोविन्दा।
जय जय गोविन्दा गोविन्दा, चाल गयन्दा गोविन्दा।
जय जय गोविन्दा गोविन्दा, झलक दिखा दो गोविन्दा।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जय जय गोविन्दा गोविन्दा, युगल दास्य दो गोविन्दा।
जय जय गोविन्दा गोविन्दा, महल टहल दो गोविन्दा।
जय जय गोविन्दा गोविन्दा, मम सिर धरु कर अरविन्दा।
जय जय गोविन्दा गोविन्दा, मेरा कह दो गोविन्दा।
जय जय गोविन्दा गोविन्दा, मम 'कृपालु' इक गोविन्दा।

10

जय जय राधा रमना, राधा रमना,
गोपीजन जीवना, राधारमना।
जय जय राधारमना, राधारमना,
तेरो प्राणधना राधारमना।
जय जय राधा रमना, राधारमना,
सोई पिय अपना राधारमना।
जय जय राधारमना, राधा रमना,
सोई मम सपना राधारमना।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जय जय नंदनंदना नंदनंदना,
त्रिभुवनवंदना नँदनंदना।

जय जय नंदनंदना नंदनंदना,
जन मन रंजना नँदनंदना।
जय जय नंदनंदना नंदनंदना,
भव भय भंजना नँदनंदना।
जय जय नंदनंदना नंदनंदना,
'कृपालु' उर चंदना नँदनंदना।

11

(नित सेवा माँगूँ...)

जो पिय रुचि महँ रुचि राखे, प्रेमरस सोई चाखे रे।
जेहि कर्म न नेकहुँ भावे रे,
जेहि ज्ञानहुँ नाहिं सुहावे रे,
जो योग दूरि करि राखे, प्रेमरस सोई चाखे रे।
जो स्वर्ग नरक सम जाने रे,
जो मुक्ति पिशाचिनि माने रे,
नहिं ऋद्धि सिद्धि उर राखे, प्रेमरस सोई चाखे रे।
जो मधुर भाव अपनावे रे,
यामें चारिहुँ भाव समावे रे,
जो निज सुख उर नहिं राखे, प्रेमरस सोई चाखे रे।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जेहि हरि हरिजन ही भावे रे,
कहुँ अनत न टुक मन लावे रे,
जो उर 'कृपालु' हरि राखे, प्रेमरस सोई चाखे रे॥

12

तुम मेरे थे मेरे हो मेरे रहोगे, बहकूँ न अब बहकाने से।
जब समझ प्रेम में डूब गई, तब क्या होगा समझाने से।
तुम को ही तन मन धन अरपन,
तुम ही इक मेरे जीवन धन,
अब पीछे नहीं हटेगा पग, पिय! विरह चोट उर खाने से।
दे दो ऐसी विरह वेदना,
मिटि जाये मम अहं चेतना,
और अधिक चमकेगा सोना, पुनि पुनि अगिनि तपाने से।
आ या ना आ मुरली वारे,
रो रो कर हम तुम्हें पुकारें,
प्रेम बढ़ेगा छिन छिन मेरा, यूँ तेरे तड़पाने से।
पिय! तुम से ही प्रीति लगाई,
पर झोली भी सँग नहिँ लाई,
इक बार लगा लो सीने से, बलिहार जाउँ अपनाने से।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

चाहे मम आलिंगन कर लो,
चाहे मम प्रानन ही हर लो,
चाहे जी भर कर तड़पा लो, मोहिँ काम श्याम गुन गाने से।
इक दिन प्रेम रंग लायेगा,
पिय! तुम को भी तड़पायेगा,
मैं हूँ सखी किशोरी जू की, नाता मम बरसाने से।
तुम हार मान लो बनवारी,
बदनाम न हो जाये यारी,
हारोगे, हारे हो सब दिन, पछिताओगे इतराने से।
तू ही तो सब कुछ मेरा है,
यह कहा हुआ भी तेरा है,
जग में भी बढ़ता प्यार सदा, पिय के घर आने जाने से।
लख चौरासी स्वाँग बनाये,
नट ज्यों बहु विधि खेल दिखाये,
अब तो अपने पास बुला लो, रीझोगे न रिझाने से।
क्यों चुप हो पिय! कुछ तो बोलो,
भंडार कृपा का अब खोलो,
हो जाय न कहुँ अंधेर देर महँ, इतनी देर लगाने से।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

चुप का मतलब अब समझ लिया,
आखिर पिय ने अपना ही लिया,
आशा तो पहले से ही थी, बिनु हेतु 'कृपालु' कहाने से॥

13

(मन तेरो साँचो..)

तेरी यारी पै बिहारी, मैं तो वारी तन मन।
तू ही मेरो प्राणधन, तू ही मेरो है जीवन॥

तेरी यारी ते बिहारी, मैं तो फिरूँ मारी मारी।
तेरी यारी ते बिहारी, मैं तो भली थी कुँवारी॥

14

(ओ रसिया कस...)

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

नहिं बिसरत सखि छैल बिहारी।
जित देखूँ तित वोही वोही दीखत,
हाय! ये कैसी मोहिनि डारी।
मोर मुकुट सिर पेच रतन को,
हलकैं मुख अलकें घुँघुरारी।

चंचल नैन मैन मद गंजन,
तामें अंजन रेखु सँवारी।
कुंडल लोल हलनि श्रवनन में,
अधर धरि मुरली धुनि प्यारी।
नाक बुलाक भृकुटि वर बाँकी,
गोल कपोलनि की छवि प्यारी।
उर विशाल वनमाल बिराजत,
गुंजमाल मोतिन माला री।
मणिमय वलय युगल कर सोहे,
कटि किंकिनि पीताम्बर धारी।
गरल सुधा मदमइ दृग चितवनि,
करत फिरत जादू टोना री।
बजत चरन छूम छननन नूपुर,
ताहू पर मुसकावति भारी।
अब 'कृपालु' मम लगत न पलकें,
देखि अनूपम रूप बिहारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

15

प्यारी जू के प्यारे हैं, प्यारे प्यारे प्यारे हैं,
वो ही मेरो श्याम, वो ही मेरो श्याम,
वो ही मेरो प्राण, वो ही मेरो प्राण।
मोर मुकुट वारे हैं, कटि काछनि धारे हैं। वो ही .....
मुख मुरली धारे हैं, चितवनि बरछी मारे हैं। वो ही .....
वंशी वारे कारे हैं, तो भी प्रानन प्यारे हैं। वो ही .....
बाल घूँघरवारे हैं, कारे अनियारे हैं। वो ही .....
नैन रतनारे हैं, सैन मतवारे हैं। वो ही .....
पीरी पगरी वारे हैं, पीरे पट धारे हैं। वो ही .....
कनक लकुटिया धारे हैं, कारी कामरि वारे हैं। वो ही .....
किंकिनि गुन्गुन्जारे हैं, नूपुर झन्झनकारे हैं। वो ही .....
हंस चाल वारे हैं, गुंजमाल धारे हैं। वो ही .....
यशुदा दुलारे हैं, राधा के घरवारे हैं। वो ही .....
कारे हैं पर प्यारे हैं, शम्भु समाधि बिसारे हैं। वो ही .....
चौंसठ गुन गन वारे हैं, निर्गुन श्रुतिन पुकारे हैं। वो ही .....
पूतनहिं तारे हैं, 'कृपालु' रखवारे हैं। वो ही .....

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

16

प्राण प्रियतम, प्राणधन मम, प्राणवल्लभ पाहि माम्।
दृगन अंजन, गोपिका जन, राधिकाधन रक्ष माम्॥
गोपिकाजन नयन अंजन, रसिक रंजन रक्ष माम्।
भक्तवत्सल नाम सुनि तव, हृदय काँपत मेरे श्याम।
पतितपावन नाम सुनि पुनि, होत साहस बनइ काम।
पूतना कब शरण आई, दिये 'कृपालु' जु दिव्य धाम॥

17

(मेरे प्रानन प्यारे...)

ब्रजराज आज फिर आजा, ब्रज महँ ब्रजरस बरसाजा।
ब्रजराज आज फिर आजा, निज बालरूप दिखराजा।
ब्रजराज आज फिर आजा, निज शिशु लीला दिखराजा।
ब्रजराज आज फिर आजा, निज तोतरि बोल सुनाजा।
ब्रजराज आज फिर आजा, निज घुटुवनि चाल दिखाजा।
ब्रजराज आज फिर आजा, टुक दँतुलिन किलक सुनाजा।
ब्रजराज आज फिर आजा, माखन मिश्री पुनि खाजा।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ब्रजराज आज फिर आजा, आकर मम उर पुनि नाजा।
ब्रजराज आज फिर आजा, सोइ गूँ गूँ शब्द सुना जा।
ब्रजराज आज फिर आजा, धुनि मुरली मधुर बजा जा।
ब्रजराज आज फिर आजा, वृषभानुलली गुन गा जा।
ब्रजराज आज फिर आजा, रूठी मानिनिहिं मना जा।
ब्रजराज आज फिर आजा, दर्शन की प्यास बुझा जा।
ब्रजराज 'कृपालु जु' आजा, इन नैनन तपन बुझा जा।

18

मेरे प्रानन प्यारे आजा, मेरे नैनन तारे आजा।
ओ अज आज आजा ब्रज आजा, पुनि ब्रज ब्रजरस बरसा जा।
मेरे नंददुलारे आजा, मेरे मुरली वारे आजा।
मेरे कनुआ कारे आजा, मेरे कामरि वारे आजा।
मेरे तन मन प्राण समा जा, मेरे उर विरहाग लगाजा।
मेरे मन के राजा आजा, मेरे मन भा जा तन छाजा।
मेरे नैनन बीच समा जा, फिर भूलेहुँ कबहूँ ना जा।
मेरे श्याम सलोने आजा, उर ऐसो आ पुनि ना जा।
मेरे मोहन प्यारे आजा, मेरी माखन रोटी खाजा।
मेरी बिगरी बात बना जा, टुक मुरली मधुर बजाजा।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मेरे सहज सनेही आजा, निज चिन्मय रूप दिखाजा।
कुबरी घर वारे आजा, मोहिं प्रेम पयोधि डुबाजा।
मेरे रसिकन प्यारे आजा, मोहिं प्रीति की रीति सिखाजा।
सीने से मोहिं लगा जा, मोहूँ 'कृपालु' अपनाजा।

19

(हरे राम श्री –महाराज जी)

बलिहार ब्रजेन्द्रकुमार, तेरी महिमा अपरम्पार।
कह निराकार श्रुति चार, कत नराकार तनु धार?
तुम तो कह वेद पुकार, हौं पितु अनादि संसार।
पुनि को लग नंद तिहार, कत सब कह नन्दकुमार?
बिनु शरण न हो उद्धार, यह कह तुम बारम्बार।
पुनि गरल पिवावनिहार, कत दिए पूतनहिं तार?
तोहिं आत्माराम पुकार, सब शास्त्र वेद सरकार।
पुनि कत बनि कुबरिहुँ यार, किय श्रुति विरुद्ध व्यवहार?
तुम महाकाल भरतार, अस कह श्रुति संत पुकार।
पुनि जरासंध डर यार, कत भजि गयो सागर पार?
तुम मदनहुँ मोहन हार, यह जानत सब संसार।
पुनि कत 'कृपालु' सरकार, इत रिस शूर्पणखहिं नार?

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

20

(मेरी बरसाने वारी...)

बाँके बिहारी जू पै वारी, वारी वारी वारी।
कुंजबिहारी जू पै वारी, वारी वारी वारी।
रासबिहारी जू पै वारी, वारी वारी वारी।
छैल बिहारी जू पै वारी वारी वारी वारी।
बनवारी प्यारी पर वारी वारी वारी वारी।
रसिक बिहारी जू पै वारी, वारी वारी वारी।
मदन मुरारी जू पै वारी, वारी वारी वारी।
गिरिवरधारी जू पै वारी, वारी वारी वारी।
बाँके बिहारी तेरी यारी पर वारी वारी।
जग यारी काँची काँची तेरी यारी साँची यारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

21

(भजो गिरिधर...)

भज प्यारो प्यारो प्यारो प्रानन प्यारो।
भज ब्रजगोपिन नैनन तारो।

भज मोर मुकुट मुरली वारो।
भज ललित त्रिभंग अंग वारो।

भज प्यारो रँग नीलो, अंबर पीलो।
भज प्यारी रँग पीलो, अंबर नीलो।
भज प्यारी मन नीलो तनु है पीलो।
भज प्यारो मन पीलो तनु है नीलो।
भज ब्रज गोपीजन दृग अंजन।
भज भानुनन्दिनी नँदनंदन।
भज युगल चरन मन करि क्रन्दन।
भज प्रणत पतितजन मन रंजन।
भज ब्रजबनितनि धन नँदनंदन।
भज ब्रजरसिकन धन नँदनंदन।
भज नँदनंदन को राधा धन।
COPYRIGHT
भज दिए गौर हरि गल बहिँयन।
RADHA GOVIND SAMITI
भज व्याकुल दोउ भेंटन पतितन।
भज रसिक शिरोमणि गोपीजन।
भज भज 'कृपालु' दोउ जीवनधन।

22

मतवारी प्यारी चाल, मेरो यशुदा को लाल।
जाके लोचन रसाल, मेरो यशुदा को लाल।
जाके नीले नीले गाल, मेरो यशुदा को लाल।
जाके घूँघरवारे बाल, मेरो यशुदा को लाल।
जाके होंठ लाल लाल, मेरो यशुदा को लाल।
मैं तो ह्वै गइ मालामाल, मेरो यशुदा को लाल।
प्यारो प्यारो नँदलाल, मेरो यशुदा को लाल।
मैं नचाऊँ दै के ताल, मेरो यशुदा को लाल।
मातु पितु पति लाल, मेरो यशुदा को लाल।
मेरो साँचो यार गुपाल, मेरो यशुदा को लाल।
मैं तो भई सुहागिनि बाल, मेरो यशुदा को लाल।
वाने कियो हाल बेहाल, मेरो यशुदा को लाल।
वो तो बड़ो होत है हाल, मेरो यशुदा को लाल।
जाके डर डरे काल, मेरो यशुदा को लाल।
जाकी खोटी चाल ढाल, मेरो यशुदा को लाल।
नाचे गोपीजन ताल, मेरो यशुदा को लाल।
जाको विरद दयाल, मेरो यशुदा को लाल।
बिनु कारन 'कृपाल', मेरो यशुदा को लाल।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

23

मन तेरो साँचो यार, ब्रजराजकुमार।
तेरो सोई स्वामी, सोई सखा, सुत, भरतार।
झूठे जग व्यवहार, झूठे सब नातेदार।
रसिकन दरबार, तेरो सोई घरबार।
जाको ऐसो नातेदार, वा पै कोटिन प्राण वार।
धन्य धन्य ब्रजनार, तेरो सोई कर्णधार।
रागानुगा व्रतधार, अपनाव भाव चार।
भक्ति गाई नव प्रकार, तामें रूपध्यान सार।
भावे जोई संसार, तामें देखु खड़ो यार।
मुक्ति चार भार डार, पियसुख व्रत धार।
तेरो दोऊ प्राणाधार, हरि गुरु इक सार।
सोचो पिय प्यारी प्यार, सोचो युगल विहार।
तू ना जाने तू गमार, परखत तेरो यार।
करु करुण पुकार, ऐहैं भुजन पसार।
दीन्यो लता पता कूँ प्यार, ऐसो कौन अवतार।
पाई पूतना सी नार गति, ऐसो को उदार।
करे कुब्जाहूँ सों प्यार, यार कितनो उदार।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

बने घोड़ा सखा सवार, देखो कैसो रिझवार।
मान्यो यशुदा सों हार, बँध्यो ऊखल निहार।
नाचे छाछ लगि यार, देखो गोपीजन प्यार।
ब्रजगारी सुनि यार, वाते कहे बलिहार।
ऐसो गोपी प्रेम यार, पायो पद चौर जार।
जैसो जीव करे प्यार, तैसो करे प्यार यार।
अपवाद गोपी प्यार, जामें ऋणी माने यार।
तेरी यारी कैसी यार, गरबाहींहूँ न डार।
तेरी यारी सों ही प्यार, प्यार दे या ना दे यार।
दृग अँसुवन हार, पहिराउ यार हार।
एक बार मानु यार, फिर देखु यार प्यार।
करु अब न अबार, जा 'कृपालु' दरबार॥

24

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

(लाखों महफिल)

मेरी राधारमण सों यारी, तन मन-धन उन पर वारी।
बनवारी सों ह्वै गइ यारी, तन मन धन उन पर वारी।
मेरी राधारमण सों यारी, यह जीवन उन पर वारी।
मेरी राधारमण सों यारी, मैं उनकी वे मेरे बिहारी।

मेरी राधारमण सों यारी, क्या समझेगा कोउ संसारी।
मेरी राधारमण सों यारी, छोड़ दी लोक की लाज सारी।
मेरी राधारमण सों यारी, मेरी यारी जगत सों न्यारी।
मेरी राधारमण सों यारी, खारी लग मुक्तिहुँ चारी।
मेरी राधारमण सों यारी, उनहिंन सुख महँ बलिहारी।
मेरी राधारमण सों यारी, मुख तकत रहत श्रुति चारी।
मेरी राधारमण सों यारी, अब लागी न छूटन वारी।
मेरी राधारमण सों यारी, ह्वै गये मदनारी नारी।
मेरी राधारमण सों यारी, मेरी यारी पै यार बलिहारी।
मेरी राधारमण सों यारी, मेरी मुट्ठी में कुंजबिहारी।
मेरी राधारमण सों यारी, इक दिन मिलिहहिं कहि 'प्यारी'।
मेरी राधारमण सों यारी, मैं भई सुहागिनि नारी।
मेरी राधारमण सों यारी, मेरी यारी परी वाय भारी।
मेरी राधारमण सों यारी, यार यारी न जाने अनारी।
मेरी राधारमण सों यारी, कबहूँ कह हरि मोहिं 'प्यारी'।
मेरी राधारमण सों यारी, मेरी अँगुली पै नाचें बिहारी।
मेरी राधारमण सों यारी, मैं डोरी पतंग बिहारी।
मेरी राधारमण सों यारी, मैं गिन गिन दऊँ वाय गारी।
मेरी राधारमण सों यारी, ललचाति जलधिजा नारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मेरी राधारमण सों यारी, यार जारी पै गइ वारी वारी।
मेरी राधारमण सों यारी, सखि कह वाको तनु कारी।
मेरी राधारमण सों यारी, पिय मेरो बाल ब्रह्मचारी।
मेरी राधारमण सों यारी, अगनित प्रानन दउँ वारी।
मेरी राधारमण सों यारी, जग कहत 'कृपालु' कुनारी।

25

(लाखों महफिल...)

मेरो राधारमण चितचोर, टुक हेरहु हमरिहुँ ओर।
मेरो जीवन जुगल किशोर, लो मोर चपल चित चोर।
उत कारो रँग तनु तोर, इत कारो रँग मन मोर।
तू ही इक सर्वस मोर, हैं तुम्हरे लाख करोर।
तू ही है सब कुछ मोर, अब छोड़ू न पाछा तोर।
मन मधुर मिलन चह तोर, पुरवहु अभिलाषा मोर।
सेवा अभिलाषा मोर, बैकुण्ठ न माँगूँ तोर।
तू रसिकन को सिरमोर, टुक रस दे हौंहूँ तोर।
यह माया अति बरजोर, बरजो ब्रजराज किशोर।
माना कुपूत हौं तोर, माँ जगहुँ न होति कठोर।
नहिँ कछु साधन बल मोर, चह तोर कृपा की कोर।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कहि दे बारेक तू मोर, कछु घटि न जायगो तोर।
मायिक मन बुधि है मोर, है कृपा साध्य रति तोर।
बिनु हेतु कृपा व्रत तोर, कत सुधि न लेत पुनि मोर।
उत पतितन हित व्रत तोर, इत पतितन को सिरमोर।
जनि लखु 'कृपालु' ढिग मोर, पापन को ओर न छोर।

26

मेरे मन में समाय गयो साँवरिया।
वाके सिर सोहे पीरी पागरिया।
जाके कंध लकुटि अरु कामरिया।
जाके कटि किंकिनि पग पायलिया।
राधे राधे गाय गयो साँवरिया।
मुख मुरली बजाय गयो साँवरिया।
सखि रास रचाय गयो साँवरिया।
मारि काँकरिया फोरे गागरिया।
वाके संग करोरन नागरिया।
वाको लखि सखि ह्वै गईं बावरिया।
मैंने वाई सों फेरि लईं भाँवरिया।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मोहिं प्यारी कही गलि साँकरिया।
मैंने हाँ करिया ना ना करिया।
मोहिं सोती जगाय गयो साँवरिया।
मेरे चित्त को चुराय गयो साँवरिया।
मोहिं रोना सिखाय गयो साँवरिया।
वो करके दृगन जनु काँकरिया।
वाने फोरी अविद्या गागरिया।
मैंने वाई पै छोड़ि दइ नावरिया।
मोहिं अपनी बनाय गयो साँवरिया।
मैं तो पारस पाय गयो साँवरिया।
पायो रतन अमोलक साँवरिया।
बिनु मोल मोल लिए साँवरिया।
मैं तो जित देखूँ तित साँवरिया।
मेरे पाछे पाछे डोलत साँवरिया।
वाको सब अँग सुन्दर तनु करिया।
दीवानी वाकी कोटिन नागरिया।
मैं 'कृपालु' सुभाउ पै बावरिया।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

27

मेरो राधा रमन, मेरो जीवन धन।
गहु चरन शरन, रहु वृन्दावन।
ब्रज रज कन कन, जानिय चिद्घन।
रहु सँग रसिकन, लहु ब्रजरस धन।
उनकेइ जो जन, उनकोइ जा बन।
जीवन जीवन सोइ जीवन धन।
सुमिरहु निशिदिन गावहु गुन गन।
क्षणभंगुर तन मन भज छन छन।
उनके गुन गन गाइय छन छन।
'तू ही मेरा' यह भाव बढ़ै छन छन।
पइहौ नहिं मन, बिनु रोये सजन।
रह मन मोहन, रह मन मोह न।
चलु चंचल मन, ढिंग मन मोहन।
जो दे तन मन धन, सो ले प्रेम रतन।
दे मायिक मन, ले चिन्मय मन।
उन कारो है तन मम कारो है मन।
जाकी जग सों न बन, वाकी बन हरि सन।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जो था राधा रमन भयो कुब्जा रमन।
जीवन जीवन तुम यदुनन्दन।
रख अपनापन रख अपना पन।
तुम आओ जनि मन ले जाओ मम मन।
तू है मनमोहन मोहहु मम मन।
तेरो कारो कारो तन ले लो मेरो कारो मन।
तव तनु चिद्घन, मम मायिक मन।
निरखहु निज अगनित गुनन सजन।
मम अगनित अवगुन गनन न गन।
ले लो प्रानन, दे दो क्रंदन।
दो या ना दो दरशन, दे दो सतत रुदन।
तुम जाओ मेरे बन, तेरी भल मैं न बन।
मोहिं अपनी बना ना बना मेरा पिया बन।
तोहिं का दूँ सजन, मायिक तन मन।
नहिं रह पिय मन, पिय में रह मन।
ले लो पिय मेरो मन, दे दो निज सुमिरन।
दो ब्रज रस धन, ब्रज गोपी जन।
न दो ब्रजरस धन, दे दो लालसा मिलन।
न दो लालसा मिलन, आ के कह दो सजन।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

चुप साधोगे सजन, तो 'हाँ' मानूँगी मन।
निज करुण अकारण सोचहु पन।
मेरो साँचो सजन, मेरो नँदनन्दन।
वे मेरे सजन मैं उनकी दुल्हन।
मेरो प्रियतम सत चित आनन्दघन।
सोइ प्राण सजीवन ब्रज बनितन।
सोइ स्वामि, सखा, सुत, पति रसिकन।
सोइ सहज सनेही प्रणत जनन।
सोइ हृदय लगावत तन पतितन।
सोइ बन्धु सनातन दीन जनन।
बिकि जात दाम बिनु कर दीनन।
विचरहि ब्रज बीथिन वृन्दावन।
हरे मन बनितन चितवन मुसकन।
तूने मोहे मदनहूँ मन मोह मेरो मन।
तेरा काला काला तन मेरा ले ले काला मन।
मोहिं लागी लगन हरि गुरु चरनन।
लइ चरन शरन ब्रज गोपी जन।
अर्पन इनकोई तन मन धन।
सेवा चह मन नित ब्रज रसिकन।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

चह नित्य बुहारन कुंज भवन।
बनुँ सोइ रज कन जहँ धरहु चरन।
बनुँ पीत बसन लिपटो रहुँ तन।
करुँ नित कीर्तन, रहुँ साधना भवन।
मोहिं लागी लगन, दरसन परसन।
दे दो सेवा रतन, मन सेवा रत न।
मेरे लागे नयन, यशुदा के ललन।
नाहिं छूटै लगन, भल चाहे सजन।
वे फेरें नयन, बाढ़ै और लगन।
लरे उनते नयन, रोवे निशिदिन मन।
पिय जाको वरन, सोइ पावे सजन।
मोहिं करि ले बरन, तोहिं पिय हौं बरन।
पिय दृग बानन, लागे मीठी चुभन।
कर मन सुमिरन, झर दृग अँसुवन।
बिनु नँदनंदन नहिं कल पल छन।
मेरो रोम रोम चह पिय परसन।
करु ऐसो यतन, होवे मधुर मिलन।
चह मधुर मिलन, मन नन्दसुवन।
तू 'कृपालु' को सजन अपनाओ दुलहन।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

(मेरो राधा रमन)

मेरी प्यारी प्यारी भोरी भारी सुकुमारी।
मेरी बरसाने वारी ब्रजरस वारी।
गोरी गोरी भोरी भोरी स्वामिनी मोरी।
चोरी चोरी चितचोरहुँ चित चोरी।
मेरी प्यारी जू की छवि एतिक प्यारी।
लखि चित मुर्छित गिरे बनवारी।
मेरी प्यारी जू की छवि एतिक प्यारी।
लखि निज परछाई मोहे सुकुमारी।

28

(श्री गुरुदेव...)

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

रसिकन को सिरमोर मोर पिय !
प्यारी मुख चन्द्र चकोर मोर पिय !
करहु कृपा की कोर मोर पिय !
तुम ही गति मति मोर मोर पिय !

प्रणत भगत चित चोर मोर पिय !
अब तो सुधि लो मोर मोर पिय !
देखहु हमरिहुँ ओर मोर पिय !
हँसी मोर नहिं तोर मोर पिय !

तव माया बरजोर मोर पिय !
कछु न कामना मोर मोर पिय !
सेवा माँगत तोर मोर पिय !
दो ब्रज रस महँ बोर मोर पिय !

छोड़ूँ न पाछा तोर मोर पिय !
तुम बिनु नहिं कोउ मोर मोर पिय !
लजवत काम करोर मोर पिय !
अपनेहुँ चित को चोर मोर पिय !

घटि न जाय कछु तोर मोर पिय !
लाज जाएगी तोर मोर पिय !
कब ते भयहु कठोर मोर पिय !
लखहु 'कृपालुहुँ' ओर मोर पिय !

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

29

(गोपाल राधे कृष्ण...)

राधावल्लभ मेरो प्रानन प्रान।
राधावल्लभ ब्रज बनितनि प्रान।
राधावल्लभ स्वयं श्री भगवान।
राधावल्लभ प्रेम रूप रस खान।
राधावल्लभ अवतारी हरि जान।
राधावल्लभ ब्रजरसिक प्रधान।
राधावल्लभ तेरो स्वामी मन मान।
राधावल्लभ तेरो सखा मन मान।
राधावल्लभ तेरो सुत मन मान।
राधावल्लभ तेरो पिय मन मान।
राधावल्लभ चह अँसुवन दान।
राधावल्लभ हैं 'कृपालु' सच मान।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

30

विट्ठल विट्ठल विट्ठला, पाण्डुरंग विट्ठला।
विट्ठल विट्ठल विट्ठला, सोई नन्द को लला।

विट्ठल विट्ठल विट्ठला, दे दो भक्ति निश्चला।
विट्ठल विट्ठल विट्ठला, शरणागत वत्सला।
विट्ठल विट्ठल विट्ठला, चित्तवृत्ति चंचला।
विट्ठल विट्ठल विट्ठला, कर दो बुद्धि निर्मला।
विट्ठल विट्ठल विट्ठला, बाँकी झाँकी दिखला।
विट्ठल विट्ठल विट्ठला, प्रीति रीति सिखला।
विट्ठल विट्ठल विट्ठला, 'कृपालु' मैं हूँ निर्बला।

31

(हमारो धन राधा...)

हमारो पिय नँदनंदन बनवारी,
हमारो पिय वृंदाविपिन बिहारी।

रसिक मन मानस हंस मुरारी। हमारो पिय....।
मदन मन मोहन कुंज बिहारी। हमारो पिय....।
स्वमन मोहन मोहन गिरिधारी। हमारो पिय....।
न मोही नहिँ कोउ अस ब्रजनारी। हमारो पिय....।
होत बलिहारी सुनि ब्रज गारी। हमारो पिय....।
हेंकड़ी भूलि जात लखि प्यारी। हमारो पिय....।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

भईं प्यारी पिय पिय भये प्यारी। हमारो पिय....।
दोउन गति जानें दोउ गति न्यारी। हमारो पिय....।
युगल गल बहिंयन की छवि न्यारी। हमारो पिय....।
गई लुटि ब्रज भगवत्ता सारी। हमारो पिय....।
लखहु ग्वालन सँग मारामारी। हमारो पिय....।
नचावति ब्रज बनितनि दै तारी। हमारो पिय....।
यार की जानउँ यद्यपि जारी। हमारो पिय....।
वाई सों मोरी ह्वै गइ अब यारी। हमारो पिय....।
वरौं वाइको या रहउँ कुँवारी। हमारो पिय....।
गरज वाकी हो तो कर ले यारी। हमारो पिय....।
भिखारी नहिं हौं, हौं प्रेम पुजारी। हमारो पिय....।
बने आपुहिं आपुन घर वारी। हमारो पिय....।
पाइ गति गरलहुँ प्यावन वारी। हमारो पिय....।
न पायो ब्रजरस कमला नारी। हमारो पिय....।
बनायो वाने कुबरिहुँ घर वारी। हमारो पिय....।
प्रेम के बंधन बँधत मुरारी। हमारो पिय....।
अवशि मिलिहैं 'कृपालु' बनवारी। हमारो पिय....।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

32

अब तो कृपा करो श्री राधे!
तुम्हरे द्वार परो श्री राधे!
जात त्रिताप जरो श्री राधे!
हौं हौं पतित खरो श्री राधे!
मम अघ यमहुँ डरो श्री राधे!
माया मोह हरो श्री राधे!
मम उर महँ विहरो श्री राधे!
अवगुण चित्त न धरो श्री राधे!
चह शिशु बनि झगरो श्री राधे!
मम पापन न डरो श्री राधे!
शठ मन हठहिं अरो श्री राधे!
माया तिमिर हरो श्री राधे!
बूड़त कर पकरो श्री राधे!
अब जल नाव भरो श्री राधे!
अब जनि बेर करो श्री राधे!
मम उर भगति भरो श्री राधे!

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

चह पद रति न तरो श्री राधे!
हौं 'कृपालु' तुम्हरो श्री राधे!

मेरी राधे प्रेम अगाधे !
मेरी राधे प्रेम सुधा दे !
मेरी राधे झलक दिखा दे !
हे राधे राधे !
श्री राधे राधे !
जय श्री राधे !
जय श्री राधे राधे !
स्वामिनि राधे !
जय राधे राधे !
जय राधे जय राधे राधे !
तू मेरी राधे !
मैं तेरी राधे !
तू मेरी मैं तेरी राधे !
कृपामयी राधे !
दयामयी राधे !

COPYRIGHT

33

(मन तेरो साँचो..)

अलबेली सरकार वृषभानुदुलार।
जाको चाकर नागर नन्दकुमार।
जाकी अगवानी कर ब्रजराजकुमार।
जाको गुन गन गावें मुरलिहिं रिझवार।
जाके रोम रोम बह ब्रजरस धार।
जासों अजित ब्रह्म ने मानी हार।
जाको चरण पलोटत हरि बलिहार।
जाके द्वार बँटत रह नित्य प्यार।
जाकी चरनन रज हरि निज सिर धार।
जाके पग बहाव हरि अँसुवन धार।
जाको वेद कहत माधुर्य सार।
जाको भेद न पायो वेद चार।
जाकी लीला अद्भुत अपरम्पार।
जाके रह दीनन आदर दरबार।
जेहि कह ह्लादिनि शक्तिहिं अवतार।
कहु अपनो मोहिं 'कृपालु' इक बार।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

34

(आजा प्यारी भानुदुलारी...)

आजा आजा दरस दिखा जा, आजा बरसाने वारी।
तू तो रह मम उर महँ प्यारी, बाहर आजा सुकुमारी।
सन्मुख आजा सुकुमारी,
दरस दिखा जा सुकुमारी।
झलक दिखा जा सुकुमारी।
आँख मिचौनी तजि दे प्यारी, सीधे सीधे आ प्यारी।
होजा प्रकट रँगीली महलनि, ब्रज रस बरसाने वारी।
आजा चुपके ते सुकुमारी, काहुहिं नहिं कहिहौं प्यारी।
आजा दरसन परसन तरसति, तेरी कीरति महतारी।
आजा भानु भूप की गोदी सूनी है तुम बिन प्यारी।
आजा आने वाले ही हैं तेरे प्रियतम बनवारी।
आजा अइहैं पद सेवाहित, चाकर बन कर गिरिधारी।
आजा ललितादिक सखि परखत, जो तेरी प्रानन प्यारी।
आजा चरण उछाल दूध पी, करु निहाल निज महतारी।
आजा श्रीदामाहूँ परखत, इक छोटी भगिनी प्यारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

आजा दुध दँतुलिन दिखरा जा, आजा बरसाने वारी।
आजा तोतरि बोल सुना जा, आजा बरसाने वारी।
आजा लतन पतन तन धरि धरि, जइहैं ज्ञानिन बलिहारी।
आजा मोर कुटी वारी, हौं 'कृपालु' वारी वारी।

जय जय रस बरसाने वारी, जय जय बरसाने वारी।
जय जय महाभाव रसवारी, जय जय नथ बेसर वारी।
जय जय प्रानहुँ ते प्यारी, जय जय प्यारी बलिहारी।
जय जय मोहन मोहिनी प्यारी, जय जय अति भोरी प्यारी।
पतित पावनी तुम बिनु प्यारी, कोउ नहिं है त्रिभुवन प्यारी।
भली बुरी जैसी हूँ प्यारी, हूँ तो तेरी सुकुमारी।
तोहिं तजि जाऊँ कित सुकुमारी, पता बता दे मम प्यारी।
तू तो थी बिनु हेतु सनेहिनि, अब क्यों निठुर भई प्यारी।
ब्रजरस बूँद पिला दे प्यारी, घटे न कछु तव सुकुमारी।
छोड़ूँ नहिं पाछा हौं प्यारी, चाहे जो हो सुकुमारी।
सुधि लो कृपालु मम प्यारी, अति 'कृपालु' तुम सुकुमारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

35

आजा प्यारी भानुदुलारी, आजा बरसाने वारी।
आजा प्यारी भानुदुलारी, आजा मोर कुटी वारी।
आजा प्यारी भानुदुलारी, आजा मान मंदिर वारी।
आजा प्यारी भानुदुलारी, आजा गहवर वन वारी।
आजा बरसाने वारी, आजा बरसाने वारी।
ऊँचे महल अटा वारी, आजा बरसाने वारी।
सँग ला प्रियतम कुंज बिहारी, आजा बरसाने वारी।
सँग ला निज सखियन सारी, आजा बरसाने वारी।
आजा रस बरसाने वारी, आजा बरसाने वारी।
आ ब्रजरस बरसाने वारी, आजा बरसाने वारी।
आजा भोरी भारी प्यारी, आजा बरसाने वारी।
आ भी जा रासेश्वरी प्यारी, आजा बरसाने वारी।
आजा कुंजविहारिणि प्यारी, आजा बरसाने वारी।
आजा मेरी प्रानन प्यारी, आजा बरसाने वारी।
आजा स्वामिनि भोरी भारी, आजा बरसाने वारी।
निज किंकरि किंकरि करि प्यारी, आजा बरसाने वारी।
आजा सिर चूनरि वारी, आजा बरसाने वारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

आजा श्रुति कुण्डल वारी, आजा बरसाने वारी।
आजा नथ बेसर वारी, आजा बरसाने वारी।
आजा नीलांबर वारी, आजा बरसाने वारी।
आजा कर कंकन वारी, आजा बरसाने वारी।
आजा कटि किंकिनि वारी, आजा बरसाने वारी।
कोटि प्राण दउँ तो पै वारी, आजा बरसाने वारी।
ब्रज बनितनि हरषाने वारी, आजा बरसाने वारी।
नित लीला दरसाने वारी, आजा बरसाने वारी।
सरस रास सरसाने वारी, आजा बरसाने वारी।
अइहैं आपुहिं आपु बिहारी, आजा बरसाने वारी।
आवें स्वागत हित बनवारी, आजा बरसाने वारी।
आरति लिये खड़े गिरिधारी, आजा बरसाने वारी।
जाकर चाकर कुंजबिहारी, आजा बरसाने वारी।
छिन छिन महँ रिसियाने वारी, आजा बरसाने वारी।
हरि को आँखि दिखावनि वारी, आजा बरसाने वारी।
हरिहूँ को तरसाने वारी, आजा बरसाने वारी।
हरिहूँ को हड़काने वारी, आजा बरसाने वारी।
भृकुटिहिं हरिहिं डरावन वारी, आजा बरसाने वारी।
थर थर हरिहुँ कँपाने वारी, आजा बरसाने वारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

हरि सिर चरन झुकावन वारी, आजा बरसाने वारी।
मधुर मधुर मृदु मुसुकनि वारी, आजा बरसाने वारी।
परम मधुर सुर गावनि वारी, आजा बरसाने वारी।
सरस राग सों गावनि वारी, आजा बरसाने वारी।
पंचम सुर सों गावनि वारी, आजा बरसाने वारी।
मन मंदिर में सेज सँवारी, आजा बरसाने वारी।
करिय पहरुवा महलन वारी, आजा बरसाने वारी।
बिगरी मोर बनावनि वारी, आजा बरसाने वारी।
भई बेर वृषभानुदुलारी, आजा बरसाने वारी।
अब तो हमरिहुँ सुधि लो प्यारी, आजा बरसाने वारी।
पतितन को अपनावनि वारी, आजा बरसाने वारी।
मम 'कृपालु' गति तुम इक प्यारी, आजा बरसाने वारी।

36

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

आजा आजा राधे आके ना जा मेरी राधे।
नैनन छाजा आजा मन भाजा राधे।
उर में ही रह आजा बाहर राधे।
झलक दिखाजा पुनि जा जा ब्रज राधे।

है प्रतीति इक दिन आयेगी तू राधे।
चोरी चोरी आजा न बताऊँ काउ राधे।
पिय को पठा दे यदि तू ना आवे राधे।
जो ना आ तो आके कहु नहिं आऊँ राधे।
आ या ना आ उर में दे विरहाग राधे।
रोम रोम बोले मेरे राधे राधे राधे।
तेरे बिनु जिऊँ ना बना दे अस राधे।
तेरे बिनु जीना भी क्या जीना मेरी राधे।
रोता रहूँ तव दरशन हित राधे।
मिलन ते विरहा में अति सुख राधे।
देखन दे न दृगजल छवि राधे।
जित देखूँ तित तू ही दीखे नित राधे।
गाऊँ राधे ध्यावूँ राधे पावूँ रति राधे।
जाऊँ जित पाऊँ तित दरशन राधे।
नाचूँ गाऊँ रोऊँ नित कहि कहि राधे।
वा पै बलि बलि जाऊँ जो भी बोले राधे।
मेरी गति मति रति सर्वस राधे।
अपनी बना न बना 'मेरी' बनु राधे।
माने या न माने मैं हूँ तेरी दासी राधे।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तू ही मेरी थी रहेगी स्वामिनि राधे।
तेरी दासी दासी दासी करु मोहिं राधे।
मन ते मैं हारा मन ले ले मेरी राधे।
तू है उर में ही बुधि में बिठा दे राधे।
ब्रजरस छकि के पिला दे मोहिँ राधे।
अस वर दे न माँगूँ कभू कछू राधे।
तेरी अष्टयामी सेवा चाहूँ बस राधे।
डगर बुहारी दऊँ जित जायें राधे।
स्वर्ग अपवर्ग नहिं चाहूँ तव राधे।
प्रेम निष्काम इक चाहूँ तव राधे।
तेरी रुचि महँ रुचि राखूँ नित राधे।
तेरे सुख को ही मानूँ निज सुख राधे।
दुख में भी तेरी कृपा मानूँ मेरी राधे।
तू ही जग में है जग तुझमें है राधे।
तू ही जब चाहे माया रचे जग राधे।
तेरी शक्ति पाके हरि पालें जग राधे।
तेरी कृपा पाके हरि कृपा करें राधे।
तू जो चाहे गूँगा करे प्रवचन राधे।
तू जो चाहे पंगुला भी गिरि चढ़े राधे।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तेरी सत्ता बिनु पत्ता हिले नहिं राधे।
तू तो व्यापक जल थल नभ राधे।
दिव्य दृष्टि दे दे याते देखूँ तोहिं राधे।
योगमाया माया दोनों तेरी शक्ति राधे।
मेरा पर्दा माया का उठा दे मेरी राधे।
तेरा पर्दा योगमाया का उठा दे राधे।
जगहूँ न शिशु माँ में पर्दा हो राधे।
उर ते लगाजा आजा निज शिशु राधे।
सुत को भुलाया ऐसी कैसी माँ तू राधे।
मोको क्यों भुलाया तोसों बोलूँ नहिं राधे।
देखा कैसे जाय तोसों सुत दुख राधे।
प्यार दे या मारे पाछा छोड़ूँ नहीं राधे।
पूत हो कुपूत पै कुमाता न हो राधे।
आजा मेरी राधे प्रेम अगाधे।
जनम जनम का भिखारी तोहिं का दे।
सारा जग है भिखारी दाता मेरी राधे।
भुक्ति मुक्ति माँगूँ नहिं झलक दिखा दे।
राधे ब्रजरस का चसका लगा दे।
पाछा नहिं छोड़ूँ चाहे चक्र चला दे।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

माया को भगा दे सुत को जगा दे राधे।
तू तो है 'कृपालु' क्यों कठोर बनी राधे।

गोविंद राधे राधे गोविंद राधे।
मेरी प्यारी राधे प्यारी ते भी प्यारी राधे।
ब्रह्म अराधे ऐसी मेरी प्यारी राधे।
ब्रह्म श्याम कुंज बिच चापैं पग राधे।
पिय ललचायें सखि चापैं पग राधे।
पिय देयँ काला टीका माथे लखि राधे।
पिय ना मिलाय सके दृग दृग राधे।
पिय नाचे सुनि धुनि राधे राधे राधे।
पिय भी हैं प्यारे किंतु अति प्यारी राधे।
पाछे कहु श्याम प्रथमहिं कहु राधे।
सब कहें राधे श्याम नहिं श्याम राधे।
श्याम सोते रोम रोम कह राधे राधे।
श्याम श्याम रोम रोम सोते कह राधे।
मदनहुँ मोहन मोहे लखि राधे।
प्रेम अगाधे मेरी प्यारी प्यारी राधे।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

रूप अगाधे मेरी प्यारी प्यारी राधे।
भाजे आवें गोविंद गाइये राधे।
भूलें सिट्टी पिट्टी पिय लखि छवि राधे।
पिय ते मिला दूँ जब जब कह राधे।
पिय को न आने दऊँ जब कह राधे।
गिरें हरि मुरछित लखि छवि राधे।
पूर्णब्रह्म श्यामहूँ हैं आधे बिनु राधे।
पिय को बुरा ना कहो बुरा मानें राधे।
राधे कह पिय भजो पिय कह राधे।

भजो राधारानी राधारानी राधारानी।
बोलो राधारानी राधारानी राधारानी।
गावो राधारानी राधारानी राधारानी।
ध्यावो राधारानी राधारानी राधारानी।
जपो राधारानी राधारानी राधारानी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधे मेरी राधे मेरी राधे मेरी स्वामिनि।
राधे मेरी मैं राधे की, राधे मेरी स्वामिनि।

राधेरानी ठकुरानी ब्रजरसखानी।
राधेरानी ब्रजरानी अवढरदानी।
राधेरानी महरानीहूँ महरानी।
राधेरानी प्रेमरूप ब्रजरस खानी।
राधेरानी चाकर साराँगपानी।
राधेजू की करें हरि अगवानी।
हरि बोलें 'जय हो, जय हो, जय हो' राधारानी।
हरि आगे सखि सखि आगे राधारानी।
हरि भूलें सुधि लखि छाया राधारानी।
मुरलि में गावें हरि गुन राधारानी।
मुकुट धरत हरि पग राधारानी।
हरि तहँ सिर जहँ पग राधारानी।

37

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तोपै वारी वारी बरसाने वारी प्यारी।
मैं ही नहीं वारी बनवारी वारी वारी।
तोपै कोटि उमा रमा नारी वारी प्यारी।
श्री वृषभानुदुलारी मेरी प्यारी।
बरसाने वारी भोरी भारी प्यारी प्यारी।

बरसाने वारी ब्रजरस वारी प्यारी।
रस बरसाने वारी प्यारी प्यारी प्यारी।
ब्रजरस बरसाने वारी मेरी प्यारी।
रस बरसाने आई बरसाने वारी।
ब्रज रस बरसाने वारी आई प्यारी।
लूटो ब्रज रस बरसाने आई प्यारी।
लूटो ब्रज रस बरसाने आई प्यारी।
पीलो छकि ब्रज रस प्याने आई प्यारी।
डूबो रस सिंधु डुबाने आई प्यारी।
तेरे रोम-रोम ब्रज रस चुवे प्यारी।
ब्रज रस ही बनि गयो तनु प्यारी।
कीर्तिकुमारी नथवारी मेरी प्यारी।
सुकुमारी ऊँचे महलवारी प्यारी।
राधा कुंज सेवाकुंज वारी प्यारी।
मैं हूँ प्यारी जू की मेरी प्यारी जू हैं प्यारी।
मैं तो वापै वारी जाऊँ जो भी बोले प्यारी।
प्यारी प्यारी सुकुमारि नथवारी प्यारी।
सतरंगी चूनरि सिर प्यारी।
चूनरि जरिन किनारी वारी प्यारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मोतिन लर वारी नथ प्यारी।
नासा बेसर हलकनि प्यारी।
नथवारी प्यारी बेसर वारी प्यारी।
मुकुट मणिन मंडित सिर प्यारी।
वेणी घुँघरारी सिर प्यारी।
बिंदी अरुण भाल भल प्यारी।
कानन कर्णफूल दुति प्यारी।
भोरी भारी अँखियन चितवनि प्यारी।
ब्रजरस छलकत अँखियन प्यारी।
मोहन मनहर मुसुकनि प्यारी।
विविध मणिन माला गल प्यारी।
दुलरी तिलरी छवि गल प्यारी।
वेणी कारी घुँघरारी अनियारी प्यारी।
उर कंचुकि कुसुम्भि रँग वारी।
गोरे-गोरे तन पर नीली-नीली सारी।
नील वसन दमकनि तनु प्यारी।
कटि किंकिनि रुनझुन धुनि प्यारी।
मणिन जटित कंकन कर प्यारी।
चूरी चमक चमकनि कर प्यारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मुँदरिन दमकनि अँगुरिन प्यारी।
मेहँदी अरुण रची कर प्यारी।
मणि मंडित नूपुर पद प्यारी।
बिछुवनि छवि पग अँगुरिन प्यारी।
अरुण मिहावरि पगतल प्यारी।
सब उपमान भजें लखि प्यारी।
नित नई नई मोहिँ लागे छवि प्यारी।
तेरी छवि ऐसी लखि तू भी मोहे प्यारी।
प्यारी लखि मोहें प्यारी प्यारी अस प्यारी।
औरों की का कहूँ प्यारी तू भी वारी प्यारी।
जापै सब वारी सोऊ तोपै प्यारी वारी।
मैं तो नहिं वारी कैसे मानू तोहिं प्यारी।
निज तनु परछाईं लखि मोहें प्यारी।
प्यारी सम प्यारी प्यारी केवल प्यारी।
सत चित आनँदघन तनु प्यारी।
सब प्यारी अवतार प्यारी अवतारी।
लखि निज छवि मोहें भोरी भारी प्यारी।
जानें सब कला लोग कहें भोरी भारी।
कोटि कोटि ब्रह्मानंद तोपै वारी प्यारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

रोम रोम ब्रजरस बह तनु प्यारी।
जादू की पिटारी रोम रोम तनु प्यारी।
जेति बार लखूँ लागे रस बड़ प्यारी।
रोम रोम दृग हो तो लखूँ छकि प्यारी।
दृग में पलक मेरी बैरिनि प्यारी।
लख लख ब्रजनारी चलें पाछे प्यारी।
रस को भी सरस बनाने वारी प्यारी।
बनवारी हूँ न पायो तेरो पार प्यारी।
जाको तू जना दे सोइ जानें तोहिं प्यारी।
रस को भी रसिक बनाने वारी प्यारी।
प्राणप्यारे प्यारे ते भी प्यारी मेरी प्यारी।
पिय तो हैं प्राण तू तो प्राणन प्यारी।
प्यारी अस प्यारी प्यारी वारी वारी वारी।
अचरज यह तोपै तू भी वारी प्यारी।
जापै सब वारी सोउ तोपै वारी प्यारी।
वारी कोटि बनवारी तोहिं लखि प्यारी।
बलिहारी बोले बनवारी लखि प्यारी।
तेरे आगे फीकी लागे पिय छवि प्यारी।
गोरी गोरी भोरी भोरी प्यारे ते हूँ प्यारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कारो कारो नटवर गोरी गोरी प्यारी।
गोरा गोरा तनु लखि पिय लाजें प्यारी।
पियहुँ झुके सिर लखि तनु प्यारी।
पिय नहिं लखि सक अस प्यारी प्यारी।
पिय वारी वारी जाएँ लखि छवि प्यारी।
दृगन बचा के पिय देखें छवि प्यारी।
राई नोन वारें पिय लखि छवि प्यारी।
मदन मोहन मोहे लखि छवि प्यारी।
जिन मोहे त्रिभुवन तिन मोहे प्यारी।
तोको लखि बनवारी बलिहारी प्यारी।
तरु जनु गिरें हरि लखि छवि प्यारी।
लगे टकटकि इकटक लखि प्यारी।
कर ते मुरलि गिरे लखि छवि प्यारी।
भूलें सुधि पिय लखि तनु छाया प्यारी।
गिरें भू पै बनवारी लखि छवि प्यारी।
काला टीका दें 'कृपालु' लखि छवि प्यारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तोपै वारी वारी वारी बनवारी प्यारी।
'जय हो' कह पिय जो सवारी चले प्यारी।

अगवानी करें पिय जायँ जहाँ प्यारी।
'जय हो' 'जय हो' पिय बोलें पाछे चलि प्यारी।
वाके पाछे पिय डोलें जोई बोले प्यारी।
पिय तेरे पाछे डोलें बनु सखि प्यारी।
पिय को जो पाना चाहो बनो सखि प्यारी।
पिय को मिलन चाहो रोओ आगे प्यारी।
पिय भाजे अइहैं तुम बोलो प्यारी प्यारी।
लखि पिय उर परछाईं रूठें प्यारी।
थर थर काँपे पिय लखि मान प्यारी।
माथे पे पसीना आवै लखि मान प्यारी।
सिट्टी पिट्टी भूलें पिय रूठीं लखि प्यारी।
कापैं पिय लखि टेढ़ी भृकुटिन प्यारी।
रो के कह सखि सों दिखा दे छवि प्यारी।
सुखघन को भी रुलाने वारी प्यारी।
पिय सखि पग परें रूठीं लखि प्यारी।
प्यारी बनि पिय रिझवत नित प्यारी।
वारी हरिहुँ को तरसाने वारी प्यारी।
पिय धरें मुकुट युगल पद प्यारी।
पिय जायें नारी बनि बनि ढिंग प्यारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

पिय माँगें मुख वारी जूठी बीरी प्यारी।
पिय दें, बुहारी गहवर वन प्यारी।
ठाकुर बनि गये चाकर प्यारी।
देंय बुहारी पिय महलन प्यारी।
पिय माँगें महल टहल दे दो प्यारी।
चँवर ढुरावें पिय चहुँ दिसि प्यारी।
पिय रचें जावक चरनन प्यारी।
सेज सजावें पिय तब सोएँ प्यारी।
पिय हौले हौले डरि चापें पग प्यारी।
सब को नचाने वाले को नचाने वारी।
पिय नाक रगड़त गहि पग प्यारी।
छलिया के छक्के छुड़ाने वारी प्यारी।
जेहि डर डर डर डर लखि प्यारी।
पिय छल छन्द भूलें लखि छवि प्यारी।
विभु होके रोके ढूँढ़े कहाँ गईं प्यारी।
आनँद दाता को रुलाने वारी प्यारी।
जाको आदि मध्य अंत पायो न बिहारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

पिय जित देखें तित दीखें प्यारी प्यारी।
प्रेम भिखारी पिय दाता मेरी प्यारी।
पिउ तो है अग्नि सम, दाहिका हैं प्यारी।
पिय तो कपूर सम, गंध सम प्यारी।
पिउ तो हैं दुग्ध सम श्वेतिमा हैं प्यारी।
पिउ परमात्मा की आत्मा हैं प्यारी।
पिउ नहिं पावै, पावै मादन प्यारी।
न्याय करें बनवारी कृपा करें प्यारी।
प्यारो बड़ो निष्ठुर दयामयी प्यारी।
पिय प्यारी में जो चुनना हो चुनो प्यारी।
रोतो रोतो ढूँढैं कुंज कुंज पिय प्यारी।
मुरलि में गावें छिन छिन गुन प्यारी।
पिय तनु रोम रोम बोले प्यारी प्यारी।
पिय करें कृपा पाके तेरी कृपा प्यारी।
पिय जनु वारिद सिंधु जनु प्यारी।
बनवारी को तो माने जानि जन प्यारी।
बिनुहि बुलाये आयें पिय ढिग प्यारी।
मन खिसियावें पिय लखि तनु प्यारी।
पिय ललचावें पग चापैं सखि प्यारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

लँगर लँगरई भुलाने वारी प्यारी।
पिय परे सखि पग,सखि पग प्यारी।
पिय पियें प्यारी रस पिय रस प्यारी।
पिय प्यारी रस पियें धनि ब्रजनारी।
सिर धर पिय जहँ पग धर प्यारी।
चूमें पिय तहँ जहँ पद धरें प्यारी।
पिय को अंगुली पै नचाने वारी प्यारी।
पिय आगे अकड़ के चले सखि प्यारी।
अँगुठा दिखाउँ पिय को मैं बल प्यारी।
पिय आगे सखि चलें सखि आगे प्यारी।
पाछे जय पिय की प्रथम जय प्यारी।
पिय पावें रास जब कृपा करें प्यारी।
पिय करें मारा मारी प्यार बाँटें प्यारी।
पिय ना सुनें जो तेरी जाओ ढिंग प्यारी।
नीलो रँग तनु प्यारो नीलो पट प्यारी।
पीलो रँग पट प्यारो पीलो तनु प्यारी।
बड़ो नटखट प्यारो बड़ी भोरी प्यारी।
पिय को बुरा ना कहो बुरा मानें प्यारी
एक दूजे पर वारी बनवारी प्यारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधे बिनु पिय आधे पिय बिनु प्यारी।
मेरी प्यारी जू को दूजो रूप बनवारी।
प्यारी चह पिउ सुख, पिउ सुख प्यारी।
प्यारी रटें पिउ पिउ, पिउ रटें प्यारी।
प्यारी कहें प्यारे भजु प्यारे कहें प्यारी।
प्यारी कभू प्यारे बनें प्यारे कभू प्यारी।
पिय पूछें प्यारीजू ते कित गईं प्यारी।
कित गये पिय पिय ते ही पूछें प्यारी।
शुक को पढ़ावें पिय कहु 'प्यारी प्यारी'।
'प्यारे' कहु शुक को पढ़ावें प्यारी प्यारी।
ब्रजगोपी शुक को पढ़ावें प्यारे प्यारी।
तोपै वारी विधि हरि हर वारी प्यारी।
विधि हरिहरहूँ नचाने वारी प्यारी।
तोपै वारी वारी बड़े बड़े प्यारी प्यारी।
वारी बनवारी अस प्यारी प्यारी प्यारी।
पिय पर सब वारी पिय वारी प्यारी।
तोपै वारी रँगीली महल वारी प्यारी।
हौं हूँ वारी वापै जो भी तोपै वारी प्यारी।
हौं हूँ तो 'कृपालु' वारी भोरी लखि प्यारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मुक्ति ठुकरावें ब्रजवासी तेरे प्यारी।
मुक्ति माँगे गोपीजन पदरज प्यारी।
ब्रजगोपी देना जाने लेना नहिं प्यारी।
कमला न पायो ब्रजरस तव प्यारी।
कोटि कोटि कमला हैं किंकरि प्यारी।
ब्रह्मा माँगें वर खग मृग तरु प्यारी।
ऊधो माँगें वर तरु लता पता प्यारी।
तेरी पदरज उमा रमा चह प्यारी।
रुक्मिणिहूँ चह पद रज प्यारी।

कर्म ज्ञान योग ते न मिलो तुम प्यारी।
तेरा नाम तो है बड़ तुझते भी प्यारी।
नाम के अधीन रहे नामी तू भी प्यारी।
बुद्धि माने शठ मन माने नहिं प्यारी।
जापै कृपा करें सोई पावें तोहिं प्यारी।
जो भी कृपा माँगे वापै कृपा करें प्यारी।
चह तेरी दासी दासी सेवा मेरी प्यारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मैं तो सेवा माँगूँ महलन वारी प्यारी।
मैं तो सेवा माँगूँ तव सखियन प्यारी।
ले के मानूँगा मैं प्रेम हठी शिशु प्यारी।
शरण शरण तोरी कृपा करु प्यारी।
मैं हूँ छत्तिस करु तिरसठ प्यारी।
सुधि लो हमारी सुकुमारी अब प्यारी।
सदा का भिखारी तोहिं कहा दऊँ प्यारी।
सहि नहिं जाय अब जग दुख भारी।
हमरिहिं बारी क्यों कठोर भई प्यारी।
पतित जनन अपनाने वारी प्यारी।
बिगरी बना दे बरसाने वारी प्यारी।
सत्याग्रह करिहौं मैं तेरे द्वार प्यारी।
आजा न तु तेरे द्वार तनु तजौं प्यारी।
कृपा अवतारिणि कृपा करु प्यारी।
मैं तो तेरी थी रहूँगी कृपा करु प्यारी।
अपयश भारी जो न कृपा करु प्यारी।
कहा घटि जाय तोरा कृपा करु प्यारी।
उर रह तू ही माया को भगा दे प्यारी।
तू तो माँ है राजकुमारी मैं भिखारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

खाली हुआ कहा कृपाकोष तव प्यारी।
कृपा पर भी तो तू कृपा करे प्यारी।
प्यारी सम है 'कृपालु' प्यारी मेरी प्यारी।

38

(परिक्रमा)

ऐसी मेरी राधे रानी, प्रेम सुखदानी,
करें जोरि जुग पानी, हरि अगवानी।

ऐसी मेरी राधे रानी, प्रेम सुख दानी,
कमला, भवानी, वानी करें अगवानी।

ऐसी बरसाने वारी, भानुदुलारी,
'हा हा' खायँ बनवारी, जायँ बलिहारी।

गोरी गोरी रस बोरी, भानु-किशोरी,
भोरी भोरी चोरी चोरी, पिय चित चोरी।

ऐसी हैं 'कृपालु' मोरी, भानुकिशोरी,
चितचोरहुँ चित, चोरी चोरी चोरी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

39

(परिक्रमा)

मेरी राधारानी मेरी प्रेम रस खानी,
मेरी ठकुरानी मेरी ब्रज महरानी।
ब्रजरस खानी ब्रजरानी ठकुरानी,
शरण शरण तेरी मेरी राधारानी।
प्रेम भिखारी आया द्वार राधारानी,
दे दो दान ठकुरानी अवढर दानी।
माना मैं बुरा हूँ हूँ तो तेरा राधारानी,
यामें तो है दोषी तेरी माया ठकुरानी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मेरी राधारानी ऐसी करुणा की खानी,
जो भी रो के माँगे प्रेम देति महरानी।
'जय हो, जय हो' मेरी ठकुरानी राधारानी,
जाकी नौकरानी कोटि कमला भवानी।
राधारानी महरानीहूँ महरानी,
राधारानी ठाकुरहूँ ठकुरानी।
मेरी ऐसी राधारानी ब्रजरस खानी,
जाकी करें अगवानी वानी व शिवानी।
मेरी जैसी राधारानी वैसी राधारानी,
जाकी पदरज चह सारँगपानी।
निकसत जबहिँ सवारी राधारानी,
'जय हो, जय हो' बोलें सारँगपानी।
सोरहों सिंगार जब करें राधारानी,
पिय कह 'जय हो' करि ऊपर पानी।
मैं तो हूँ दिवानी तेरी मेरी राधारानी,
नहिं चह भुक्ति मुक्ति सारँगपानी।
मेरी ऐसी राधारानी ब्रज ठकुरानी,
सारँगपानी करें जाकी अगवानी।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

रोम रोम रस चुवे तनु राधारानी,
पियें पूर्णकाम श्याम पुण्यपुंज मानी।
जहँ जहँ चरण धरत राधारानी,
तहँ तहँ सिर धरें सारँगपानी।
सबके हैं ठाकुर सारँगपानी,
उनकी भी ठकुरानी मेरी राधारानी।
आनंद रूप मेरे सारँगपानी,
महाभाव प्रेम रूप मेरी राधेरानी।
महरानीहूँ की महरानी राधेरानी,
विहरति नित वृंदावन रजधानी।
मेरी राधेरानी प्रेम रूप रसखानी,
जासों प्रेम भिक्षा माँगें सारँगपानी।
जाके आगे जोरें पानी सारँगपानी,
सोई हैं 'कृपालु' राधारानी रसखानी॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

40

(परिक्रमा)

रस बरसाने वारी बरसाने वारी,
छकि के पियत नित सारी ब्रजनारी।

प्यारी जू की महिमा को जानें ब्रजनारी,
प्यारी कृपा कछु कछु जानें बनवारी।

ब्रजरस चुवे रोम रोम तनु प्यारी,
ब्रज नारी पियें ललचावें बनवारी।

आगे आगे प्यारी चलें पाछे ब्रजनारी,
वाके पाछे पिय चलें कहि जय हो प्यारी।

प्यारी पिय रस पिये, पिय रस प्यारी,
पिय प्यारी रस पियें सब ब्रजनारी।

मेरी जैसी कुंज विहारिणि प्यारी,
वारौं जापै कोटिन कुंजबिहारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

प्यारी जू की सेवा करें नित ब्रजनारी,
गोपी की कृपा ते पावें सेवा बनवारी।

जन क्रन्दन सहि सक नहिं प्यारी,
सुनत भजति तजि कुंजबिहारी।

प्यारी प्यारी भोरी भारी बरसाने वारी,
सुकुमारी नथ बेसर वारी प्यारी।
मेरी प्यारी प्यारी बरसाने वारी प्यारी,
मैं तो प्यारी पर तन मन प्रान वारी।
रँगीली महल वारी प्यारी प्यारी प्यारी,
ब्रज रस वारी प्यारी बरसाने वारी।
नथवारी रँगीली महल वारी प्यारी।
मादन रसवारी अति सुकुमारी।
मेरी प्यारी प्यारी बरसाने वारी प्यारी,
जाके पाछे पाछे डोलें बाँकेबिहारी।
बनवारी चाकर स्वामिनि प्यारी।
भोरे जन कहें ठाकुर बनवारी।
रँगीली महलवारी प्यारी सुकुमारी,
सोई मम स्वामिनि भानुदुलारी।
जब जब निकसत प्यारी की सवारी,
पाछे पाछे जय हो, जय हो बोलें बनवारी।
सजि धजि चलें जब बरसाने वारी।
ऊँचे स्वर बनवारी बोलें बलिहारी।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

प्राण प्यारे प्यारे अरु प्राण प्यारी प्यारी,
किंतु उन्नइस प्यारो बीस मेरी प्यारी।
जाके डर डरे डर ऐसो बनवारी,
सोउ डरे जासों ऐसी बरसाने वारी।
मेरी ऐसी प्यारी प्यारी बरसाने वारी,
लखतहिं वारी वारी जायँ बनवारी।
मेरी ऐसी बरसाने वारी छवि प्यारी,
जाकी परछाईं लखि वारी बनवारी।
सोरहों सिंगार करि बैठें जब प्यारी,
प्यारी माथे काला टीका देंय बनवारी।
प्यारी पर वारी वारी वारी बनवारी,
बनवारी पर वारी वारी वारी प्यारी।
बुरा न कहो जो कारी तनु बनवारी,
कारी तनु पर वारी गोरी तनु प्यारी।
तूने मोह्यो मन बनवारी,
मन 'कृपालुहुँ' मोहहु प्यारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

प्यारी प्यारी भोरी भारी भानुदुलारी,
शरण शरण मैं तो शरण तिहारी।

गोरी गोरी भोरी भारी ब्रजरस बोरी,
मैं भी तो हूँ तोरी मोरी सुधि लो किशोरी।

तू तो बिनु कारण कृपा करे प्यारी,
मैं भी तो हूँ तेरी चेरी सुधि लो हमारी।

तेरे रोम रोम चुवे ब्रजरस प्यारी,
मोकूँ इक बूँद ही पिला दे महतारी।

41

ओ माँ श्यामा तेरी जो चरण शरण आये,
माया की कौन कहे मायापति घबराये।
वनचरिन आचरन को श्रुति निंदित बतराये,
सहचरि करि उन सबको, निज भुज भरि उर लाये।
तव पद रज पावन को पद्माहूँ ललचाये,
ब्रज लता विटप बननो ब्रह्माहूँ मन भाये।
तेरी अनुकम्पा ते शिव गोपी बनि आये,
सनकादि ब्रह्मज्ञानी तन लतन पतन पाये।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

चाहत 'कृपालु' मेरी तेरी ही कहलाये,
भूले भटके कबहूँ तव सेवा मिल जाये॥

42

(ओ माँ श्यामा...)

ओ प्यारी प्यारी प्यारी, प्यारी बरसाने वारी।
ओ भोरी भारी प्यारी, मैं तोपै वारी वारी।
बरसाने वारी प्यारी, वृषभानुदुलारी प्यारी।
नथबेसर वारी प्यारी, अति भोरी भारी प्यारी।
जोइ रोकर कह 'मम प्यारी', तेहि उर लावति सुकुमारी।
दे दो निज सेवा प्यारी, नहिं चहत पदारथ चारी।
तुम करुणा की अवतारी, बलिहारी तव बलिहारी।
तुम अति 'कृपाल' महतारी, सुधि लेहु हमारिहुँ प्यारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

बरसाने वारी प्यारी, प्यारी अति प्यारी प्यारी।
प्यारी हैं ऐसी प्यारी, प्यारिहुँ मोहे लखि प्यारी।
प्यारी सम प्यारी प्यारी, जय हो बलिहारी प्यारी।
पिय प्रानन प्यारी प्यारी, सोरह सिंगार युत प्यारी।

मेरी गोरी गोरी प्यारी, मेरी भोरी भारी प्यारी।
मेरी नित्य किशोरी प्यारी, मेरी पिय चित चोरी प्यारी।
ब्रजरस बरसाने वारी, सखियन हर्षाने वारी।
हरिहूँ तरसाने वारी, सुखघन को रुलाने वारी।
चापत नित तव पद प्यारी, बलिहारी पिय बनवारी।
वारौं कोटिन बनवारी, हौं लखि 'कृपालु' छवि प्यारी।

मेरे ठाकुर बनवारी, मेरी ठकुरानी प्यारी।
मम ठाकुर कुंज बिहारी, ठाकुर ठकुरानी प्यारी।
मम प्रियतम कुंजबिहारी, प्यारी बरसाने वारी।
मम जीवन दोउ पिय प्यारी, उन पर तन मन धन वारी।
जीवन जीवन बनवारी, बनवारी जीवन प्यारी।

43

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

(ओ माँ श्यामा...)

श्यामा माँ जो तेरी, पद रज ही मिलि जाये।
संसार की कौन कहे, मन मुक्तिहुँ ठुकराये॥
जा पद रज पावन को, ब्रह्मादि तरसते हैं।
वा पद रज को पाकर, लालहुँ बलि बलि जाये॥

इस दासी की श्यामा, बस इक अभिलाषा है।
सेवा के सिवा कोई, इच्छा नहिँ रहि पाये॥
तुम्हरी महिमा श्यामा, श्यामहुँ नहिं जानि सके।
धरि रूप अनंत थके, नहिं ओर छोर पाये॥
कोउ साधन बल तुम्हरी, पदरज नहिँ पाइ सके।
बिनु हेतु 'कृपालु' तुम्हें, तुम्हरे जन बतलाये॥

भजें गोविंद गोविंद राधे। भजें गोविंद राधे राधे।
भजें गोपिन गोविंद राधे। भज गोपी गोविंद राधे।
सब जीवन जीवन राधे, सब जीवन जीवन राधे।
जीवन जीवन नँदनंदन नँदनंदन जीवन राधे।

बरसाने वारी प्यारी, प्यारी अति प्यारी प्यारी।
पिय प्रानन प्यारी प्यारी, सोरह सिंगार युत प्यारी।
मेरी गोरी गोरी प्यारी, मेरी भोरी भोरी प्यारी।
मेरी नित्य किशोरी प्यारी, मेरी पिय चित चोरी प्यारी।
प्यारी है ऐसी प्यारी, प्यारीहुँ मोहें लखि प्यारी।
प्यारी सम प्यारी प्यारी, जय हो बलिहारी प्यारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

44

कदम्ब की डारी झूलें राधा प्यारी।
झूलें राधा प्यारी झुलावें बनवारी।
गावें ब्रजनारी दै दै कर तारी।
कुंजबिहारी बोलें बलिहारी।
हौंहूँ वारी वारी झाँकी लखि न्यारी।
बनि ब्रजनारी नाचें मदनारी।
कबहुँ मुरारी झोंटा देंय भारी।
अति सुकुमारी डरपति प्यारी।

45

(ठाकुर युगल किशोर...)

जय जय राधे प्रेम अगाधे,
जय जय ब्रह्म श्याम आराधे।
जय जय अस मम स्वामिनि राधे,
जय जय जिन बिनु हरिहूँ आधे।
जय जय अस मोरी श्री राधे,
जय जय जिन चढ़ाव हरि काँधे।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जय जय अस वृषभानु किशोरी,
जय जय चितचोरहुँ चित चोरी।
जय जय अस वृषभानुदुलारी,
जय जय पग चापत बनवारी।
जय जय अस सरकार हमारी,
जय जय हा हा खात बिहारी।
जय जय अस प्यारी सुकुमारी,
जय जय लखि हरि कह बलिहारी।
जय जय चरण कमल अस प्यारी,
जय जय धर हरि मुकुट उतारी।
जय जय अस चितवनि मम प्यारी,
जय जय निरखि गिरत गिरिधारी।
जय जय अस बरसाने वारी,
जय जय दें हरि मुकुट बुहारी।
जय जय अस महिमा नथवारी,
जय जय हरि भये नर ते नारी।
जय जय चह रति रतिरस बोरी,
जय जय लो 'कृपालु' सुधि मोरी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

(ठाकुर युगल किशोर...)

जय जय ऐसी मम ठकुरानी,
जय जय हरिहूँ कर अगवानी।
जय जय अस मोरी ठकुरानी,
जय जय ब्रह्म कीन रसखानी।
जय जय अस 'कृपालु' महरानी,
जय जय महिमा हरिहुँ न जानी।

46

जयति रँगीली महलन वारी,
जयति जयति वृषभानुदुलारी।
जयति लाड़ली चूनरि वारी,
जयति जयति जय कीर्ति कुमारी।
जयति किशोरी भोरी भारी,
जयति जयति चितवनि अति प्यारी।
जयति नासिका बेसर वारी,
जयति जयति प्यारी नथवारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जयति नील अंबर तनुधारी,
जयति कुंज गह्वर वनचारी।
जयति गवनि गज लजवनि हारी,
जयति जयति पग पायल वारी।
जयति संग अगनित ब्रजनारी,
जयति जयति गह्वर वन वारी।
जयति सखिन हर्षाने वारी,
जयति जयति मृदु मुसकनि वारी।
जयति कृपालु सरल सुकुमारी,
जयति जयति कस मोहिं बिसारी।
जयति प्रणत अनुकम्पाकारी,
जयति नवल लीला विस्तारी।
जयति लली बरसाने वारी,
जयति जयति जय प्रियतम प्यारी।
जयति भजत जेहि कुंजबिहारी,
जयति जयति कहि प्रानन प्यारी।
जयति बंक भौं लखत बिहारी,
जयति जयति अति डरत मुरारी।
जयति मान कर जब जब प्यारी,
जयति जयति रिझवत बनवारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जयति चलति जब कुँवरि सवारी,
जयति जयति कह रासबिहारी।
जयति प्रेम रस रूप उजारी,
जयति जयति गिरिधर बलिहारी।
जयति गौर तनु लखि सुकुमारी,
जयति जयति लख निज तनु कारी।
जयति गौर मुख लखि बनवारी,
जयति जयति निज सुरति बिसारी।
जयति रँगीली महल बिहारी,
जयति मदन मोहन मनहारी।
जयति अकारण करुणाकारी,
जयति महाभावहि अवतारी।
जयति प्रेम मादन रसधारी,
जयति 'कृपालु' निकुंज बिहारी।

RADHA GOVIND SAMITI

जोइ भानुनंदिनि, सोइ नँदनंदन,
सोइ सत चित सुखघन वृंदावन।
श्याम नाम रूप लीला धाम गुन गन जन,
इनमें न भेद कछु सबमें है सब मन।

47

जय जय पिय प्यारी, सुकुमारी, भोरी भारी नथवारी।
बलिहारी, छवि प्यारी, ऊँचे महल अटा वारी॥
जय जय पिय प्यारी, सुकुमारी, भोरी भारी नथवारी।
जय जय बलिहारी, छवि प्यारी, अगनित उमा रमा वारी।।
प्यारी अस प्यारी, सुकुमारी, वारी वारी बनवारी।
गिरिधारी, बनवारी, गति मति रति अति मतवारी।
नटवारी, छवि न्यारी, नवल नवल लीलाधारी॥
इक तो री, तनु गोरी, नीलो री तनु इक को री।
जय जय पिय प्यारी, सुकुमारी, नथवारी ब्रजरसवारी।
रस बोरी भल जोरी, लो 'कृपालु' मम चित चोरी॥

48

COPYRIGHT

(मन भूल मत जइयो...)

RADHA GOVIND SAMITI

जय जय बरसाने वारी प्यारी प्यारी प्यारी,
जय जय वृंदाविपिन बिहारी बनवारी।
वारी वारी सुकुमारी भोरी भारी प्यारी,
वारी वारी बनवारी कुंजबिहारी।

मेरी ऐसी भोरी भारी सुकुमारी प्यारी,
जापै वारी बनवारी छैल बिहारी।
मेरी बरसाने वारी प्यारी प्यारी प्यारी,
जाके पाछे चलें लख लख ब्रजनारी।
मेरी ऐसी बरसाने वारी सुकुमारी,
पाछे पाछे पिय बोलें 'जय हो जय हो प्यारी'।

जय जय भानुनंदिनी जय जय नँदनंदन,
जय जय ब्रज गोपीजन, जय जय वृंदावन।
जय जय त्रिभुवन वंदन नँदनंदन,
जय जय ब्रज रसिकन जन जीवनधन।
मेरी ऐसी ठकुरानी ब्रजरसखानी,
करें कोटि कमला भवानी अगवानी।
मेरी ऐसी राधारानी रूपरसखानी,
जाको पदरज चह सारँग पानी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

49

(तू ही तू ही...)

मेरी बरसाने वारी प्यारी प्यारी प्यारी,
सुकुमारी भोरी भारी भानुदुलारी।
प्यारी प्यारी भोरी भारी बरसाने वारी,
बलिहारी बलिहारी बलिहारी प्यारी।
रस बरसाने वारी बरसाने वारी,
शरण शरण मैं तो शरण तिहारी।
प्यारी प्यारी भोरी भारी भानुदुलारी,
कृपा करु कृपा करु कृपा करु प्यारी।
चाहे अपनाये चाहे ठुकराये प्यारी,
तू ही मेरी थी भी है भी रहेगी भी प्यारी।
जग में भी माँ को नहिं जाने शिशु प्यारी,
माँ ही जनावे वाय मैं हूँ महतारी।
मेरी बरसाने वारी भानुदुलारी,
दे दे ब्रजरस आया द्वार भिखारी।
बिनु कारण करुणा करि प्यारी,
ब्रजरस बूँद पिला सुकुमारी।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

मोहनहूँ मन मोहिनि प्यारी,
हमरहुँ मन मोहहु सुकुमारी।
मन न शरण गह तव सुकुमारी,
टुक निज झलक दिखा दे प्यारी।
पियत विषय विष तव सुत प्यारी,
तू देखति कैसी महतारी।
चम्पक बरनि गौर तनु प्यारी,
सतचित आनँदघन तनु वारी।
सोरहों सिंगार करि बैठें जब प्यारी,
माथे काला टीका देयँ कुंज बिहारी।
प्यारी जू की प्यारी छवि एतिक प्यारी,
निज परछाईं लखि मोहें आपु प्यारी।
प्यारी बरसाने वारी एतिक प्यारी,
जाके पाछे पाछे डोलें ब्रह्म बनवारी।
मेरी ऐसी प्यारी प्यारी प्यारी सुकुमारी,
जापै वारी वारी जायें वारी बनवारी।
जय हो जय हो जय हो बरसाने वारी प्यारी,
तोपै वारी वारी बरसाने वारी प्यारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

प्यारी भजें पिउ पिउ, पिउ भजें प्यारी,
बड़ भागी ब्रजनारी, भजें पिउ प्यारी।
प्यारी बोले जय हो जय हो जय हो जय हो प्यारी,
बनवारी बोलें जय हो जय हो जय हो प्यारी।
प्यारी कहें पिउ भजो, पिउ कहें प्यारी,
मेरी सब मानो भजो, नित पिय प्यारी।
वेद कह पूर्णब्रह्म कुंज बिहारी,
मैं तो कहूँ राधे बिनु आधे बनवारी।
मेरी प्यारी जू की जब चले असवारी,
पाछे चलि जय हो जय हो बोलें बनवारी।
आगे आगे चलें बरसाने वारी प्यारी,
वाके पाछे सखि वाके पाछे बनवारी।
जहँ जहँ चरण कमल धरें प्यारी,
तहँ तहँ चूमत चलें बनवारी।
सुमन सेज सोवें प्यारी सुकुमारी,
सखि चापें पग मलें हाथ बनवारी।
रास करन चह जब बनवारी,
मुकुट उतारि धरत पग प्यारी।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

प्यारी जू के महल की जाऊँ बलिहारी,
देत बुहारी जहँ बस बनवारी।
जापै सब जग वारी सोइ बनवारी,
जापै सोऊ बनवारी वारी सोई प्यारी।
पिया को बुरा न कहो बुरा मानें प्यारी,
सोई बनवारी जोई भानुदुलारी।
मेरी बरसाने वारी अस सुकुमारी,
चापत चरन सभय बनवारी।
जेहि छवि लखि विधि हरि हर वारी,
सोउ 'कृपालु' हरि लखि बलिहारी॥

राधे राधे राधे राधे प्रेम अगाधे,
ऐसी कृपा करु राधे प्रेम अगाधे।
तोहि कभूँ भूलूँ नहिं पल छिन आधे।
भुक्ति ना दे मुक्ति ना दे बैकुण्ठ ना दे,
देना है तो मेरी राधे प्रेम सुधा दे।
तेरे खरे खरे जन अगनित राधे,
उन खरों सँग मुझ खोटे को चला दे।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तू तो बिनु कारण कृपा करे राधे,
या ते बिनु साधन साध्य दिला दे।

50

(दीनानाथ मोहिं काहे बिसारे)

पिय प्यारी वृषभानुदुलारी,
सोइ मम स्वामिनि श्यामा प्यारी।
महल टहल दे दो सुकुमारी,
पुनि पुनि दैहौं महल बुहारी।
क्रन्दन सुनत नाहिं बनवारी,
तुम ही सुनु बरसाने वारी।
तुम्हरी बिनु अनुकम्पा प्यारी,
शरण गह्यो कहु कौन तिहारी।
तुम करुणामयी मातु हमारी,
जगहुँ निठुर नहिं हो महतारी।
तुम 'कृपालु' सरकार हमारी,
करहु कृपा अब हमरिहिं बारी॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

51

(प्यारी जू के प्यारे हैं ...)

प्यारी प्यारी प्यारी हैं बरसाने वारी हैं।
मेरी सरकार, मेरी रखवार,
मेरी सुकुमार, मेरी आधार।
प्यारी भोरी भारी हैं, बनवारी वारी हैं।
मेरी सरकार----
वेणी घुँघुरारी है, चूनरि वारी हैं।
मेरी सरकार----
बंदिनी वारी हैं, शीशफूल वारी हैं।
मेरी सरकार----
चितवनि रसवारी है, मुसकनि बलिहारी है।
मेरी सरकार----
श्रुति कुंडल वारी हैं, माथे बिंदी वारी हैं।
मेरी सरकार----
नासा नथवारी हैं, बेसर वारी हैं।
मेरी सरकार----
गर दुलरी वारी हैं, गर तिलरी वारी हैं।
मेरी सरकार----

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

उर कंचुकि वारी हैं, कटि किंकिनि वारी हैं।
मेरी सरकार----
मणि कंकन वारी हैं, कर चूरिन वारी हैं।
मेरी सरकार----
कर मेहँदी वारी हैं, मुँदरिन वारी हैं।
मेरी सरकार----
पग पायल वारी हैं, बिछुवनि वारी हैं।
मेरी सरकार----
ब्रजरस वारी हैं, पिय वारी वारी हैं।
मेरी सरकार----
सखि प्राण प्यारी हैं, मो 'कृपालु' प्यारी हैं।
मेरी सरकार----

52

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

(प्यारी जू के प्यारे हैं ...)

बरसाने वारी हैं अति भोरी भारी हैं।
मेरी प्यारी मेरी प्यारी ----
ब्रजरस वारी हैं बनवारी वारी हैं।
मेरी प्यारी मेरी प्यारी ----

प्यारी अस प्यारी हैं प्यारी जू भी वारी हैं।
मेरी प्यारी मेरी प्यारी ----

53

(राधेरानी की जय ...)

प्यारी प्यारी की जय, सुकुमारी की जय।
वृषभानुदुलारी की जय जय जय।
गहवरवन वारी की जय जय जय।
बरसाने वारी की जय जय जय।
बोलो ब्रजरस वारी की जय जय जय।
अति भोरी भारी की जय जय जय।
सिर चूनरि वारी की जय जय जय।
नथ बेसर वारी की जय जय जय।
मृदु मुसुकनि वारी की जय जय जय।
श्रुति कुण्डल वारी की जय जय जय।
उर कंचुकि वारी की जय जय जय।
नीलाम्बर वारी की जय जय जय।
कटि किंकिनि वारी की जय जय जय।
पग पायल वारी की जय जय जय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

बिछुवनि छवि वारी की जय जय जय।
प्राणप्यारी 'कृपालु' की जय जय जय॥

54

(राधेरानी की जय ...)

मेरी राधे रानी महरानी।
ठाकुरहूँ की जो ठकुरानी।
ब्रज रस खानी अवढर दानी।
वृन्दावन जिनकी रजधानी।
मैं बलि बलि जाउँ स्वामिनि मानी।
नहलाउँ नित निज कर भरि पानी।
जाके डर डरपत साराँगपानी।
करें बानी भवानी अगवानी।
विहरौं स्वामिनि सँग मनमानी।
'कृपालु' भी जिनकी दीवानी॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

55

(नंदनंदा सुखकंदा ...)

भोरी भारी सुकुमारी मेरी राधा प्यारी,
करें मनुहारी जाकी कुंजबिहारी।
वारी वारी छवि प्यारी छैल बिहारी,
सँग ब्रजनारी वारी महलन वारी।

राधेरानी ठकुरानी प्रेम सुख दानी,
करें मनमानी वृन्दावन रजधानी।
राधेरानी हम जानी, दीनन को दानी,
कमला भवानी जाकी करें अगवानी।
राधारानी महरानी, रूप रस खानी,
चाकरी करें 'कृपालु' सारँगपानी॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

नंदनंदा, सुखकंदा, वृन्दावन चंदा,
आनंदकंदा सोई राधे गोविंदा।

56

(कृष्णा गोविन्द गोविन्द...)

भज ब्रजरस खानी राधारानी।
भज ब्रज ठकुरानी राधारानी।
भज प्रेम सुधा रस सुखदानी।
भज महरानिहुँ की महरानी।
विहरत वृन्दावन रजधानी।
जाकर चाकर सारँग पानी।
भज पतितन हित अवढर दानी।
जेहि ब्रह्म श्याम स्वामिनि मानी।
जाकर कर गिरिधर अगवानी।
जेहि किंकरि उमा रमा बानी।
मम स्वामिनि राधा रानी अब जानी।
राधा रानी ही हैं मेरी गति अब मानी।
बिनु हेतु सनेहिनि राधा रानी।
हैं अधम उधारिनि राधा रानी।
हैं पतितपावनी, राधा रानी।
हैं मम 'कृपालु' इक राधा रानी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

57

मन करु सुमिरन, राधे रानी के चरन।
मन करु सुमिरन, राधे अरुन चरन।
श्यामा प्यारी के चरन।
अलबेली के चरन।
राधे रानी के चरन, नव पल्लव वरन।
राधे रानी के चरन, सत् चित् सुखघन।
राधे रानी के चरन, दस चन्द्र नखन।
राधे रानी के चरन, सम उनके चरन।
राधे रानी के चरन, कोमल माखन।
राधे रानी के चरन, चुवे ब्रजरस घन।
राधे रानी के चरन, सुबरन सों वरन।
राधे रानी के चरन, सुखदानी के चरन।
राधे रानी के चरन, रसखानी के चरन।
राधे रानी के चरन, वरदानी के चरन।
राधे रानी के चरन, नग दुति बिछुवन।
राधे रानी बिछुवन, बाजे छनन छनन।
राधे रानी के चरन, सोहें पैंजनियन।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

राधे रानी के चरन, गति गज लजवन।
राधे रानी के चरन, मनहर हर मन।
राधे रानी के चरन, मुक्ति तारन तरन।
राधे रानी के चरन, पतितन पावन।
राधे रानी के चरन, अशरन को शरन।
राधे रानी के चरन, निर्धन को है धन।
राधे रानी के चरन, गुन गावो क्षन क्षन।
राधे रानी के चरन, ध्यावें पावें प्रेम धन।
राधे रानी के चरन, गुन करो कीर्तन।
राधे रानी के चरन, करु कोटिन नमन।
राधे रानी के चरन, चहु गहु गोपी जन।
राधे रानी के चरन, पावें कृपा गोपीजन।
राधे रानी के चरन, जीवन रसिकन।
राधे रानी के चरन, ब्रज बनितनि धन।
राधे रानी के चरन, नहिँ सुलभ ऋचन।
राधे रानी के चरन, नहिं पावें ज्ञानी जन।
राधे रानी के चरन, सोई मेरो प्राणधन।
राधे रानी के चरन, मम स्वामिनी चरन।
राधे रानी के चरन, मेरी लागी है लगन।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधे रानी के चरन, बसे मेरे नयनन।
राधे रानी के चरन, ढाँपि राखौं पलकन।
राधे रानी के चरन, मेरो अवलम्बन।
राधे रानी के चरन, सेयें जायें तोरी बन।
राधे रानी के चरन, वारौं द्वारिका सुखन।
राधे रानी के चरन, वारौं मथुरा सुखन।
राधे रानी के चरन, लिपटाऊँ रज बन।
राधे रानी के चरन, कब होइहौं रज कन।
राधे रानी के चरन, प्रकटत विष्णुगन।
राधे रानी के चरन, चापैं कमला करन।
राधे रानी के चरन, सेवें चतुरानन।
राधे रानी के चरन, सेवें पंचानन।
राधे रानी के चरन, सेवें षट आनन।
राधे रानी के चरन, सेवें सप्तर्षि जन।
राधे रानी के चरन, सेवें अष्टवसु जन।
राधे रानी के चरन, सेवें नव ग्रह जन।
राधे रानी के चरन, सेवें दिग्पाल जन।
राधे रानी के चरन, सेवें सब रुद्र जन।
राधे रानी के चरन, लोटें नँदनंदन।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधे रानी के चरन, चह नँदनंदन।
राधे रानी के चरन, ध्यावें मदनमोहन।
राधे रानी के चरन, पोछें पिय पलकन।
राधे रानी के चरन, हरि मुकुट धरन।
राधे रानी के चरन, हरि मुख दर्पन।
राधे रानी के चरन, हरि करें चुम्बन।
राधे रानी के चरन, हरि धोवें अँसुवन।
राधे रानी के चरन, वारौं यशुदा ललन।
राधे रानी के चरन, चुवे रस मादन।
राधे रानी के चरन, हैं 'कृपालु' के दृगन॥

58

(ठाकुर युगल किशोर...)

बलिहारी वृषभानुदुलारी, जाकर चाकर बनवारी।
विधि हरि हर आराध्य मुरारी, तिनहूँ आराध्या सुकुमारी।
भूलि जात प्यारी चितवनि लखि, हरि निज भगवत्ता सारी।।
लखि वृषभानु किशोरी गोरी, लाजत हरि लखि निज तनु को री।
प्यारी जू के चरण पलोटत, कहत मगन मन बलिहारी।।
इत मनमोहन कुंजबिहारी, उत मनमोहिनि नथवारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

त्रिभुवन मोहन कुंज बिहारी, तिन मन मोहिनि नथवारी।।
अगनित रूप धरे नँदनंदन, पार न पायो अस प्यारी।
पाव रास रस तबहिँ बिहारी, कृपा करति जब सुकुमारी।।
पिय उर लखि प्रतिबिंब आपुनो, मान करति भोरी भारी।
रिझवत निज स्वामिनि श्यामा को, बनि लिलिहारी मनिहारी।।
मुकुट उतारि धरत पग गिरिधर, धनि धनि बरसाने वारी।
सेवा करन हेतु श्यामा की, नारी बनि गये मदनारी।।
सखिन परत पग, झरत दृगन पिय, मान करति जब जब प्यारी।
पावत नाहिं प्रवेश महल महँ, सखिन करति पहरेदारी।।
लखत बनत वा झाँकी पिय की, जनु मूरति पत्थर वारी।
श्यामा श्याम श्याम हैं श्यामा, भेद मान जड़ संसारी।।
देही देह भेद नहिँ दोउन, मरम जान कोउ अधिकारी।
गौर श्याम सौंदर्य मधुरिमा, पियति समर्था रति वारी।।
दुहुँन मधुरिमा दुहुँन मधुरतर, नित पिय नव नव रस वारी।
करहु 'कृपालु' कृपा हम सब पर, हम मायावश तनुधारी।।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

प्यारी प्यारी भोरी भारी, बरसाने वारी प्यारी।
प्यारी जू की महिमा न्यारी, जाने कछु कछु बनवारी।

अति सुकुमारी भानुदुलारी, नथबेसर वारी प्यारी।
जापर विधि हरि हर वारी सोउ, बरसाने वारी प्यारी।
जाके रोम रोम ब्रज रस बह, पियत नित्य छकि बनवारी।
पाछे चलि जय हो जय हो कह, चल अब प्यारी असवारी।
लखि नहिं सक प्यारिहिं छवि प्रियतम, प्यारी छवि एतिक प्यारी।

59

(ठाकुर युगल किशोर...)

मम ठकुरानी अवढरदानी, राधे रानी स्वामिनी।
छवि अभिरामिनि सँग ब्रजभामिनि, लजवति गतिगजगामिनी।
ब्रह्माणी रुद्राणी वाणी, सेवत बनि अनुरागिनी।
जग मोहन मोहन मन मोहिनि, निज मन मोहिनि भामिनी।
भोरी भोरी गोरी गोरी, तनु दमकति जनु दामिनी।
कह 'कृपालु' घन जनु मनमोहन, स्वामिनि हैं जनु दामिनी।।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

60

मेरी राधे जू, मेरी राधे जू।
मेरी राधे मेरी राधे मेरी राधे मेरी, मेरी राधे जू.....।
राधे बिनु पूर्णब्रह्म श्याम आधे जू, मेरी राधे जू.....।
राधे राधे गावें वंशी स्वर साधे जू, मेरी राधे जू.....।
राधे बिनु कल नहिं पल आधे जू, मेरी राधे जू.....।

मेरे लाल जू मेरी लाली जू।
दोउ रुचि राखें लाली बनमाली जू, मेरे लाल जू.....।

मेरी प्यारी जू, मेरी प्यारी जू।
मेरी प्यारी मेरी प्यारी मेरी प्यारी मेरी, मेरी प्यारी जू.....।
प्यारी जू की हा हा खावें बनवारी जू। मेरी प्यारी जू ।

मेरी श्यामा जू, मेरी श्यामा जू।
मेरी श्यामा मेरी श्यामा मेरी श्यामा मेरी, मेरी श्यामा जू.....।
श्यामा सँग अगनित ब्रजभामा जू, मेरी श्यामा जू.....।
हौं हुँ 'कृपालु' पावूँ, सेवा श्यामा जू, मेरी श्यामा जू.....।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

61

(मेरी राधारमण सो यारी...)

मेरी स्वामिनि श्यामा प्यारी, यह जीवन उन पर वारी।
मेरी स्वामिनि अस रस वारी, लखि रसिक शिरोमणि वारी।
मेरी अस वृषभानुदुलारी, रह चाकर बनि बनवारी।
मेरी प्यारिहिं लखत बिहारी, भूलत भगवत्ता सारी।
मेरी स्वामिनि लखि अस वारी,हरि कह जय जय बलिहारी।
मेरी अस चितवनि रस प्यारी, लखि गिरत धरणि गिरिधारी।
मेरी अस मुसकनि छवि प्यारी, लखि लखत रहत बनवारी।
मेरी अस छवि रस सुकुमारी, लखि हरि निज सुरति बिसारी।
मेरी अस बरसाने वारी, जेहि लगि हरि बन गए नारी।
मेरी अस नथ बेसर वारी, हरि महलन देत बुहारी।
मेरी अस प्यारी सुकुमारी, दाता हरि बन्यो भिखारी।
मेरी अस मृदु बोलनि प्यारी, लग हरिहिं मुरलि धुनि खारी।
मेरी अस 'कृपालु' सुकुमारी, टुक क्रन्दन पै बलिहारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

62

(मेरो प्रियतम कुंज बिहारी...)

मेरी श्री वृषभानुदुलारी, जाकर चाकर बनवारी।
मेरी श्री वृषभानुदुलारी, मेरी प्रानन प्यारी प्यारी।
मेरी श्री वृषभानुदुलारी, भोरी बरसाने वारी।
मेरी श्री वृषभानुदुलारी, सिर चूनरि पर बलिहारी।
मेरी श्री वृषभानुदुलारी, चितवनि रस जान मुरारी।
मेरी श्री वृषभानुदुलारी, है नीलाम्बर छवि न्यारी।
मेरी श्री वृषभानुदुलारी, किंकिनि धुनि मुनि मन हारी।
मेरी श्री वृषभानुदुलारी, पग पायल मृदु झनकारी।
मेरी श्री वृषभानुदुलारी, गति हंस लजावनि हारी।
मेरी श्री वृषभानुदुलारी, स्वामिनि 'कृपालु' बलिहारी।

Copyright
RADHA GOVIND SAMITI

मेरी श्री बरसानेवारी, मेरी भोरी भारी प्यारी।
मेरी प्यारी अति सुकुमारी, मेरी ब्रजरसवारी प्यारी।
मेरी ब्रजरस बेचनवारी, मेरी महाभाव अवतारी।
मेरी प्यारी पर पिय वारी, मेरी प्यारी सम इक प्यारी।

मेरी चिदानंद तनु वारी, मेरी कीर्तिकुमारी प्यारी।
मेरी प्रेमरूपरस वारी, मेरी गति मति रति हैं प्यारी।
मेरी नित नव नव रसवारी, मेरी अति कृपालु हैं प्यारी।

63

(मेरो प्रियतम कुंज बिहारी...)

रँगीली महलन वारी, सोइ मम वृषभानुदुलारी ।
रँगीली महलन वारी, सोई बरसाने वारी।
रँगीली महलन वारी, सोई नथबेसर वारी।
रँगीली महलन वारी, सोई नीलाम्बर वारी।
रँगीली महलन वारी, जेहि सँग लख लख ब्रजनारी।
रँगीली महलन वारी, बनवारी जा पर वारी।
रँगीली महलन वारी, जेहि पद रज चह बनवारी।
रँगीली महलन वारी, जेहि पग चापत बनवारी।
रँगीली महलन वारी, जेहि हौं 'कृपालु' उरधारी॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

64

(मेरे प्रानन प्यारे आजा...)

मेरी प्रानन प्यारी आजा, मेरी भानुदुलारी आजा।
मेरी प्रानन प्यारी आजा, टुक प्रेम पियूष पिलाजा।
मेरी प्रानन प्यारी आजा, नैनन की तपन बुझाजा।
मेरी प्यारी प्यारी आजा, तू 'कृपालु' अति आजा।

65

(मेरे प्रानन प्यारे आजा...)

जय वृंदाविपिन बिहारी, जय श्री बरसाने वारी।
वारी वारी कुंजबिहारी, वारी वारी भानुदुलारी।
मेरो धन नँदनदंन बनवारी, तन मन धन उन पर वारी।
मेरी स्वामिनि भानुदुलारी, प्यारी बरसाने वारी।
मैं तो उन प्यारी पर वारी, जा पर वारी बनवारी।
जय हो, जय हो, जय हो, जय हो, जय हो प्यारी।
जय हो, जय हो, जय 'कृपालु' बनवारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधे राधे राधे राधे राधे राधे

66

(मेरे प्रानन प्यारे आजा...)

राधे राधे प्रेम अगाधे, राधे राधे प्रेम अगाधे।
राधे राधे प्रेम अगाधे, राधे प्रेम सुधा दे राधे।
राधे राधे प्रेम अगाधे, राधे झलक दिखा दे राधे।
राधे राधे प्रेम अगाधे, राधे भूलें न तोहिं पल आधे।
राधे राधे प्रेम अगाधे, राधे अविरल भक्ति दिला दे।
राधे राधे प्रेम अगाधे, राधे गोपी प्रेम दिला दे।
राधे राधे प्रेम अगाधे, राधे मोहिं ब्रजवास दिला दे।
राधे राधे प्रेम अगाधे, राधे निज ब्रज धूरि बना दे।
राधे राधे प्रेम अगाधे, राधे श्याम मिला दे राधे।
राधे राधे प्रेम अगाधे, राधे दासी बना दे राधे।
राधे राधे प्रेम अगाधे, राधे लगन लगा दे राधे।
राधे राधे प्रेम अगाधे, राधे रास दिखा दे राधे।
राधे राधे प्रेम अगाधे, राधे अगला बना दे राधे।
राधे राधे प्रेम अगाधे, राधे व्याकुलता दे राधे।
राधे राधे प्रेम अगाधे, राधे प्यास बढ़ा दे राधे।
राधे राधे प्रेम अगाधे, राधे हिय वेदना दे राधे।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधे राधे प्रेम अगाधे, राधे प्रेम सिखा दे राधे।
राधे राधे प्रेम अगाधे, राधे माया भगा दे राधे।
राधे राधे प्रेम अगाधे, राधे उर विरहा दे राधे।
राधे राधे प्रेम अगाधे, राधे प्रेमसुधा दे राधे।
राधे राधे प्रेम अगाधे, राधे है 'कृपालु' तू राधे।

67

मैं तो राधे राधे गाऊँ कालिंदी तट पे,
वो तो भाजो चलो आवे रोतो वंशी वट पे।
वो तो नन्द को तो रोतो धोतो आवे तट पे।
वो तो सोतो भाजे आवै, रोतो वंशीवट पे
मैं तो बावरी ह्वै नाचूँगी कालिंदी तट पे।
मैं तो दृग बाण मारुँ दृग नटखट के।
मैं तो वारी जाऊँ प्यारी जू के नीले पट पे।
प्यारी मुकुट में मोतियन लर लटके।
मेरी प्यारी जू की प्यारी भौहें कैसी मटकें।
मैं तो वारी जाऊँ प्यारी जू के दृग पट पे।
मेरी प्यारी जू के बड़े ही रसीले लटके।
मैं तो वारी प्यारी कारी घुँघरारी लट पे।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मेरी प्यारी जू की किंकिनि कटितट पे।
राधे रानी के चरन मेरे मन अटके।
मैं तो राधे की कहाऊँ राधे राधे रट के।
मैं तो प्यारे को चिढ़ाऊँ राधे राधे रट के।
मैं तो वारी जाऊँ पिय प्यारी खटपट पे।
मेरी प्यारी न भुलावें कभु भूले भटके।
लखि मानिनि भृकुटि न पास फटके।
मेरी प्यारी पग पियहुँ मुकुट पटके।
मैं तो प्यारी के महल जाऊँ बेखटके।
पिय प्यारी बनि पाछे आये मुँह लटके।
मैं तो प्यारी नहलाऊँ जमुना तट पै।
लखि लखि नटखट मुँह लार टपके।
मैं तो राधे को बिठाऊँ बिच दृग पट के।
मैं तो राधे पग चापूँ पिय मुँह लटके।
मैं तो प्यारी जू को पक्ष लउँ बेखटके।
मैं तो प्यारी जू की जय बोलूँ पनघट पे।
मैं तो अकड़ के जाउँ आगे नटखट के।
मैं तो गारी दउँ 'दारी के' जो मोते अटके।
नेकु लोक लाज नहिं उर नटखट के।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

वो तो निलज भजोइ आवे वंशीवट पे।
मेरी प्यारी जू न प्यारे जू के पास फटकें।
प्यारी पग पिय आँसू टप टप टपके।
मैं तो वारी जाउँ रोतो लखि नटखट पे।
प्यारी गौर रंग लखि पिय मुख लटके।
मेरो रोम रोम राधे नाम रस टपके।
दोउ एक हैं 'कृपालु' मन जनि भटके।

68

(मैं तो राधे राधे गाऊँ...)

जय जय राधे राधे राधे, जय जय राधे राधे राधे,
जय बरसाने वारी राधे, जय प्यारी नथवारी राधे।
जोइ बरसाने वारी राधे, सोई महलन वारी राधे,
सोइ मम प्रानन प्यारी राधे, सोइ मम भोरी भारी राधे।
जोइ नथ बेसर वारी राधे, जोइ नीलाम्बर वारी राधे,
सोइ वृन्दावन वारी राधे, सोइ मम 'कृपालु' प्यारी राधे।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

69

प्यारी प्यारी भोरी भारी सुकुमारी प्यारी राधे,
रस बरसाने वारी बरसाने वारी राधे।
प्यारी प्यारी भोरी भारी सुकुमारी प्यारी राधे,
मैं तो वारी वारी ऊँचे महलन वारी राधे।
प्यारी प्यारी भोरी भारी सुकुमारी प्यारी राधे,
नथवारी वृषभानुदुलारी प्यारी राधे।
प्यारी प्यारी भोरी भारी सुकुमारी प्यारी राधे,
बलिहारी बलिहारी बलिहारी प्यारी राधे।
प्यारी प्यारी भोरी भारी सुकुमारी प्यारी राधे,
बनवारी बोलें जय हो जय 'कृपालु' प्यारी राधे।

70

(ओरे मोरे मन...)

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मोरी भोरी सी किशोरी, तनु गोरी, रसबोरी,
चोरी चोरी चित चोरी चितचोरहुँ की।
रसिक रँगीली, गुन गर्वीली,
छैल छबीली श्री राधे।

रूप उजागरि, सब गुन आगरि,
रति रस नागरि श्री राधे।
मोरी सोइ स्वामिनि, जोइ स्वामिनि,
रसिकन के सिरमोरहुँ की।
प्रीतम प्यारी भानुदुलारी,
भोरी भारी श्री राधे।
गति अलबेली, मति अलबेली,
रति अलबेली श्री राधे।
सहि न सकत रस रसिक शिरोमणि,
चितवनि चितवनि-कोरहुँ की।
बेसर वारी सेंदुर वारी,
चूनरि वारी श्री राधे।
गति गज गामिनि, छवि अभिरामिनि,
सोइ मम स्वामिनि श्री राधे।
चलत 'कृपालु' न सन्मुख एकहुँ
बरजोरी बरजोरहुँ की।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

71

(राधे अलबेली सरकार...)

राधे अधाधुंध दरबार रटे जा राधे-राधे।
जब हरि शूकर बनि आयो, पृथिवी पताल ते लायो,
कब कीन्यो रास विहार? रटे जा राधे-राधे।
जब हरि नृसिंह बनि आयो, शंकरहूँ लखि डरपायो,
कब भईं गोपिन बलिहार? रटे जा राधे-राधे।
जब हरि कच्छप बनि आयो, जलनिधि मंथन करवायो,
कब बजी मुरलि रिझवार? रटे जा राधे-राधे।
जब हरि वामन बनि आयो, बलि बाँधि पताल पठायो,
कब नाच्यो सँग ब्रजनार? रटे जा राधे-राधे।
जब हरि तनु मीन बनायो, वेदन उद्धार करायो,
कब चीर हर्‌यो ब्रजनार? रटे जा राधे-राधे।
जब हरि राघव बनि आयो, शूर्पणखहिँ नाक कटायो,
कब किये करोरन नार? रटे जा राधे-राधे।
जब राधा ब्रज में आयीं, अरु हरि ने लइ शरणाई,
तब भये रसिक सरदार, रटे जा राधे-राधे।
जो राधा नाम न होतो, तो कृष्ण कृष्ण नहिं होतो,
अस मम 'कृपालु' सरकार, रटे जा राधे-राधे।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

72

राधे राधे राधे श्री राधे।
बरसाने बसा दे श्री राधे।
राधे प्रेम अगाधे श्री राधे।
राधे रूप अगाधे श्री राधे।
निज रूप जना दे श्री राधे।
टुक झलक दिखा दे श्री राधे।
टुक रास दिखा दे श्री राधे।
मुसकानि दिखा दे श्री राधे।
जूठा पान खिला दे श्री राधे।
मृदु बोल सुना दे श्री राधे।
मोहिं प्रेम दिला दे श्री राधे।
मुक्ति ना दे राधे श्री राधे।
मेरी माया भगा दे श्री राधे।
मोहिं भक्ति परा दे श्री राधे।
रति रस में डुबा दे श्री राधे।
मेरी प्यास बढ़ा दे श्री राधे।
रस का चस्का लगा दे श्री राधे।
रस बिन्दु पिला दे श्री राधे।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ब्रजरसहिं डुबा दे श्री राधे।
ब्रज रेनु बना दे श्री राधे।
ब्रज धेनु बना दे श्री राधे।
निज वेनु बना दे श्री राधे।
कर मेहँदी बना दे श्री राधे।
पग जावक बना दे श्री राधे।
मोहिं पायल बना दे श्री राधे।
मोहिं बिछुआ बना दे श्री राधे।
पदत्रान बना दे श्री राधे।
मोहिं पी ते मिला दे श्री राधे।
पिय तुम बिनु आधे श्री राधे।
विरहाग लगा दे श्री राधे।
मेरे 'मैं' को जला दे श्री राधे।
उर में वेदना दे श्री राधे।
उर लालसा बढ़ा दे श्री राधे।
मेरा दास्य दिला दे श्री राधे।
सेवा वासना दे श्री राधे।
तू ही माँ, दे या ना दे श्री राधे।
'मेरी' कह के बुला दे श्री राधे।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मेरी तू ही जना दे श्री राधे।
माँगूँगा चाहे ना दे श्री राधे।
ना दे तो भी बता दे श्री राधे।
ना दे सिर ही हिला दे श्री राधे।
मोहिं दीन बना दे श्री राधे।
मोहिं दासी बना दे श्री राधे।
मेरी लगन लगा दे श्री राधे।
मेरी बिगरी बना दे श्री राधे।
मैं हूँ खोटा चला दे श्री राधे।
जैसा हूँ निभा दे श्री राधे।
मैं हूँ सोया जगा दे श्री राधे।
मोहिं यूँ ना भुला दे श्री राधे।
अनुकम्पा लुटा दे श्री राधे।
निज विरद निभा दे श्री राधे।
बिनु हेतु कृपा दे श्री राधे।
बिनु मोल दया दे श्री राधे।
तेरा सब तोहिं का दें श्री राधे।
तू 'कृपालु' कृपा दे श्री राधे।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

73

रटें राधे राधे गिरिधारी रे, ऐसी मेरी राधे,
ऐसी मेरी राधे, ऐसी मेरी राधे बरसाने वारी।
हा हा खायँ जायँ बलिहारी रे, ऐसी मेरी राधे,
ऐसी मेरी राधे, ऐसी मेरी राधे बरसाने वारी।
रटें प्यारे प्यारे राधा प्यारी रे, ऐसे मेरे प्यारे,
ऐसे मेरे प्यारे, ऐसे मेरे प्यारे लीला बिहारी।
रटें प्यारी प्यारे प्यारे प्यारी रे ऐसे प्यारे प्यारी,
ऐसे प्यारे प्यारी, ऐसे हैं 'कृपालु' प्यारे प्यारी।

74

(चिंतय चित्त...)

राधा प्रेम अगाधा स्वामिनि,
ह्लादिनि शक्ति रूपिणी भामिनि।
गौर बरन तनु जनु दुति दामिनि,
हंस लजावनि गति गजगामिनि।
संग करोरन ब्रज की भामिनि,
रास करत तिन सँग नित यामिनि।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

छवि लजाति लखि छवि अभिरामिनि,
नहिँ पावत रस कमला कामिनि।
लखति द्वारिका रस ही कामिनि,
युगल विहार लखति निष्कामिनि।
जोइ 'कृपालु' जग स्वामिहुँ स्वामिनि,
सोइ मम स्वामिनि राधा नामिनि।

75

(राधा मेरी गति मति)

राधा मेरी ठकुरानी, वृन्दावन रजधानी।
राधा मेरी ठकुरानी, मैं तो राधा की दीवानी।
राधा मेरी रसखानी, मैं तो राधा की दीवानी।
राधा ब्रजरस खानी, मैं तो राधा की दीवानी।
राधा मेरी ठकुरानी, ब्रह्म करें अगवानी।
राधा मेरी ठकुरानी, हा हा खायँ चक्रपानी।
राधा मेरी ठकुरानी, वृन्दावन महरानी।
राधा मेरी ठकुरानी, अपनावो दासी मानी।
राधा मेरी ठकुरानी, रसिक कृपा ते जानी।
राधा मेरी ठकुरानी, त्यागी लोक वेद कानी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधा मेरी ठकुरानी, ध्यावें योगी ज्ञानी ध्यानी।
राधा मेरी ठकुरानी, पाँचों मुक्ति भरें पानी।
राधा मेरी ठकुरानी, भोरे कहें बौरानी।
राधा मेरी ठकुरानी, सेवें उमा रमा वानी।
राधा मेरी ठकुरानी, मुक्तिदानीहूँ को दानी।
राधा मेरी ठकुरानी, सेवें शंभु शुक ज्ञानी।
राधा मेरी ठकुरानी, ज्ञानी विज्ञानी अज्ञानी।
राधा मेरी ठकुरानी, ऊँचे महलन रानी।
राधा मेरी ठकुरानी, नेति कहे वेद वानी।
राधा मेरी ठकुरानी, स्वामिनि 'कृपालु' मानी।

राधा मेरी गति मति, राधा पद मेरी रति।
राधा पति मेरी गति, वारौं कोटि रति पति।

76

RADHA GOVIND SAMITI

राधे ठकुरानी राधे महरानी,
राधे रसदानी राधे ब्रजरानी।
वृन्दावन जाकी रजधानी,
जो प्रेम रूप रस की खानी।

जो ऐसी हैं अवढरदानी,
ब्रज बनचरि प्राण सखी मानी।
जाकी याचत सारँगपानी,
करु कृपा कोर राधे रानी।
कहि जयति जयति जय महरानी,
कर पूर्णब्रह्म हरि अगवानी।
मानिनि लखि श्री राधेरानी,
थर-थर काँपत सारँगपानी।
जाकी महिमा नहिं सक जानी,
धरि कोटिन तनु सारँगपानी।
जाको श्यामहुँ स्वामिनि मानी,
धर मुकुट चरण युग महरानी।
जा पद-रज संजीवनि मानी,
चह ललन पतन तनु धरि ज्ञानी।
जाकी दासी कमला, बानी,
चह चरण धूरि राधे रानी।
तप कर कठोर कमलारानी,
दर्शन हित श्री राधेरानी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जड़ लता पता तत्वज्ञानी,
बोलत राधे राधे बानी।
शुक पिक मयूर जा रजधानी,
लखि मोचत निज अँखियन पानी।
सद्गुरु अनुकम्पा अब जानी,
मम गति मति रति राधेरानी।
श्रुति कह कृपालु साराँगपानी,
पै अति 'कृपालु' राधेरानी।

77

श्री राधे श्री राधे, प्रेम अगाधे श्री राधे।
गति गज गामिनि श्री राधे, छवि अभिरामिनि श्री राधे।
तुम मम स्वामिनि श्री राधे, सँग ब्रजभामिनि श्री राधे।

78

RADHA GOVIND SAMITI

(गाइये, वृषभानु लली गुन)

श्री राधे राधे राधे राधे राधे राधे।
श्री राधे, गोरी गोरी भोरी भोरी राधे।

श्री राधे वृषभानुदुलारी राधे।
श्री राधे मम प्रानन प्यारी राधे।
श्री राधे मृदु मुसुकनि वारी राधे।
श्री राधे सिर चूनरि वारी राधे।
श्री राधे नथ बेसर वारी राधे।
श्री राधे नीलाम्बर वारी राधे।
श्री राधे कटि किंकिनि वारी राधे।
श्री राधे पग पायल वारी राधे।
श्री राधे चरनन बिछुवनि राधे।
श्री राधे गजगामिनि भामिनि राधे।
श्री राधे छवि अभिरामिनि राधे।
श्री राधे पिय मनभावनि राधे।
श्री राधे, प्रियतम चित्तचोरी राधे।
श्री राधे, पिय रति रसबोरी राधे।
श्री राधे जिन बिनु हरि आधे राधे।
श्री राधे रस रसिक रँगीली राधे।
श्री राधे गुन गुन गन निधि राधे।
श्री राधे तनु दुति दामिनि राधे।
श्री राधे सँग ब्रज भामिनि राधे।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

श्री राधे ब्रज ठकुरानी राधे।
श्री राधे वृन्दावन रानी राधे।
श्री राधे रसिकन सुखदानी राधे।
श्री राधे रस प्रेम अगाधे राधे।
श्री राधे बरसाने वारी राधे।
श्री राधे तोपै जाऊँ वारी वारी राधे।
श्री राधे सखि मनभावनि राधे।
श्री राधे दे महल टहल राधे।
श्री राधे रस बिन्दु पिला दे राधे।
श्री राधे, लखु हमरिहुँ ओरी राधे।
श्री राधे, जैसी भी हूँ हूँ तो तोरी राधे।
श्री राधे, मैं तो शरण हूँ तोरी राधे।
श्री राधे, तू ही गति मति मोरी राधे।
श्री राधे अपना ले 'कृपालु' राधे।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

79

(नित सेवा माँगूँ...)

श्री राधेरानी मेरी ठकुरानी, विराजें वृन्दावन रजधानी।
श्री राधेरानी अवढर दानी, लुटावें ब्रज रस मनमानी।

श्री राधेरानी ऐसी ठकुरानी, दिवानी जाकी ब्रह्माणीभवानी।
श्री राधेरानी ऐसी ठकुरानी, कोटि कमला नौकरानी।
श्री राधेरानी ऐसी ठकुरानी, पखारें पग बानी भवानी।
श्री राधेरानी ऐसी ठकुरानी, पखारें पग शिव औ शिवानी।
श्री राधेरानी ऐसी महरानी, बनायो शिवहूँ को शिवानी।
श्री राधेरानी ऐसी ठकुरानी, न गिन सक गुनगन ज्ञानी।
श्री राधेरानी ऐसी ठकुरानी, खरे ब्रज तरु बनि ज्ञानी।
श्री राधेरानी ऐसी ठकुरानी, हरिहुँ महिमा नहिं जानी।
श्री राधेरानी ऐसी ठकुरानी, पलोटें पग साँरगपानी।
श्री राधेरानी ऐसी ठकुरानी, करें ठाकुर अगवानी।
श्री राधेरानी ऐसी ठकुरानी, मनावें हरि दृग भरि पानी।
श्री राधेरानी ऐसी ठकुरानी, लखत सुधि मुरलि भुलानी।
श्री राधेरानी ऐसी ठकुरानी, हरिहुँ ठकुराई भुलानी।
श्री राधेरानी ऐसी ठकुरानी, नचायो हरि अँगुरिन पानी।
श्री राधेरानी ऐसी ठकुरानी, रुलायो जो रह सुख खानी।
श्री राधेरानी ऐसी महरानी, भिखारी बने त्रिभुवन दानी।
श्री राधेरानी ऐसी ठकुरानी, आत्मा निज हरि मानी।
श्री राधेरानी ऐसी ठकुरानी, हरिहुँ निज स्वामिनि मानी।
श्री राधेरानी ऐसी ठकुरानी, 'कृपालुहुँ' स्वामिनि मानी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

80

(गोविन्द जय जय...)

सदा सुहागिनि स्वामिनि मोरी,सदा प्रेमरस नखशिखबोरी।
सदा किशोरी श्यामा गोरी, सदा विहार करत ब्रज खोरी।
सदा छलिन सिरमोर छल्यो री, सदा सुभाय सरल अति भोरी।
सदा श्याम मुख चंद्र चकोरी, सदा सँभार प्रणत जन कोरी।
सदा मान ठानति मति भोरी, सदा 'कृपालु' श्याम चितचोरी॥

81

श्री राधे राधे राधे राधे राधे।
प्राणधन राधे राधे राधे।
जीवनधन राधे राधे राधे।
परमधन राधे राधे राधे।
धरो रे मन निशिदिन ध्यान राधे।
तजो न मन इक छिन ध्यान राधे।
सुमिरु मन निशिदिन, राधे राधे।
सोउ तो सुमिरहु रूप राधे।
जागु तो सुमिरहु रूप राधे।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

हँसहु तो सुमिरहु रूप राधे।
रोउ तो सुमिरहु रूप राधे।
चलहु तो सुमिरहु रूप राधे।
बैठु तो सुमिरहु रूप राधे।
मरहु तो सुमिरहु रूप राधे।
जीयहु तो सुमिरहु रूप राधे।
जीत में सुमिरहु रूप राधे।
हार में सुमिरहु रूप राधे।
लाभ में सुमिरहु रूप राधे।
हानि में सुमिरहु रूप राधे।
रटो रे मन छिन छिन नाम राधे।
जपहु नित श्वासहिं नाम राधे।
रुदन करु लै लै नाम राधे।
नाम महँ नित रह, नामी राधे।
बेर जनि करु भजु नाम राधे।
बड़ो राधे ते नाम राधे।
रटें नित हरिहूँ नाम राधे।
गाव मुरलिहिं पिय नाम राधे।
भजें पिय तहँ सुनि नाम राधे।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

दिव्य चिन्मय है नाम राधे।
भेद नहिं नामिहिं नाम राधे।
न भूलो पल आधे, राधे राधे।
जाहु पुनि पुनि तेहि धाम राधे।
गाउ गुन अगनित उनके राधे।
शरण गहु उनके जन के राधे।
राखु निज रुचि उन रुचि महँ राधे।
देखु जित उनहिंन रूप राधे।
न छोड़ूँ तोरा पाछा राधे राधे।
भरोसा तोरा भारी राधे राधे।
'कृपालुहुँ' सुधि लो अब तो राधे।

82

हमारी राधे रानी, रस की खानी।
COPYRIGHT
विराजें नित वृन्दावन रजधानी।
RADHA GOVIND SAMITI
हमारी ठकुरानी राधेरानी।
प्रेमरस खानी राधेरानी।
हमारी इक स्वामिनि राधेरानी।
श्यामहूँ स्वामिनि राधेरानी।

रूप की रानी राधेरानी।
मोहनहूँ मोहिनि राधेरानी।
चाल गजगामिनि राधेरानी।
देह दुति दामिनि राधेरानी।
सँग ब्रजभामिनि राधेरानी।
रास रस दानी राधेरानी।
चुनरि अरु लहँगा आसमानी।
करें अगवानी सारँग पानी।
पलोटैं पग मोहन स्वामिनि मानी।
न कोउ अस जग महँ अवढर दानी।
अकारण करुणा जिनकी बानी।
रही अनजानी अब मैं जानी।
न करो राधारानी आनाकानी।
बुलावो मोहिं बारेक अपनी मानी।
बनी पनिहारिनि भरिहौं पानी।
तजी हम लोकन वेदन कानी।
खरी रहौं लै कर पीकदानी।
करोरन कमला नौकरानी।
दिवानी जाकी निशिदिन कमला वानी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

चरण रज माँगें कमला वानी।
बने येहि रस लगि शिव शिवानी।
खरे कर मीजैं ब्रह्मज्ञानी।
मुकुट धरें पग पर चक्रपानी।
डरावें हरिहूँ को भौंह तानी।
कृपा ते रसिकन अब मैं जानी।
कृपालु नहिं कोउ जस राधारानी।
'कृपालु' की भी सुधि लो राधारानी।

83

हमारो धन राधा राधा राधा राधा राधा,
हमारो धन रा-धा राधा राधा।
प्राणधन रा-धा राधा राधा।
जीवन धन रा-धा राधा राधा।
श्री राधे जू की शरण न एकहुँ बाधा। हमारो धन....।
श्री राधे जू हैं छवि निधि प्रेम अगाधा। हमारो धन....।
श्री राधा बिनु चैन न पल छिन आधा। हमारो धन....।
श्री राधा लगि योग समाधि न साधा। हमारो धन....।
करुण क्रन्दन पथ सीधा सादा। हमारो धन....।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

प्रेम पथ भुक्ति मुक्ति दोउ बाधा। हमारो धन....।
श्रुतिन को सार तत्त्व हैं राधा। हमारो धन....।
छुपायो शुक सार भागवत राधा। हमारो धन....।
सच्चिदानंद कंद हैं राधा। हमारो धन....।
ह्लादिनी सार सार हैं राधा। हमारो धन....।
भाव मादन रूपा हैं राधा। हमारो धन....।
कृष्णहूँ चित कर्षण कर राधा। हमारो धन....।
श्री राधे जू को रूपध्यान उर साधा। हमारो धन....।
हमारे रोम रोम में राधा। हमारो धन....।
कृष्ण भाजत ऐहैं भजु राधा। हमारो धन....।
श्री राधेजू को भाये भोला भाला सीधा सादा।हमारो धन....।
श्री राधा भजु करु न नाम अपराधा। हमारो धन राधा..।
आत्मा परमात्मा की राधा। हमारो धन....।
ब्रह्म हैं पद नखमणि दुति राधा। हमारो धन....।
श्री राधा राधा राधा राधा हरि अवराधा। हमारो धन....।
मुरलि महँ गावत हरि गुन राधा। हमारो धन....।
श्री राधावर भजत नाम सुनि राधा। हमारो धन....।
श्री राधा बिनु ब्रह्म श्याम रस आधा। हमारो धन....।
श्री राधा जू हैं माधव माधव राधा। हमारो धन....।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कहत 'रा' मुर्छित हरि कह ना 'धा'। हमारो धन....।
श्री राधा तजि भजत श्याम अपराधा। हमारो धन....।
कृष्ण कहु पाछे प्रथम कहु राधा। हमारो धन....।
कृष्ण को रसिक बनायो राधा। हमारो धन....।
लखत रह सभय श्याम भौं राधा। हमारो धन....।
प्रिया हित निरतत धिर किट धा धा। हमारो धन....।
कृष्ण को नचवति अँगुरिन राधा। हमारो धन....।
न पायो पार हरिहुँ सोइ राधा। हमारो धन....।
कोटि कमला किंकरि अस राधा। हमारो धन....।
'कृपालु' धन नाम रूप गुण राधा। हमारो धन....।

84

(राधे राधे राधे श्री राधे..)

अस मेरो श्यामा श्याम धाम,
जहँ विहरत श्यामा संग श्याम।
अस मेरो श्यामा श्याम धाम,
जहँ गावत साधक युगल नाम।
अस मेरो श्यामा श्याम धाम,
जेहि लखि लाजत बैकुण्ठ धाम।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

अस मेरो श्यामा श्याम धाम,
जहँ ब्रजरस बरसत आठु याम।
अस मेरो श्यामा श्याम धाम,
जहँ पाइये ब्रजरस बिनुहि दाम।
अस मेरो श्यामा श्याम धाम,
जहँ आवतिं छुपि ललितादि बाम।
अस मेरो श्यामा श्याम धाम,
जहँ नित निवास कर श्यामा श्याम।
अस मेरो श्यामा श्याम धाम,
जहँ नित नव लीला आठों याम।
अस मेरो श्यामा श्याम धाम,
जहँ बँटत प्रेम रस बिनुहि दाम।
अस मेरो श्यामा श्याम धाम,
जहँ होत अकामहुँ युगल काम।
अस मेरो श्यामा श्याम धाम,
COPYRIGHT
कर मींजत ज्ञानी आत्माराम।
RADHA GOVIND SAMITI
अस मेरो श्यामा श्याम धाम,
जहँ दासी बनि रह रमा बाम।
अस मेरो श्यामा श्याम धाम,
जहँ नहिं प्रवेश कमला ललाम।

अस मेरो श्यामा श्याम धाम,
जहँ नचत ताल पै ब्रह्म श्याम।
अस मेरो श्यामा श्याम धाम,
जहँ रास प्रवेश न रमा बाम।
अस मेरो श्यामा श्याम धाम,
जहँ रहि 'कृपालु' हो पूर्णकाम।

85

ओरे मोरे मन, राधिका रमन,
निशि दिन गुन गन गाये जा।
छिन छिन नेह बढ़ाये जा।
पल पल प्रेम बढ़ाये जा।
वह जीवन क्या जीवन जिसमें, जीवनधन से प्यार न हो,
है वह प्यार प्यार क्या जिसमें, पियसुख में बलिहार न हो।
COPYRIGHT
श्यामा श्याम मिलन हित, नित प्रति,
RADHA GOVIND SAMITI
नैनन नीर बहाये जा।
मन गोविंद गुन गाये जा।
पिय प्रानन प्यारी सुकुमारी, भानुदुलारी जान रे,
चाकर बनि नित करत चाकरी, सुंदरश्याम सुजान रे॥

प्रेम 'कृपालु' सुधा चाखन हित,
राधे राधे गाये जा।
राधे के गुन गाये जा।

86

(भजु मन मेरे आठो...)

चलु मन श्री वृन्दावन धाम,
जहँ विहरत नित श्यामा श्याम।
श्यामा श्याम संग ब्रजबाम,
नित नवरस बरसत ब्रजधाम।
मेरे ठाकुर श्यामा श्याम,
मोहिं न चहिय बैकुंठहुँ धाम।
मेरे ह्वै गये लाड़लि लाल,
सब विधि हम भये मालामाल।
चलु मन गहवर कुंजलतान,
लली चरन चापत भगवान।
चलु मन श्री बरसानो गाम,
जहँ चाकर बनि रह घनश्याम।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

अलख निरंजन रूप न नाम,
सोइ अंचल पट लिपट्यो बाम।
चलु चंचल मन गोकुल ग्राम,
लखु दृग अंचल चंचल श्याम।
भज 'कृपालु' मन श्यामा श्याम,
ब्रजवनितनि जनु बनि निष्काम।

87

(भजु मन मेरे आठो...)

मेरी अलबेली सरकार,
जाकर चाकर नंदकुमार।
मैं उनकी वे मेरे यार,
नाहिँ चहत वैकुण्ठ विहार।
उन पनिहारिनि की बलिहार,
नचवति थेइ थेइ नंदकुमार।
ब्रज रज महिमा अपरंपार,
याचति मुक्तिहिँ मुक्तिहुँ चार।
मेरी स्वामिनि परम उदार,
नहिं कोउ अस 'कृपालु' सरकार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

88

(भजु मन मेरे आठो...)

स्वामिनि श्यामा स्वामी श्याम,
विहरत नित वृन्दावन धाम।
रास करत दोउ पूरन काम,
ब्रजरस बरसावत वसुयाम।
इक श्रृंगार एक छविधाम,
लेहु अमोल मोल बिनु दाम।
युगल ध्यान धरि गाइय नाम,
क्रंदन सुनत लेत कर थाम।
तजहु कामना पकरहु पाम,
माँगहु एक प्रेम निष्काम।
ब्रज रस पाव न कमला बाम,
वा रस दे वनचरि अविराम।
हरि गुरु सेवा ही रह काम,
करु बैकुंठहुँ को जय राम।
विहरत सँग लै जिन ब्रजबाम,
वे सखि हरि प्रतिबिम्ब ललाम।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

इक ते इक बढ़ि दोउ छवि धाम,
प्रेमवश्य नहिं दाम छदाम।
युगल शरण गहु लहु विश्राम,
चहु सेवा अरु रहु ब्रजधाम।
ब्रजरस मिलत सदा बिनु दाम,
शरण'कृपालु'जाहु ब्रजभाम॥

89

जय राधे कृष्ण राधे कृष्ण राधे कृष्ण राधे।
जय राधे कृष्ण राधे॥
कृष्ण नाम अटपट, सूधो नाम राधे।
कृष्ण तो हैं टेढ़े मेढ़े, सीधी सादी राधे।
कृष्ण बड़े नटखट, भोरी भारी राधे।
कृष्ण बड़े निष्ठुर, दयामयी राधे।
कृष्ण ब्रज तजि भाजे, ब्रज राजें राधे।
कृष्ण बसें नंदगाम, बरसाने राधे।
कृष्ण तो हैं कारे कारे, गोरी गोरी राधे।
कृष्ण तो हैं चंचल, गंभीरा राधे।
कृष्ण को चिढ़ावें लखि, कारो रंग राधे।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कृष्ण को कसौटी रंग, सुबरन राधे।
कृष्ण फिरें वन वन, महलन राधे।
कृष्ण धारें गुंजमाल, मुक्तामाल राधे।
कृष्ण धारें पीले पट, नीले पट राधे।
कृष्ण तो हैं लंपट, कृष्णव्रता राधे।
कृष्ण तो हैं निर्लज्ज, लज्जामयी राधे।
कृष्ण तो हैं ग्वारिया, महरानी राधे।
कृष्ण तो हैं प्यारे प्यारे, उनते प्यारी राधे।
कृष्ण तो हैं चाकर, ठकुरानी राधे।
कृष्ण तो हैं ऋणियाँ, साहूकार राधे।
कृष्ण की तृष्णा ना जाये, घूरे जायँ राधे।
कृष्ण होंय मुरछित, देखि छवि राधे।
कृष्ण गावें मुरलि में, गुन गन राधे।
कृष्ण भागे आवें जब, कोई बोले राधे।
कृष्ण को जो पाना चाहो, रटो राधे राधे।
कृष्ण पावें प्रेम जब, कृपा करें राधे।
कृष्ण करें रास जब, आज्ञा देवें राधे।
कृष्ण भी हैं रस किंतु, रससिंधु राधे।
कृष्ण जग मोहन, वाऊ मोहें राधे।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कृष्ण भूलें भगवत्ता, लखें जब राधे।
कृष्ण मोहें मदनहुँ, वाऊ मोहें राधे।
कृष्ण को तो मानें सब, जानि जन राधे।
कृष्ण की न दाल गले, सन्मुख राधे।
कृष्ण भूलें सिट्टी पिट्टी, लखि मान राधे।
कृष्ण अपनावें जब, अपनावें राधे।
कृष्ण को न दंद फंद, चले आगे राधे।
कृष्ण अगवानी करें, कहि जय राधे।
कृष्ण आये अंधेरे में, उजाले में राधे।
कृष्ण आये चोरी चोरी, खुल्लमखुल्ला राधे।
कृष्ण आये पाछे पाछे, पहले आयीं राधे।
कृष्ण के तो दो दो मैया, मैया एक राधे।
कृष्ण प्रेम मधुप सों, चातक सों राधे।
कृष्ण बँधे ऊखल, वेणीबंध राधे।
कृष्ण को ऐश्वर्य भाजे, लखि छवि राधे।
कृष्ण धार्‍यो कोटि रूप, जान्यो नहिं राधे।
कृष्ण के है पास जो भी, दिया सब राधे।
कृष्ण प्रेम भिक्षुक, दाता रानी राधे।
कृष्ण को पतंग जानो, डोरी जानो राधे।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कृष्ण करें मारधाड़, बाँटें प्यार राधे।
कृष्ण तो देवें बुहारी, महलन राधे।
कृष्ण तो मनावें जब, मान करें राधे।
कृष्ण बनि श्यामा सखि, रिझवत राधे।
कृष्ण हा हा खायँ, पैयाँ परें आगे राधे।
कृष्ण तो मुकुट धारें, धरि पग राधे।
कृष्ण रिरियावें आगे, सखियन राधे।
कृष्ण को तो जानें सब, कोई जाने राधे।
कृष्ण को नचाना चाहो, बनो दासी राधे।
कृष्ण सब पाछे बोलें, पहले बोलें राधे।
कृष्ण भी हैं दानी, किन्तु महादानी राधे।
कृष्ण को बनावें कृष्ण योगमाया राधे।
कृष्ण तो हैं सेवक, स्वामिनि राधे।
कृष्ण राख्यो मुख शुक, उर राख्यो राधे।
COPYRIGHT
कृष्ण बड़ो बदनाम, बड़ो यश राधे।
RADHA GOVIND SAMITI
कृष्ण को रुलाना चाहो, रुठवाओ राधे।
कृष्ण आगे 'रा' बोलो, कृष्ण बोलें राधे।
कृष्ण तो हैं न्यायी, दयामयी राधे।
कृष्ण तो हैं मुजरिम, न्यायाधीश राधे।

कृष्ण करें चोरी जायें, कोतवाली राधे।
कृष्ण करें अपराध, क्षमा करें राधे।
कृष्ण टेढ़ेपन को तो, सीधा करें राधे।
कृष्ण की बुरायी छुपी, पाइ संग राधे।
कृष्ण तो हैं लबरा, सच बोलें राधे।
कृष्ण तो हैं शरणार्थी, शरण देवें राधे।
कृष्ण नाचें लट्टू जैसे, राखें रुचि राधे।
कृष्ण भावें शुद्ध मन, सभी मन राधे।
कृष्ण पूर्णब्रह्म झूठे, राधे बिनु आधे।
कृष्ण को बुरा ना कहो, बुरा मानें राधे।
कृष्ण को माधुर्य जो है, वो ही तो है राधे।
कृष्ण की हैं आत्मा, व्यास कहें राधे।
कृष्ण बिनु राधे, राधे बिनु कृष्ण आधे।
कृष्ण रोयें राधे बिनु कृष्ण बिनु राधे।
राधे ही हैं कृष्ण अरु, कृष्ण ही हैं राधे।
राधे उर बसे कृष्ण, कृष्ण उर राधे।
राधे ही बनी हैं कृष्ण, कृष्ण बने राधे।
राधे कहे भजो कृष्ण, कृष्ण कहे राधे।
फल एक कृष्ण भजो या भजो राधे।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

भेद भी अभेद भी है कृष्ण अरु राधे।
कृष्ण शक्तिमान शक्ति ह्लादिनि राधे।
मेरे ठाकुर कृष्ण ठकुरानी राधे।
मेरे स्वामी कृष्ण मेरी स्वामिनि राधे।
राधे भजें कृष्ण कृष्ण, कृष्ण भजें राधे।
राधे भजे कृष्ण मिलें, कृष्ण भजे राधे।
कृष्ण भजो या 'कृपालु', भजो राधे राधे।

90

(भक्ति-शतक)

जय जय प्यारी प्यारी प्यारी जय जय प्यारे नंदकिशोर।
जोइ प्यारी मुख चंद्र चकोर, सोइ राधावर प्रियतम मोर।
जोइ प्रियतम मुख चंद्र चकोर, सोइ श्यामा जू स्वामिनि मोर।
दोउ चंद्रमुख दोउ चकोर, मेरो जीवन जुगल किशोर।
इक कारो तनु इक तनु गौर, दोउन चित दोउन चित चोर।
दोऊ परमहंस चित चोर, लेत न काहे मम चित चोर।
जाकर चाकर नंदकिशोर, सोइ बरसाने वारी मोर।
जाके चरण चापें चितचोर, सोइ प्यारी नथवारी मोर।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

निरतत मोरकुटी बनि मोर, जेहि सुख लगि सोइ मानिनि मोर।
करु विलम्ब न लाड़िलि मोर, सुधि 'कृपालु' लो हौं हूँ तोर।

91

जय राधे जय कृष्ण जय वृन्दावन
रसिक मुकुट मनि जय गोपीजन।
राधे राधे रटें श्याम, राधे रटें श्याम श्याम
राधे श्याम युगल नाम, मेरो है जीवन। जय राधे०।।
हौं भई सहचरि राधे रानी की,
नित्यधाम वृन्दावन महरानी की।
नित्यसेवा नित्यधाम, नित्य पावूँ आठों याम।
राखौं रुचि सोई जोई ठकुरानी की। जय राधे०।।
मेरो एक प्राणधन, एक ही जीवन,
नंदनंदन मदन मोहन, राधिका रमन।
श्याम ही है मेरो यार, श्याम ही सों मेरो प्यार।
श्याम ही समायो है 'कृपालु' तन मन। जय राधे०।।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

92

(ठाकुर युगल किशोर...)

जय जय निज छवि पर हरि वारी,
जय जय हँस प्यारी दै तारी।
जय जय धनि धनि सोई ब्रजनारी,
जय जय अस्तुति कर हरि गारी।
जय जय इक हरि द्वै तनुधारी,
जय जय इक प्रियतम इक प्यारी।
जय जय प्रियतम भज नित प्यारी,
जय जय प्यारिहुँ भज बनवारी।
जय जय दिय गल बहिँयन जोरी,
जय जय देहु दिठौना गोरी।
जय जय दोउ ठाकुर दोउ चाकर,
जय जय कोउ न जान गति जाकर।
जय जय श्याम गौर वर जोरी,
जय जय किंकरि करु बरजोरी।
जय जय जुग जुग जीवहु जोरी,
जय जय नवल किशोर किशोरी।
जय जय दोउ 'कृपालु' मम ठाकुर,
जय जय सुन मन इनहिंन ला उर॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

93

ठाकुर युगल किशोर हमारो,
चाकर हम पिय प्यारी के।
गुरु सेवा ही धर्म हमारो,
दास न हम श्रुति चारी के।।
चाह इहै, कछु चाह न रह उर,
दास न मुक्ति बिचारी के।
सुखी रहौं सेवत नित सुख महँ,
प्यारी अरु बनवारी के।।
पास न फटकउँ भूलेहुँ कबहुँक,
श्री बैकुंठ बिहारी के।
युगल विहार लखौं निशि वासर,
अनुगत ह्वै ब्रजनारी के।।
करौं टहल बनि महल टहलिनी,
श्री बरसाने वारी के।
COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI
होउँ विभोर निपट नटखट को,
दै दै गारी दारी के।।
जिनके अगनित गुन गन गावत,
मति हारी श्रुति चारी के।

उनके अवगुन गावति गोपिन,
पुनि पुनि चोरी जारी के।।
महाकालहूँ काँपत थर-थर,
डर ते जिन गिरिधारी के।
सोइ काँपत थर-थर साँटी ते,
ब्रज यशुदा सी नारी के।।
शिव सनकादि समाधि साधि चह,
दर्शन जिन बनवारी के।
पूर्णकाम कामी बनि बिहरत,
सँग इक कुबरी नारी के।।
नहिं मान्यो अपराध पूतनहिं,
गरल पिवावन वारी के।
दै 'कृपालु' निज लोक मातु सम,
को पटतर बनवारी के।।

COPYRIGHT
RADHA **94** SAMITI

(ठाकुर युगल किशोर...)

मम प्यारी वृषभानुदुलारी,
पिय नँदनंदन बनवारी।

मम प्यारी बरसाने वारी,
पिय राधावर गिरिधारी।
मम प्यारी अति भोरी भारी,
पिय नटखट नट तनुधारी।
मम प्यारी नथ बेसर वारी,
पिय कारी कामरि धारी।
मम प्यारी सिर चूनरि वारी,
पिय छवि मोर मुकुट वारी।
मम प्यारी नीलाम्बर सारी,
पिय छवि पीताम्बर वारी।
मम प्यारी छवि पिय ते प्यारी,
पिय छवि प्यारी ते प्यारी।
मम प्यारी छवि पर पिय वारी,
पिय छवि पर वारी प्यारी।
मम प्यारी 'कृपालु' सुकुमारी,
पिय प्यारी पर बलिहारी॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मेरी प्यारी सदा किशोरी,
मेरो प्रियतम सदा किशोर।

मेरी प्यारी पिय चित चोरी,
मेरो पिय, प्यारी चित चोर।
मेरी प्यारी रतिरस बोरी,
मेरो पिय रसिकन सिरमोर।
मेरी प्यारी भोरी भारी,
मेरो पिय नटखट बरजोर।

95

(जय जय श्यामा...)

जय जय श्यामा जय ब्रजबाम,
जय जय श्री बरसानो धाम।
जय जय रसिक रँगीलो श्याम,
जय जय जय जय श्री नंदगाम।
नित्य धाम, दोउ श्यामा श्याम,
इक बरसानो इक नँदगाम।
दोउ मम ठाकुर श्यामा श्याम,
दोउ विहरत वृन्दावन धाम।
दोउ मम ठाकुर पूरनकाम।
दोउ एक हैं द्वै तनु द्वै नाम।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

प्रेम रूप दोउ श्यामा श्याम,
दोउ प्यासे दोउ पूरन काम।
रसिक शिरोमणि श्यामा श्याम,
विहरत कुंजनि आठों याम।
प्रेम धनी दोउ श्यामा श्याम,
बरसावत ब्रजरस ब्रजधाम।
दोउ मन बुधि इक श्यामा श्याम,
लीला हित भये द्वै ब्रजधाम।
यद्यपि द्वै तनु श्यामा श्याम,
तदपि आत्मा इक अभिराम।
द्वै एक, एक द्वै श्यामा श्याम,
यह रहस्य जानति ब्रजबाम।
श्यामा बड़ नहिं बड़ नहिं श्याम,
बड़ो प्रेमवश दोउ सुखधाम।
श्यामामय रह नित घनश्याम,
श्याममयी श्यामा बसुयाम।
श्यामा सेवति नित घनश्याम,
श्यामा कहँ सेवत सुखधाम।
श्यामा चह नित सुख घनश्याम,
श्यामा सुख चह नित सुखधाम।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

प्यासे रह दोऊ वसुयाम,
धन्य प्रेम धनि श्यामा श्याम।
धन्य प्रेम धनि धनि ब्रजबाम,
जाके वश रह श्यामा श्याम।
दोऊन चाहहु प्रेम निष्काम।
दोऊ विहरत वृन्दावन धाम।
मेरे ह्वै गये श्यामा श्याम,
छकी रहौं हौं आठों याम।
कह 'कृपालु' दोउ पूरन काम,
तदपि रहत नित ब्रजरस काम।

96

(जय जय श्यामा...)

मेरी श्यामा मेरे श्याम,
विहरत नित वृन्दावन धाम।
मेरी श्यामा मेरे श्याम,
इक श्रृंगार एक छविधाम।
मेरी श्यामा मेरे श्याम,
दे दो भीख प्रेम निष्काम।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मेरी श्यामा मेरे श्याम,
दोउन एक रूप द्वै नाम।
मेरी श्यामा मेरे श्याम,
मोहिं न चाहिय बैकुंठ ललाम।
मेरी श्यामा मेरे श्याम,
मम गति मति रति श्यामा श्याम।
मेरी श्यामा मेरे श्याम,
देत 'कृपालु' कृपा बिनु दाम।

97

नित सेवा माँगूँ श्यामा श्याम तेरी,
न भुक्ती नाहीं मुक्ती माँगूँ मैं॥
बाढ़ै भक्ति निष्काम नित मेरी,
न भुक्ती नाहीं मुक्ती माँगूँ मैं॥
तोहिं पतित जनन ही प्यारे हैं,
हम अगनित पापन वारे हैं।
पुनि कत कर एतिक बेरी,
न भुक्ती नाहीं मुक्ती माँगूँ मैं॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

यदि कह उन लइ शरणाई रे,
कहु कत पूतना गति पाई रे।
अब बेर न करु करु चेरी,
न भुक्ती नाहीं मुक्ती माँगूँ मैं॥
ये भली है बुरी है जो है तेरी है,
तुम भी सोचो सचमुच यह मेरी है।
सोचत ही बनि जाय मेरी,
न भुक्ती नाहीं मुक्ती माँगूँ मैं॥
तेरी इच्छा में इच्छा बनाती रहूँ,
तेरे सुख में ही सुख नित पाती रहूँ।
बस चाह इहै इक मेरी,
न भुक्ती नाहीं मुक्ती माँगूँ मैं॥
बिनु हेतु कृपालु कहाते हो,
पुनि क्यों साधन करवाते हो।
सुनु विनय 'कृपालु' जु मेरी,
न भुक्ती नाहीं मुक्ती माँगूँ मैं॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

98

(नित सेवा माँगूँ...)

श्री राधे राधे गोविंद राधे, श्री राधे राधे गोविंद राधे।
हमारो ऐसो गोविंद राधे, दोउ दोउन अवराधे।
गाव गुन गोविंद राधे, ध्यान मन महँ रह साधे।
पुकारो रो के गोविंद राधे, भजत अइहैं गलबहियाँ दे।
शरण गहु गोविंद राधे, न व्यापै टुक भव भय बाधे।
भजहु अस गोविंद राधे, भुक्ति अरु मुक्ति भुला दे।
भजहु अस गोविंद राधे, कलप सम लग पल आधे।
तेरो ही सुख गोविन्द राधे, चाहूँ मन ऐसा बना दे।
मिलन ना दे गोविन्द राधे, मिलन की व्याकुलता दे।
तू रस सिन्धु गोविन्द राधे, वाई में मेरे मन को डुबा दे।
तू दे या ना दे गोविन्द राधे, गोपी ते गोपी प्रेम दिला दे।
तू ही है मेरा गोविन्द राधे, रहेगा यह बुधि में बिठा दे।
सात पाँच ना दे मोहिं राधे, काउ ते गोपी प्रेम दिला दे।
न माँगो कछु गोविन्द राधे, माँगो तो माँगो माँगना मिटा दे।
देना है प्रेम गोविन्द राधे, लेना है काम मन से भगा दे।
हमारो अस गोविंद राधे, शिवानी शिव को भी बना दे।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

सरस अस गोविंद राधे, आपु लखि सुरति भुला दे।
जीवन धन गोविंद राधे, न भूलो मन पल छिन आधे।
लगा दे मन गोविंद राधे, चरण निज माया भगा दे।
सुमिरें उत गोविंद राधे, सुमिरें इत गोविंद राधे।
दोउ इक गोविंद राधे, सच्चिदानंद सदा ते।
सुमिरो नित गोविंद राधे, न भूलो मन पल छिन आधे।
तू ही तो मेरा गोविंद राधे, भुलायो मोहिं काहे बता दे।
तोहीं सों मेरा गोविंद राधे, है स्वामी सखा सुत पति नाते।
चाह इक गोविंद राधे, मेरा दासत्व दिला दे।
तू उर रह गोविंद राधे, बोध यह सतत करा दे।
चाह यह गोविंद राधे, अष्टयामी सेवा दे।
प्रेम दे दे गोविंद राधे, भुक्ति मुक्ति बैकुण्ठ ना दे।
घटे न कछु गोविंद राधे, प्रेम रस बिंदु पिला दे।
तेरा ही सब गोविंद राधे, बता दे तू ही पुनि तोहिं का दे।
भिखारी माँगे गोविंद राधे, प्रेम गोपीजन का दिला दे।
न जानूँ तोहिं गोविंद राधे, न जानूँ निज रूप जना दे।
न लागी छूटे गोविन्द राधे,तू चाहे सारा जोर लगा दे॥
सुरति रह गोविंद राधे, तिहारी जग भान भुला दे।
रोउँ नित गोविंद राधे, दरस हित ऐसी बना दे।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

न छोड़ूँ पाछा गोविंद राधे, मिलन दे या विरहा दे।
पतित हित गोविंद राधे, तोहिं तजि ठौर बता दे।
दीन की गोविंद राधे, सुने को वाको नाम बता दे।
अकारण गोविंद राधे, कृपालु कौन तुझसा बता दे।
है पायो कोउ गोविंद राधे, कृपा बिनु नाम बता दे।
'कृपालु' दोउ गोविंद राधे, निहारो मोहिं कोर कृपा दे।।

99

(जय जय राधारमना)

पिय प्यारी पिय प्यारी,
प्यारी प्यारी प्यारी पिया पिया।
अद्वितीय इक तत्व ब्रह्म ने,
अपनो ही दो रूप किया।
इक था नीरस ब्रह्मनपुंसक,
COPYRIGHT
इक ने पुल्लिंग बना दिया।
RADHA GOVIND SAMITI
इक था परम स्वतंत्र महेश्वर,
इक ने किंकर बना दिया।
इक था आनँदरूप सनातन,
इक ने रोना सिखा दिया।

इक था चलतबिनुहिं पग श्रुति कह,
इक ने दो दो चरण दिया।
इक था निर्गुण अलख अगोचर,
इक ने अगनित गुनन दिया।
इक था कर्ता धर्ता हर्ता,
इक ने बन्दी बना दिया।
इक था 'सहस्रशीर्षा पुरुषः'
इक ने नारी बना दिया।
इक को मद था इक होने का,
इक ने बहुरूपिया किया।
इक था नित निर्लेप निरंजन,
इक ने अंजन बना दिया।
इक सर्वज्ञ सर्वविद् ही था,
इक ने बाउर बना दिया।
इक था आत्माराम आत्मरति,
इक ने वाको रमण दिया।
इक था बुधि अतीत विधिहुँ बुधि,
इक ने बुद्धू बना दिया।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

इक ने चंचल रूप बनायो,
इक ने भोरो रूप किया।
इक ने ग्वारो रूप बनायो,
इक ने रानी रूप किया।
इक तनु कीन्यो नील बरन को,
इक तनु गोरो बरन किया।
इक ने रूप कियो चाकर को,
इक ने स्वामिनि रूप किया।
पिय ने प्यारी को चित चोर्‌यो,
प्यारिहुँ पिय चित चोरि लिया।
प्यारी प्रानन प्यारो प्यारो,
प्यारो प्रानन प्रिया प्रिया।
पिय देखत जित दीखति प्यारी,
प्यारी जित देखति रसिया।
इक ने नट को भेष बनायो,
इक सोरह शृंगार किया।
इक ने धार्‌यो मोर मुकुट सिर,
इक ने सुबरन मुकुट किया।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

इक ने पहिर्‌यो गुंजमाल गल,
इक ने मणि मुक्तन लरिया।
इक ने कर लकुटी लै लीन्हों,
इक ने कर आशीष दिया।
इक ने धार्‌यो पीताम्बर अरु,
इक नीलाम्बर धारि लिया।
इक बाबा किय नंद गोप को,
इक बाबा वृषभानु किया।
इक ने मारधाड़ किय असुरन,
इक ने केवल प्यार दिया।
इक को सदा मनावत बीत्यो,
इक ने नित प्रति मान किया।
इक जो दाता था सब जग का,
इक ने याचक बना दिया।
इक ने तहँ तहँ धरत फिर्‌यो सिर,
इक ने जहँ जहँ चरण दिया।
इक ब्रज तजि गयो भाजि द्वारिका,
इक ने नित ब्रज वास किया।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

इक ने इक से लिया लिया बस,
इक ने इक को दिया दिया।
इक ने इक को प्यार किया अरु,
इक ने इक को प्यार दिया।
इक ने किया करोरन प्यारी,
इक ने इक ही पिया किया।
इक प्रकट्यो बंदीगृह मथुरा,
इक प्रकटीं महलन रनियाँ।
इक ने ढोर चरायो बन-बन,
इक ने महल निवास किया।
इक सँग लट्ठ गँवारन ग्वारन,
इक सँग गुन आगरि सखियाँ।
इक ने तात मात किय द्वै द्वै,
इक ने इक पितु मातु किया।
इक ने तज्यो सखिन बनि निष्ठुर,
इक ने सब दिन साथ दिया।
इक ने इक को पगन पलोट्यो,
इक ने अस सौभाग्य दिया।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

इक को नाम लेत जग पाछे,
इक को प्रथमहिं नाम दिया।
इक ने ब्रज कहुँ ठौर न पायो,
इक कृपया नँदगाम दिया।
इक ने कीन्यो तन मन टेढ़ो,
इक ने तन मन सरल किया।
इक कारो तनु करतब कारो,
इक गोरो तनु गौर हिया।
इक ने विधि हरि हरहुँ रुलाया,
इक ने वाको रुला दिया।
इक सुभाउ किय अटपट नटखट,
इक सुभाउ अति सरल किया।
इक ने सम बनि न्याय किया बस,
इक 'कृपालु' बनि कृपा किया॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

100

हरे राम (महाराज जी)

बलिहार युगल सरकार, हमरिहुँ ओर निहार।
तुम मात पिता भरतार, हम सेवक सदा तिहार।

तुम पतितन को रखवार, हम पतितन को सरदार।
तुम दीनबंधु सरकार, हम अहंकार अवतार।
तुम करुणा को भंडार, हम याचक याचत प्यार।
तुम ही मम नातेदार, हौं अब न चहौं संसार।
तुम देत पदारथ चार, हम चहत प्रेम उपहार।
तुम कृपा करहु इक बार, हम दउँ तोहिं प्राणहुँ वार।
तुम जाको चह सरकार, बस सोइ सुहागिनि नार।
तुम त्रिभुवन मोहनहार, मोहूँ मोहहु सरकार।
तुम साँचो मीत हमार, बरबस अपना लो यार।
तुम तनु कुबरी को यार, हम परम कुटिल मन धार।
तुम देत अकारन प्यार, हम येहि आशा तनु धार।
तुम मातु अनादि हमार, हम शिशु पिवाय रसधार।
तुम कहँ प्रिय करुण पुकार, हम अति कर्कश मन धार।
तुम ही अवलंब हमार, हम निरवलंब सरकार।
तुम कर नित पर उपकार, हम मानत नहिँ आभार।
तुम दोउ एकहिं अवतार, निज जन हित द्वै तनु धार।
गति दीन पूतनहिं नार, अस को उदार अवतार।
तुम मम 'कृपालु' आधार, हम जानत नाहिँ गमार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

101

(मन करु सुमिरन...)

बलिहारी बरसाने वारी प्यारी के चरन,
मेरी प्यारी के चरन नँदनंदन शरन।
मैं तो वारी वारी वारी नथवारी के चरन,
नथवारी के चरन नव पल्लव वरन।
बलिहारी वारी वारी बनवारी के चरन,
बनवारी के चरन अशरन के शरन।
बलिहारी पनिहारी ब्रजनारी के चरन,
ब्रजनारी के चरन यदुनंदन नमन।
बलिहारी गिरिधारी सुकुमारी के चरन,
पिय प्यारी के चरन लीलाधारी के चरन।
बलिहारी हौं 'कृपालु' दोउ गवनि चरन,
दोउ गवनि चरन मुनि मनहुँ हरन।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

102

प्यारो प्यारो प्यारो प्यारी प्यारी प्यारी राधे।
जापै वारो मेरो प्यारो ऐसी प्यारी राधे।
मेरो प्यारो प्यारो प्यारे ते भी प्यारी राधे।
छवि को भी छवि देने वारी प्यारी राधे।
सुख को भी सुख देने वारी प्यारी राधे।
प्रेम सार महाभाव रूप प्यारी राधे।
मादन रस पावें इक प्यारी राधे।
योगमाया रूपिणि हैं प्यारी राधे।
प्यारी रस भी हैं रसिका भी प्यारी राधे।
प्यारी जू की उपमा हैं बस प्यारी राधे।
ब्रजरस ते बन्यो है तनु प्यारी राधे।
मेरी प्यारी प्यारी राधे सुकुमारी राधे।
मेरी प्यारी प्यारी राधे नथवारी राधे।
निर्गुण को सगुण करें प्यारी राधे।
पिय ऋणियाँ हैं साहूकार प्यारी राधे।
प्यारे रसिक भये हैं कृपा प्यारी राधे।
प्यारो पाछे आयो आगे आईं प्यारी राधे।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

पिय कारो कारो गोरी गोरी प्यारी राधे।
पिय निष्ठुर दयामयी प्यारी राधे।
पिय न्याय करें कृपा करें प्यारी राधे।
प्यारो नटखट प्यारी भोरी भारी राधे।
प्यारो टेढ़ो मेढ़ो सीधी सादी प्यारी राधे।
प्यारो बन्यो है पतंग, डोरी प्यारी राधे।
मेरो प्राण सम प्यारो, प्राण प्यारी राधे।
प्यारो लगे प्यारो किंतु अति प्यारी राधे।
प्यारी लखि पिय कह 'बलिहारी' राधे।
मेरो प्यारो बोले 'जय हो,जय हो' प्यारी राधे।
मेरो प्यारो वारो वारो लखि प्यारी राधे।
पिय को नचावें अँगुरिन प्यारी राधे।
पिय चित चोरें चोरी चोरी प्यारी राधे।
पिय काँपें लखि बंक भृकुटि राधे।
प्यारो धरे तन प्यारी हित प्यारी राधे।
ढूँढ़ें कुंज कुंज पिय 'कित प्यारी राधे'।
प्यारो धरें सिर पदरज प्यारी राधे।
प्यारो भूले सिट्टी पिट्टी लखि प्यारी राधे।
प्यारो माँगे पदरज दे दो प्यारी राधे।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

प्यारो भी है प्यारो किंतु अति प्यारी राधे।
प्यारो प्रेम भिखारी प्रेम दानी राधे।
प्यारो अँसुवन धोवे पद प्यारी राधे।
प्यारो भाजे भाजे आवें बोलो, प्यारी राधे।
प्यारो पाछे चले जित चलें प्यारी राधे।
जब होड़ होय दोऊ जीतें प्यारी राधे।
पिय को न कहो बुरा बुरा मानें राधे।
पिय सम पिय प्यारी सम प्यारी राधे।
जानें पिय प्यारी गति पिय प्यारी राधे।
प्यारो अग्नि सम दाहिका सो प्यारी राधे।
प्यारो हैं कपूर गंध सम प्यारी राधे।
प्यारो दुग्ध सम श्वेतिमा सी प्यारी राधे।
प्यारी बने प्यारो प्यारो बने प्यारी राधे।
प्यारो पीरो पट पीरो तनु प्यारी राधे।
प्यारो नीलो तनु नीलो पट प्यारी राधे।
प्यारी ही हैं प्यारो प्यारो ही हैं प्यारी राधे।
तीनों एक प्यार प्यारो अरु प्यारी राधे।
प्यार में है प्यारो, प्यारो में हैं प्यारी राधे।
प्यारो मिलें जब कृपा करें प्यारी राधे।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

प्यारी ऐसी प्यारी मोहे आपु प्यारी राधे।
'प्यारी कित गई' कहि रोयें प्यारी राधे।
दोउ मिलन में रोयें पिय प्यारी राधे।
दोउ गतिहिं 'कृपालु' जाने दोउ राधे।

मेरी प्यारी प्यारी प्यारी बरसाने वारी।
मेरी ब्रजरस बरसाने वारी प्यारी।
मेरी भोरी भोरी गोरी गोरी सुकुमारी।
मेरी प्यारी पाछे लख लख ब्रजनारी।
मेरी प्यारी जू की जय बोले बनवारी।
मेरी प्यारी लखि पिय बोले बलिहारी।
मेरी भानुदुलारी प्यारी नथवारी।

103

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जय जय जय जय माधव,
जय जय जय जय राधे।
स्वामी माधव, स्वामिनि राधे।
ठाकुर माधव, ठकुरानी राधे।

मेरे दोउ ठाकुर, माधव राधे।
मेरे मन भाय गये माधव राधे।
आग लगाय गये, माधव राधे।
भूलूँ न भूलेहुँ पल छिन आधे।
तुमहुँ न भूलहु, माधव राधे।
प्रेम अगाधे, जय श्री राधे।
विधि हरि हर, आराधे राधे।
मानु 'कृपालुहिं' अपनी राधे।

104

(मैं तो राधे राधे गाऊँ)

मेरी प्यारी प्यारी प्यारी, मेरे प्यारे प्यारे प्यारे।
मेरी प्यारी प्यारी प्यारी, मेरे प्यारे प्यारे प्यारे।
प्यारे ते भी प्यारी प्यारी, प्यारी ते भी प्यारे प्यारे।
प्यारे ते भी प्यारी प्यारी, प्यारी ते भी प्यारे प्यारे।
प्यारे प्राण प्यारी प्यारी, प्यारी प्राण प्यारे प्यारे।
प्यारे प्राण प्यारी प्यारी, प्यारी प्राण प्यारे प्यारे।
प्यारे कहें भज प्यारी, प्यारी कहें भज प्यारे।
प्यारे कहें भज प्यारी, प्यारी कहें भज प्यारे।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

प्यारे बनें कभू प्यारी, प्यारी बनें कभू प्यारे
प्यारे बनें कभू प्यारी, प्यारी बनें कभू प्यारे।
चाहे भजो प्यारी प्यारी, चाहे भजो प्यारे प्यारे।
चाहे भजो प्यारी प्यारी, चाहे भजो प्यारे प्यारे।
प्यारे आवें भजे प्यारी, प्यारी आवें भजे प्यारे।
प्यारे आवें भजे प्यारी, प्यारी आवें भजे प्यारे।
प्रेम सीमा मेरी प्यारी, रूप सीमा मेरे प्यारे,
प्रेम सीमा मेरी प्यारी, रूप सीमा मेरे प्यारे।
भोरी भारी मेरी प्यारी, नटखट मेरे प्यारे,
भोरी भारी मेरी प्यारी, नटखट मेरे प्यारे।
बरसाने की हैं प्यारी, नँदगाँव के हैं प्यारे,
बरसाने की हैं प्यारी, नँदगाँव के हैं प्यारे।
भानुनंदिनी हैं प्यारी, नंदनँदन हैं प्यारे,
भानुनंदिनी हैं प्यारी, नंदनँदन हैं प्यारे।
कीरति दुलारी प्यारी, यशुदादुलारे प्यारे,
'कृपालु' प्राण प्यारी, यशुदादुलारे प्यारे।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

105

(श्यामा मेरी ठकुरानी...)

भज श्रीकृष्णं भज श्री कृष्णं श्रीकृष्णं भज श्री कृष्णम्।
भज श्रीराधां भज श्रीराधां श्रीराधां भज श्रीराधाम्।
भज गोपालं भज गोपालं गोपालं भज गोपालम्।
नीलमणिं भज नीलमणिं भज नीलमणिं भज नीलमणिम्।
भानुसुतां भज भानुसुतां भज भानुसुतां भज भानुसुताम्।
ब्रजगोपं भज ब्रजगोपं भज ब्रजगोपं भज ब्रजगोपम्।
ब्रजधेनुं भज ब्रजधेनुं भज ब्रजधेनुं भज ब्रजधेनुम्।
ब्रजरेणुं भज ब्रजरेणुं भज ब्रजरेणुं भज ब्रजरेणुम्।
भज बलरामं भज बलरामं बलरामं भज बलरामम्।
भज श्री नन्दं भज श्री नन्दं श्री नन्दं भज श्री नन्दम्॥
भज सुखकन्दं भज सुखकन्दं सुखकन्दं भज सुखकन्दम्।
भज आनन्दं भज आनन्दं आनन्दं भज आनन्दम्।
भज राधेशं भज राधेशं राधेशं भज राधेशम्।
भज गोपेशं भज गोपेशं गोपेशं भज गोपेशम्।
भज गोपीशं भज गोपीशं गोपीशं भज गोपीशम्।
भज भगवन्तं भज भगवन्तं भगवन्तं भज भगवन्तम्।
भजत 'कृपालुं' भज नटवेषं नटवेषं भज नटवेषम्।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

106

(भजो गिरिधर...)

भज सतचित सुखघन नन्दनन्दन।
भज गोपीजन जीवन राधाधन।
भज मन राधारानी भज नन्दनन्दन।
भज मन ठकुरानी भज जीवन धन।

भज राधारानी सुखदानी रसखानी।
भज ठकुरानी महरानी ब्रजरानी।

राधारानी ठकुरानी सुखदानी की जय।
रसखानी महरानी ब्रजरानी की जय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

107

मेरी छैल छबीली राधे, मेरे छैल छबीले श्याम।
मेरी रसिक रँगीली राधे, मेरे रसिक रँगीले श्याम।
मेरी गुन गर्वीली राधे, मेरे गुन गर्वीले श्याम।

मेरी भोरी भोरी राधे, मेरे चंचल चंचल श्याम।
मेरी सीधी सादी राधे, मेरे अटपट नटखट श्याम।
मेरी प्यारी प्यारी राधे, मेरे प्यारे प्यारे श्याम।
मेरी गोरी गोरी राधे, मेरे कारे कारे श्याम।
मेरी भोरी भारी राधे, मेरे नटवर सुंदर श्याम।
प्यारे ते भी प्यारी श्यामा, प्यारी ते भी प्यारे श्याम।
मेरी रसिक शिरोमणि राधे, मेरे रसिक शिरोमणि श्याम।
मेरी अति कृपालु हैं राधे, मेरे अति 'कृपालु' हैं श्याम।।

108

(जय जय श्यामा...)

मेरी श्यामा मेरे श्याम, मेरी श्यामा मेरे श्याम।
मेरी श्यामा मेरे श्याम, दोनों पूरनकाम।
मेरी श्यामा मेरे श्याम, विहरत ब्रजधाम।
मेरी श्यामा मेरे श्याम, भजो नित दोउ नाम।
मेरी श्यामा मेरे श्याम, सुमिरहु आठों याम।
मेरी श्यामा मेरे श्याम, मेरी सब ब्रजबाम।
मेरी श्यामा मेरे श्याम, राजे वृन्दावन धाम।
मेरी श्यामा मेरे श्याम, दोउ जपै दोउ नाम।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मेरी श्यामा मेरे श्याम, पाहिमाम् पाहिमाम्।
मेरी श्यामा मेरे श्याम, दे दो प्रेम निष्काम।।

109

(मेरे तो आधार है...)

मेरे प्राणाधार हैं, पिय प्यारी के पादारविंद।
प्यारी के पादारविंद, बिहारी के पादारविंद।
गोरे पद राधिका के, नीले पद गोविंद।
मेरो मन ह्वैहैं कब, पाद पद्म को मिलिंद।
पतितन मन धोवें, ध्यावें जो पादारविंद।
प्रेम के आधीन रहें, श्रुति कहे स्वच्छंद।
आनंदहुँ दे आनंद, ऐसो राधा गोविंद।
भोरी भानुनंदिनी हैं, नटखट नंदनंद।
सोरहूँ सिँगार प्यारी, नटवेष नंदनंद।
मेरे नैन चकोर हैं, दोउ पद नख मणि चंद।
पिय संग सखा वृन्द, प्यारी संग सखी वृन्द।
दोउ पद नख मणि, चंद्रिका पै वारौं चंद।
चुवत रहत नित, दोउ पद प्रेमानंद।
प्रेमानंद बिंदु पर, वारौं कोटि ब्रह्मानंद।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ब्रह्म रूप आनँद, नंदनंदानंद कंद।
ब्रह्मानंदी याचैं जाको, पाद पद्म मकरंद।
गोपी बने डोलें शंभु, ऐसो है या प्रेमानंद।
प्यारी ह्लादिनी शक्ति रूपा, जाको दास गोविंद।
मादन रस पावें प्यारी, नहिं पावें कृष्ण चंद।
लाली के आगे न चले, लाल जू को छल छंद।
लाली पग धोवें लाल, सलिल सुता कलिंद।
लाली जब मान करें, लाल की हो वाणी बंद।
लाल जब मान करें, लाली डोलें निर्द्वन्द।
लाली लखि लाल जू को, भूलि जायँ दंद फंद।
लाल भजे लाली आवें, लाली भजे नन्दनन्द।
लाली चलें हंस चाल, लाल चलें ज्यों गयंद।
ग्वाल बाल चाल चलें, मानो सेना कपि वृंद।
धन्य भूप वृषभानु, धन्य धन्य भूप नंद।
लाली राजें भानु अंक, लाल राजें अंक नंद।
लाली लाल राजें नित, मेरे हृदयारविंद।
श्याम पियें श्यामानंद, श्यामा पियें श्यामानंद।
श्यामा श्यामानंद पियें, ब्रज गोपी गोप वृंद।
श्यामा श्याम भरोसे हौं तो, सोउँ तानि निर्द्वन्द।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

प्यारी जू ते प्यारो प्यारो, प्यारी प्यारी गोविंद।
हाय प्यारे! कहें प्यारी, हाय प्यारी! गोविंद।
दोऊ चाहें दोऊ सुख, धन्य धन्य प्रेमानन्द।
दोउ पद अरविंद, सत चित आनँद।
दोउ उर फँसे दोउ, प्रेमानंद के फंद।
दोउ हृदयारविंद, बसे दोउ पद द्वंद।
दोउ गुन गावें दोउ, दोउ दृग पट बंद।
दोउ गति जानें दोउ, कहा जानें श्रुति छंद।
देही देह भेद नहिं, दोउ सच्चिदानन्द।
दोनों में है भेदाभेद, ऐसो राधा गोविंद।
चिन्मय दोउ पद द्वन्द, का जाने 'कृपालु' मंद।

110

राधावर पर सरवस हारी,
राधा पर राधावर वारी।
इक प्यारो प्रानन अनुहारी,
इक प्यारी प्रानहुँ ते प्यारी।
इक भये बंदीगृह निशि कारी,
इक भईं नृपघर भानु उजारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

इक यशुमति घर अजिर बिहारी,
इक कीरति के महल मझारी।
इक अटपट नटवर तनुधारी,
इक सोरह शृंगार सँवारी।
इक सिर मोर मुकुट छवि प्यारी,
इक सिर चूनरि जरद किनारी।
इक सिर बिखरी लट घुँघुरारी,
इक सिर वेणी सुघर सँवारी।
इक नासा बेसर छविधारी,
इक नथ मोतियन लर छवि न्यारी।
इक कर लकुटि कामरि कारी,
इक कर वर हित नित रख प्यारी।
इक तनु नील पीत पटधारी,
इक तनु गौर, नील पट वारी।
इक चंचल गति मति रतिधारी,
इक भोरी अगनित गुन वारी।
इक अति निलज खात नित गारी,
इक अति सलज जलज दृग वारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

इक सँग ग्वाल गमार अनारी,
इक सँग अगनित गुन गन वारी।
इक वन वन गोधन वनचारी,
इक अति ऊँचे महलन वारी।
इक हित हर भये नर ते नारी,
इक हित नारी भये बनवारी।
इक तजि ब्रज गये जलनिधि पारी,
इक ब्रजवासिन संग सदा री।
इक पूछत प्यारी ते प्यारी,
इक पूछति पिउ ते बनवारी।
इक कृपालु हैं गिरिवर धारी,
इक 'कृपालु' हैं अति ही प्यारी।

COPYRIGHT

राधावल्लभ कुंज बिहारी,
RADHA GOVIND SAMITI
ब्रज युवतिन जीवन बनवारी।
राधावल्लभ कुंज बिहारी,
ब्रज रसिकन धन रासबिहारी।

111

(राधावर पर सरवस हारी)

मेरी प्राण प्यारी बरसाने वारी प्यारी,
जापै सब वारी सोउ बनवारी वारी।
जग मोहन मोहन बनवारी,
उन मोहन मन मोहिनि प्यारी।
ब्रजरस टपकत रोम रोम प्यारी,
पियत निरन्तर रसिक बिहारी।
लखि न सकत पिय अस छवि प्यारी,
रहि न सकत बिनु लखेहुँ मुरारी।
इक वर माँगे पिय दे दो मम प्यारी,
मोते कभू रूठोगी ना अति भोरी भारी।
इक वर माँगे पिय दे दो सुकुमारी,
रूठो तो मनाने ते न रोको मोहिं प्यारी।
मेरी प्यारी प्यारी बरसाने वारी प्यारी,
मेरी भोरी भारी सुकुमारी नथवारी।
मेरी ऐसी प्यारी बरसाने वारी प्यारी,
जापै वारी वारी सो 'कृपालु' बनवारी।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

112

(दृगन बिच हलकैं अलि अलकें)

राधे राधे गोविंद, गोविंद राधे राधे।

श्री वृषभानुनंदिनी राधे,
नँदनन्दन गोविंद श्री राधे राधे।
प्रेम रूप रस रूपिणि राधे,
सोइ रूप नँदनंद श्री राधे राधे।
जोइ वृषभानुनंदिनी राधे,
सोइ जानिय गोविंद श्री राधे राधे।
महाभावरूपिणि श्री राधे,
रस अम्बुधि गोविंद श्री राधे राधे।
अलबेली सरकार राधे,
अलबेलो गोविंद श्री राधे राधे।
श्री बरसानो राजति राधे,
नन्दगाम गोविंद श्री राधे राधे।
गहवर कुंजनि विहरति राधे,
गोवर्धन गोविंद श्री राधे राधे।
गोपिन संग विराजति राधे,

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

गोपन सँग गोविंद श्री राधे राधे।
वृन्दावन विहरति श्री राधे,
संग संग गोविंद श्री राधे राधे।
प्रेम रूप रस घन धन राधे,
गोधन धन गोविंद श्री राधे राधे।
आरत नाम पुकारत राधे,
भजत सुनन गोविंद श्री राधे राधे।
पतितन अपनावति श्री राधे,
निर्मल मन गोविंद श्री राधे राधे।
पायो मादन रस इक राधे,
नहिं पायो गोविंद श्री राधे राधे।
रस अम्बुधि रसिका श्री राधे,
रसिक रास गोविंद श्री राधे राधे।
कीन्यो कृपा दृष्टि जब राधे,
भे 'कृपालु' गोविंद श्री राधे राधे।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

113

(श्री गुरुदेव कृपाल...)

राधे राधे गोविंद गोविंद राधे राधे।
ह्लादिनि शक्ती राधे, शक्तिमान हैं गोविंद,
इक दूजे बिनु दोउ रहें आधे आधे।
यद्यपि दोउ इक राधे गोविंद,
तदपि रटत हरि निशि दिन राधे राधे।
सत चित आनन्द गोविंद श्रुति कह,
सदघन चिदघन आनंदघन राधे।
प्रेम तत्व अवतार गोविंद,
प्रेम तत्व अवतारी प्यारी राधे।
सिंहासन आरूढ़ ललिहिं लखि,
भुज उठाय हरि कह जय राधे राधे।
मनिहारिनि लिलिहारिनि बनि बनि,
रिझवत कहि कहि दरस दिखा दे राधे।
मानिनि लखि स्वामिनिहिं मनावत,
कहि तुम बिनु नहिं कल इक पल राधे।
इन्द्रनीलमणि सम रँग गोविंद,

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

दामिनि दुति सम गौर किशोरी राधे।
यद्यपि दोउ 'कृपालु' मम ठाकुर,
तदपि बात कछु औरहिं रानी राधे।

114

(मन तेरो साँचो..)

राधे गोविन्दा गोविन्दा, राधे राधे गोविन्दा।
सदघन चिदघन आनँदकन्दा, राधे राधे गोविन्दा।
वारौं कोटिन ब्रह्मानन्दा, राधे राधे गोविन्दा।
खारो लग ऐश्वर्यानन्दा, ऐसो माधुर्यानन्दा।
गति नहिं चारिहुँ श्रुति छन्दा, राधे राधे गोविन्दा।
राधे जोइ सोइ गोविन्दा, राधे सोइ जोइ गोविन्दा।
इक हैं सुगन्ध, इक हैं कपूर सम राधे गोविन्दा।
हैं इक क्षीर, श्वेतिमा हैं इक, राधे राधे गोविन्दा।
बन गये दोउ चकोर दोउ चन्दा, राधे राधे गोविन्दा।
जानें दोउन की गति दोउन, राधे राधे गोविन्दा।
राधे गोविन्दा सखि वृन्दा, तीनिहुँ उर धरु मतिमन्दा।
रसिकन धन वृन्दावन-चन्दा, राधे राधे गोविन्दा।
बनि गये शंकर नर ते नारी, ऐसो युगल प्रेम फन्दा।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तेरो स्वामी श्याम स्वामिनी श्यामा, राधे गोविन्दा।
परखत भुज पसारि तोहिं पल छिन, राधे राधे गोविन्दा।
अइहैं भाजत करु टुक क्रन्दन, मम मन राधे गोविन्दा।
लखिहौं कब मानिनिहिं मनावत, राधे राधे गोविन्दा।
राधावर राधा पग चापत, राधे राधे गोविन्दा।
पिय धर मुकुट ललिहिं पग देखहुँ, राधे राधे गोविन्दा।
अइहैं गलबहियाँ दै झूमत कब, दोउ राधे गोविन्दा।
हौं अति हठी 'कृपालु' न पाछा छोड़ूँ राधे गोविन्दा॥

115

(श्यामसुन्दर हमारो..)

राधे गोविन्द गोविन्द बोल, राधे राधे गोविन्द बोल।
तेरो राधे गोविन्द प्रान,
अस कह पुनि पुनि सब श्रुति पुरान।
मन गाँठ कपट की खोल, राधे राधे गोविन्द बोल।
नामी अरु नाम समान मान,
दोउन महँ दोउन वास जान।
यह हीरा जान अनमोल, राधे राधे गोविन्द बोल।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

चिन्मय चेतन है युगल नाम,
नहिं काल नियम, नहिं नियम धाम।
पिवु प्रेम सुधा रस घोल, राधे राधे गोविन्द बोल।
सेवा ही अपना साध्य जान,
सम नरक स्वर्ग अपवर्ग मान।
है प्रबल लालसा मोल, राधे राधे गोविन्द बोल।
बस, एक ज्ञान को राखु ध्यान,
उनहिँन सुख महँ निज सुखहिँ मान।
बिनु मोल रतन ले मोल, राधे राधे गोविन्द बोल।
सच तो है स्वामी सदृश नाम,
है नित्य दास स्वामिनी श्याम।
ले नाम प्रेम रस घोल, राधे राधे गोविन्द बोल।
रसना सों रट नित प्रति राधे,
सुमिरन नहिं छूटै पल आधे।
सँग बजे चंग ढप ढोल, राधे राधे गोविन्द बोल।
श्रुति झूठेहिँ समदर्शी बखान,
हमरे मत हैं 'कृपालु' भगवान्।
दिय खोल रसिक जन पोल, राधे राधे गोविन्द बोल।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

116

श्री गोविंद गोविंद बोल, राधे राधे गोविंद बोल।
राधे नाम अनमोल, राधे राधे गोविंद बोल।
राधे ध्यावो पुनि राधे राधे बोल, राधे राधे गोविन्द बोल।
है मानुष तन अनमोल, राधे राधे गोविंद बोल।
क्रंदन करि हरि बोल, राधे राधे गोविंद बोल।
तू गाँठ कपट की खोल, राधे राधे गोविंद बोल।
तू पी ले प्रेम रस घोल, राधे राधे गोविंद बोल।
पिउ नाम प्रेम रस घोल, राधे राधे गोविंद बोल।
ले हीरा मोल अनमोल, राधे राधे गोविंद बोल।
है विरह वेदना मोल, राधे राधे गोविंद बोल।
निष्काम आँसु ले मोल, राधे राधे गोविंद बोल।
है भुक्ति मुक्ति महँ पोल, राधे राधे गोविंद बोल।
ले रतन 'कृपालु' अमोल , राधे राधे गोविंद बोल।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

महरानी राधारानी प्रेमरूपरसखानी,
जयति जयति जय वृंदावन ठकुरानी।

महरानी हूँ की महरानी मेरी राधे रानी,
विहरति पिय सँग वृन्दावन रजधानी।

प्यारी प्यारी भोरी भारी भानुदुलारी प्यारी,
जय हो जय हो जय हो जय हो बरसाने वारी।
जापै जग वारी सोउ बनवारी वारी वारी,
प्यारी प्यारी भोरी भारी बरसाने वारी प्यारी।

राधे राधे राधे राधे प्रेम अगाधे राधे,
राधे राधे राधे राधे राधे प्रेम सुधा दे राधे।

117

(कृष्णा गोविन्द गोविन्द...)

राधे गोविन्द गोविन्द गोविन्द राधे।
निज चरण कमल की लगन लगा दे।
तेरी लगन में मेरो मन मगन बना दे।
मोहिँ प्रेमनगर की डगर बता दे।
मोहिँ प्रीति करन की रीति सिखा दे।
जेहि गीत सों रीझो सोइ गीत सिखा दे।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तू रीझेगा केहि विधि आ के बता दे।
सुने श्याम न तुम सुनु स्वामिनि राधे।
निज रसिक जनों ते गोपी प्रेम दिला दे।
मोहिं गोपी प्रेम रस का चस्का लगा दे।
ब्रज गोपीजनों में मेरा नाम लिखा दे।
मेरे सोये हुये सौभाग्य जगा दे।
टुक प्रेम सुधा रस बिंदु पिला दे।
मोहिं ब्रजरस अम्बुधि मध्य डुबा दे।
मेरे 'मैं' को प्रेम रस सिंधु डुबा दे।
मेरी नैया को ब्रजरस सिंधु डुबा दे।
ब्रजवास दिला के मालामाल बना दे।
ब्रजधाम की मोहिँ ब्रजरेनु बना दे।
ब्रजधाम की कुंज लतान बना दे।
ब्रजधाम को ताल तमाल बना दे।
ब्रजधाम का केकी कीर बना दे।
ब्रजधाम का साल रसाल बना दे।
ब्रजधाम का शुक पिक गोप बना दे।
ब्रजधाम का अम्ब कदम्ब बना दे।
ब्रजधाम की चम्पा चमेली बना दे।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ब्रजधाम को मोर चकोर बना दे।
ब्रजधाम भी तू है विश्वास दिला दे।
बनमाली की गल बनमाल बना दे।
निज कुंजभवन को गगन बना दे।
पिय प्यारी व्यजन को पवन बना दे।
जहँ रास करो सोइ गगन बना दे।
ललितादि सखिन सँग रास दिखा दे।
दोउ मान प्रणय की लीला दिखा दे।
मेरा खोया हुआ दासत्व दिला दे।
निज दासी की दासी की दासी बना दे।
मोहिं लाड़लि महल की टहल दिला दे।
'तू ही मेरा है यह मोहिं बोध करा दे।
तेरे नाम में तू है ये बोध करा दे।
करि चपल दृगंचल विकल बना दे।
मेरी सिगरी बिगरी बात बना दे।
तोहिं भूलूँ न भूलेहुँ पल छिन आधे।
तू है दीनबंधु मोहिं दीन बना दे।
जिस मन ते धरूँ ध्यान वो मन ला दे।
चित चपल चरण निज अचल बना दे।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मन माने न हठीलो टुक झलक दिखा दे।
शरणागत होने का नियम हटा दे।
पूतना ने गही कब शरण बता दे।
अपना ले अगर और मगर हटा दे।
बतलाउँगा काहू सों ना शपथ दिला दे।
विश्वास न हो तो मोहिँ मूक बना दे।
मेरे उर में बसे औ किराया भी ना दे।
भुक्ति मुक्ति डाकिनी को मेरे उर से भगा दे।
तोसों माँगूं न कछु निष्काम बना दे।
'तेरा मैं' न, 'तू मेरा' ये भाव बना दे।
निज योग वियोग को रोग लगा दे।
रो के माँगा करूँ प्रेम तू चाहे ना दे।
प्रेम दे दे दरस चाहे दे चाहे ना दे।
निज दरस परस की प्यास बढ़ा दे।
COPYRIGHT
निज मधुर मिलन की अगिनि लगा दे।
RADHA GOVIND SAMITI
इक बार 'तू मेरी है' बोल सुना दे।
इक बार लगा के उर चाहे भुला दे।
ना दे मिलन तो ना दे, मोहिँ उर वेदना दे।
चरणारविंद मकरंद पिला दे।

माँगूँ मुक्ति न तव पद भ्रमर बना दे।
कछु देना न हो तो आके सिर ही हिला दे।
अपनावोगे? हाँ या ना में बता दे।
अंधेर न कर चाहे देर लगा दे।
अब छोड़ूँ न चाहे चक्र चला दे।
तोहिं छोड़ूँ तो जाऊँ किस द्वार बता दे।
लागी छूटे न चाहे पूरा जोर लगा दे।
तेरी माया प्रबल वाय मारि भगा दे।
तेरी माया ने भुलाया मोहिं तू न भुला दे।
तेरी माया को जीता हो नाम बता दे।
जग अच्छे को निभाते तू बुरे को निभा दे।
जो बुरा हूँ तेरा हूँ तू अच्छा बना दे।
मैं हूँ खोटा खरों के संग चला दे।
कहलाऊँगा तेरा चाहे जो भी सज़ा दे।
शिशु माय को न जाने वाय माय जना दे।
झुँझला के ही मोहिं इक बार बुला दे।
निज अधम उधारन विरद निभा दे।
बिनु हेतु कृपा को रूप दिखा दे।
तू 'कृपालु' कृपा बिनु मोल लुटा दे।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

118

(लाखों महफिल)

राधे गोविंद गोविंद राधे,
राधे गोविंद गोविंद राधे।
मोहिं ऐसी विरह वेदना दे,
रैन दिन गाउँ गोविंद राधे।
मोहिं दासी की दासी बना दे,
कोई सेवा मुझे भी दिला दे।
भुक्ति या पाँच मुक्तीहुँ ना दे,
अष्टयामी की सेवा दिला दे।
अपनी सेवा जो ना दे तो ना दे,
अपने जन की ही सेवा दिला दे।
अपने जन की भी सेवा जो ना दे,
सेवा की वासना ही बढ़ा दे।
वासना मेरे सुख की मिटा दे,
लालसा तेरे सुख की बढ़ा दे।
रति समर्था की गोपी बना दे,
रास में नाम मेरा लिखा दे।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

तू अकारन 'कृपालु' कृपा दे,
पात्र भी तू कृपा का बना दे।

119

(राधेरानी की जय)

श्यामा प्यारी की जय, नथवारी की जय।
बोलो बरसाने वारी की जय जय जय॥
श्याम प्यारे की जय, वंशीवारे की जय।
बोलो पीतपट वारे की जय जय जय॥
प्राण प्यारे की जय, प्राण प्यारी की जय।
गर डारे बाँह छवि न्यारी की जय॥
बनवारी की जय, नथवारी की जय।
दोउ चिन्मय दिव्य तनु धारी की जय॥
तनु गोरी की जय, रस बोरी की जय।
चितवनहिं पिया चित चोरी की जय॥
मेरे प्यारे की जय, मेरी प्यारी की जय।
इक चंचल इक भोरी भारी की जय॥
दोउ पर 'कृपालु' दोउ वारी की जय॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

120

(अवसर बीत्यो जात...)

श्री ब्रजराजकुमार प्यारो प्यारो।
श्री वृषभानुदुलार प्यारी प्यारी।
अलबेलो सरकार प्यारो प्यारो।
अलबेली सरकार प्यारी प्यारी।
नागर नन्दकुमार प्यारो प्यारो।
नागरि भानुदुलार प्यारी प्यारी।
प्रियतम मम रिझवार प्यारो प्यारो।
प्यारी मम रिझवार प्यारी प्यारी।
सखा संग दरबार प्यारो प्यारो।
सखिन संग दरबार प्यारी प्यारी।
सँग अगनित रह ग्वार प्यारो प्यारो।
सँग अगनित ब्रजनार प्यारी प्यारी।
गोकुल करत विहार प्यारो प्यारो।
गह्वर करति विहार प्यारी प्यारी।
नील बरन रिझवार प्यारो प्यारो।
गौर बरनि सुकुमार प्यारी प्यारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

नटवर भेष सँवार प्यारो प्यारो।
किय सोरह श्रृंगार प्यारी प्यारी।
लकुटि कमरिया धार प्यारो प्यारो।
सुरँग चुनरिया धार प्यारी प्यारी।
लेत लली सों प्यार प्यारो प्यारो।
देति लाल को प्यार प्यारी प्यारी।
बँध्यो लली के प्यार प्यारो प्यारो।
बाँध्यो लालहिं प्यार प्यारी प्यारी।
गयो मनावत हार प्यारो प्यारो।
मान करति नहिं हार प्यारी प्यारी।
पग चापत रिझवार प्यारो प्यारो।
लखि सखि कह बलिहार प्यारी प्यारी।
निज छवि लखि बलिहार प्यारो प्यारो।
निरखि हँसति सुकुमार प्यारी प्यारी।
प्यारिहिं छवि बलिहार प्यारो प्यारो।
प्यारो छवि बलिहार प्यारी प्यारी।
कह 'कृपालु' सुनु सार प्यारो प्यारो।
दोउ मम प्राणाधार प्यारो प्यारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

121

श्यामा मेरी ठकुरानी श्याम मेरे ठाकुर।
राधारानी ब्रजरानी ब्रजराज ठाकुर।
राधारानी ठकुरानी राधावल्लभ ठाकुर।
राधा मेरी ठकुरानी राधावर ठाकुर।
मेरी प्यारी ठकुरानी, मेरे प्यारे ठाकुर।
सोने जैसी ठकुरानी, कसौटी सो ठाकुर।
गोरी गोरी ठकुरानी कारे कारे ठाकुर।
कृपा महँ ठकुरानी जीतें हारें ठाकुर।
रस भी रसिक भी हैं ठकुरानी ठाकुर।
नित नए नए लागें ठकुरानी ठाकुर।
दोउ सुख चाहे दोउ ठकुरानी ठाकुर।
दोउ सेवा चाहे दोउ ठकुरानी ठाकुर।
छिन छिन बाढ़ै रस ठकुरानी ठाकुर।
रोम रोम रस चुवे ठकुरानी ठाकुर।
आनँदघन तन ठकुरानी ठाकुर।
ब्रज बनितनि धन ठकुरानी ठाकुर।
इक ते इक बढ़ ठकुरानी ठाकुर।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

प्रेम रूप ठकुरानी रूप रूप ठाकुर।
होड़ होय प्रेम रूप ठकुरानी ठाकुर।
छविनिधि रसनिधि, प्रेम सुधा निधि बाँकुर।
ठकुरानी ठाकुर, दोनों को ही ला उर।
दोनों ही सों गया हमारा, अब नाता जुर।
वृन्दावन रस सों है, लघु रस माथुर।
मथुरा के रसहूँ सों, लघु द्वारिका पुर।
श्यामा जू को दास श्याम, लोग कहें ठाकुर।
दोनों की सेवा को दोनों, रहते पल पल आतुर।
दोनों की गति दोनों जाने, जाने ना नर ना सुर।
श्याम ही हैं ठकुरानी, श्यामा ही हैं ठाकुर।
श्याम स्वामिनी ठकुरानी, श्यामा स्वामी ठाकुर।
प्राणप्यारी ठकुरानी, प्राण प्यारे ठाकुर।
प्यारे प्यारी ठकुरानी, प्यारी प्यारे ठाकुर।
जग जननी ठकुरानी, जगत पिता हैं ठाकुर।
जाको मातु पिता नहिं ऐसो, ठकुरानी ठाकुर।
श्यामा श्याम दोनों मेरे, ठकुरानी ठाकुर।
दोनों में जो भेद माने, वाको ज्ञान आसुर।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

दोनों में है भेदाभेद, जो न जाने बाउर।
ब्रह्म आत्मा ठकुरानी, जीव आत्मा ठाकुर।
देही देह एक दोऊ, एइ ज्ञान ला उर।
ह्लादिनि शक्ति ठकुरानी, शक्तिमान हैं ठाकुर।
शक्ति के आधीन रहें, शक्तिमान ठाकुर।
शक्ति की शक्ती ते, सत् चित् आनंद ठाकुर।
क्षीर श्वेतिमा ठकुरानी, क्षीर रूप हैं ठाकुर।
वास करें सब उर, ठकुरानी ठाकुर।
भाग्यहीन है भाग्य रचें, ठकुरानी ठाकुर।
दया करें दीनन पर, ठकुरानी ठाकुर।
दोनों की ही भक्ति ऐसी, जैसे गोधन पागुर।
प्रेम रहे निष्काम दुहुँन ते, काम प्रेम है आसुर।
जब हो मिलन लालसा अतिशय, जानो प्रेम आँकुर।
प्रेमीजन को प्रेमदान को, रहते दोनों आतुर।
श्यामा मेरी रसिक रँगीली, रसिक रँगीलो ठाकुर।
श्यामा मेरी गुन गर्वीली, गुन गर्वीलो ठाकुर।
श्यामा मेरी अलबेली, अलबेलो ठाकुर।
श्यामा मेरी भोरी भारी, श्याम बड़े चातुर।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

श्यामा भावै नीलो रंग, पीलो रंग ठाकुर।
कीरति गोद ठकुरानी, यशुदा गोद ठाकुर।
रानी बनि आईं ठकुरानी, ग्वारिया बनि ठाकुर।
श्यामा के पचीस गुन, चौंसठ गुन ठाकुर।
होड़ कृपा में होय जब, तब हारें ठाकुर।
श्यामा क्षम्यो जयंतहिं, दण्ड दीन्यो ठाकुर।
गुनगन दीने ठकुरानी, निर्गुन हुतो ठाकुर।
ठकुरानी के आगे न, दाल गले ठाकुर।
ठकुरानी को तो मानें, ठाकुर ठाकुर।
ठकुरानी लखि भूलें, छल छन्द ठाकुर।
ठकुरानी ताल देवें, नाचें थेइ थेइ ठाकुर।
श्यामा जू की टेढ़ी भौहें, सीधा करें ठाकुर।
श्यामा जू की पद रज, धारैं सिर ठाकुर।
श्यामा रूठी लखि होवें, नौ दो ग्यारह ठाकुर।
श्यामा जू ने चबवाये, नाकों चना ठाकुर।
छाछ दै के ठकुरानी, नचावति ठाकुर।
श्यामा के नचाये नाचें, लट्टू बनि ठाकुर।
श्यामा राजें सिंहासन, चापें पग ठाकुर।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

श्यामा जू को न पार पायो, कोटि तन ठाकुर।
श्यामा बनीं गोरे ग्वाल, लिलिहारी ठाकुर।
श्यामा पावैं मादन रस, ललचावैं ठाकुर।
रूठें जब ठकुरानी, हा हा खायें ठाकुर।
शोभा लखि ठकुरानी, ले बलैयाँ ठाकुर।
श्यामा जू को लाड़ लड़ावैं, आठों याम ठाकुर।
श्यामा जू की जय बोलें, बोलें संग ठाकुर।
हम बुलावें श्यामा जू को, भागे आवें ठाकुर।
ठकुरानी को ला उर, अइहैं आपु ठाकुर।
श्यामा के आधीन रहें, आठों याम ठाकुर।
श्यामा की कृपा ते पायो, रास रस ठाकुर।
श्यामा राजें नित्य ब्रज, भाजें फिरे ठाकुर।
श्यामा कृपा ते 'कृपालु' कृपा करें ठाकुर।

122

RADHA GOVIND SAMITI

जय जय वृषभानुदुलारी, जय जय बरसाने वारी।
जय जय सुकुमारी प्यारी, जय जय नथबेसर वारी।
जय जय अति भोरी भारी, जय जय नीलाम्बर वारी।
जय जय कह सब ब्रजनारी, जय जय कह सँग बनवारी।

123

(परिक्रमा)

श्यामा ही हैं श्याम अरु श्याम ही हैं श्यामा,
श्यामा श्याम विहरत वृन्दावन धामा।
श्याम तनु नीलो रंग, पीलो रंग श्यामा,
श्याम धारें पीलो पट, नीलो पट श्यामा।
श्यामा रँगी श्याम रँग, श्याम रँगे श्यामा,
ब्रजरस बरसावत ब्रज धामा।
दोउ रोम रोम बसें, दोउ श्याम श्यामा,
रास करत दोउ सँग ब्रज भामा।
श्यामा प्राणधन श्याम, श्याम प्राण श्यामा,
मेरो प्राणधन दोउ श्याम अरु श्यामा।
कोउ कहे श्याम बड़ो, कोउ कहे श्यामा,
मेरे भायें दोनों एक श्याम अरु श्यामा।
COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI
आत्माराम पूर्णकाम दोउ श्याम श्यामा,
जो भी माँगे वाको देयँ प्रेम निष्कामा।
प्रेम रस सिंधु रूप श्याम अरु श्यामा,
ज्ञानी पियें क्षार सिंधु जल विधि बामा।

प्रेम रूप रस सिंधु, दोउ श्याम श्यामा,
जो भी प्यासा माँगे वाको देयँ बिनु दामा।
श्यामा पियें श्यामानन्द, श्यामानन्द श्यामा,
श्यामा रटें श्याम श्याम, श्याम रटें श्यामा।
दोउ दोउ सुख हित आठहुँ यामा,
झगरत नित प्रति येहि ब्रजधामा।
श्यामा पावें श्याम रस, श्याम पावें श्यामा,
हौं 'कृपालु' पावूँ रस श्याम अरु श्यामा॥

124

(परिक्रमा)

जय हो जय हो जय हो प्यारी बरसाने वारी,
जय हो जय हो जय हो वृंदाविपिन बिहारी।
जय हो जय हो जय हो वृषभानुदुलारी,
जय हो जय हो जय हो सेवा कुंजबिहारी।
जय हो जय हो जय हो जय हो कीर्तिकुमारी,
जय हो जय हो जय हो जय हो रासबिहारी।
जय हो जय हो जय हो जय हो जय हो सुकुमारी,
जय हो जय हो जय हो जय हो जय हो बनवारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जय हो जय हो जय हो तेरी अति सुकुमारी,
जय हो जय हो जय हो तेरी बाँके बिहारी।
जय हो जय हो जय हो भोरी भारी सुकुमारी,
जय हो जय हो जय हो जय 'कृपालु' बनवारी॥

बलिहारी बलिहारी बरसाने वारी।
बलिहारी बलिहारी बाँके बिहारी॥

125

(परिक्रमा)

मेरो प्यारो नँदनंदन बनवारी,
मेरी प्यारी श्री वृषभानुदुलारी।
वारी वारी जाऊँ वारी छवि बनवारी,
वारी वारी जाऊँ वारी छवि नथवारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जब देखूँ नीकी लागे प्यारो छवि प्यारी,
जब देखूँ नीकी लागे प्यारी छवि प्यारी।
प्यारी ते भी प्यारी लागे पिय छवि प्यारी,
पिय ते भी प्यारी लागे प्यारी छवि प्यारी।

जेती बार देखौं छवि पिय प्यारी,
नित नई नई लागे अचरज भारी।
सुंदरता में तो हैं सम पिय प्यारी,
पै पिय सोचें मन मेरो तनु कारी।
कभू तो 'कृपालु' ढिग ऐहैं पिय प्यारी,
गलबाहीं दीने गति अति मतवारी॥

126

सत चित आनंद गोविन्द राधे।
वृन्दारक वृन्द वन्द्य गोविन्द राधे।
सत चित आनंद गोविन्द राधे।
वृन्दाविपिन चन्द गोविन्द राधे।
सत चित आनंद गोविन्द राधे।
वृन्दा वन्द्य पद द्वन्द्व गोविन्द राधे॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

127

(हमारी राधेरानी रस की खानी)

हमारे मन भाय गये, श्यामा श्याम।
हमारो जीवन दोउ, श्यामा श्याम।
हमारो प्रानन प्रिय, श्यामा श्याम।
हमारी गति मति रति, श्यामा श्याम।
हमारो सर्वस दोउ, श्यामा श्याम।
प्रेम रस सागर, श्यामा श्याम।
रूप रस सागर, श्यामा श्याम।
दुहुँन तनु सद्घन श्यामा श्याम।
दिव्य तन चिद्घन, श्यामा श्याम।
दुहुँन तन सुखघन, श्यामा श्याम।
न भूलो मन पल छिन, श्यामा श्याम।
अकिंचन को धन, श्यामा श्याम।
तू ही निर्बल बल, श्यामा श्याम।
बना लो मोहिं अपनो श्यामा श्याम।
कबै अपनैहौ श्यामा श्याम।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

दरस कब दैहौ श्यामा श्याम।
हमारिहुँ सुधि लो श्यामा श्याम।
अकारण दाता श्यामा श्याम।
प्रेम तव माँगूँ श्यामा श्याम।
मिलोगे कब मो कहँ, श्यामा श्याम।
जिया न जाय तुम बिनु, श्यामा श्याम।
पुकारो रो के छिन छिन, श्यामा श्याम।
बुलाओ करि क्रंदन, श्यामा श्याम।
दिखा दो टुक झाँकी, श्यामा श्याम।
विरह दे दो निज, श्यामा श्याम।
न छोड़ूँ तव पाछा, श्यामा श्याम।
जाउँ कहाँ तोहिं तजि, श्यामा श्याम।
शरण अशरण को, श्यामा श्याम।
तुमहिं तो मेरे, श्यामा श्याम।
हमहूँ तो तेरे, श्यामा श्याम।
पतित पावन दोउ, श्यामा श्याम।
प्रणत पालक दोउ, श्यामा श्याम।
दीन रक्षक दोउ, श्यामा श्याम।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

निठुर भये काहे, श्यामा श्याम।
भुलायो काहे मो कहँ, श्यामा श्याम।
विराजो मम उर महँ, श्यामा श्याम।
मोहि लेउ मो मन, श्यामा श्याम।
बसो रे मेरे नैनन, श्यामा श्याम।
बेर भइ आओ, श्यामा श्याम।
पिला दो टुक ब्रज रस, श्यामा श्याम।
'कृपालु' बिनु कारण, श्यामा श्याम।

128

(हमारी राधेरानी रस की खानी)

हमारो दोउ ठाकुर श्यामा श्याम।
करत नित लीला नित्य धाम।
विराजें नित श्यामा श्याम धाम।
लखत बड़भागिनि ब्रज की बाम।
बने शिव गोपी पूरनकाम।
बने ब्रज तरुवर आत्माराम।
रही ललचाती कमला बाम।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

रमण करें जन सों आत्माराम।
हमारो धन श्यामा श्याम नाम।
रटो नित छिन छिन इनको नाम।
करो इन सुमिरन आठों याम।
बँधे दोऊ बंधन प्रेमदाम।
न लावो मन महँ कोउ काम।
रहौ बरसाने या नँदगाम।
पतित पावन दोउ श्यामा श्याम।
'कृपालुहिं' हाथन लेहु थाम।

129

(हमारो धन राधा...)

हमारो धन राधा कृष्ण राधा कृष्ण राधा,
हमारो धन राधा कृष्ण राधा कृष्ण राधा।
दुहुँन महँ एकहुँ बिनु रस आधा। हमारो धन....।
कृष्ण बिनु राधा राधा बिनु कृष्ण आधा। हमारो धन....।
श्री राधा भजें कृष्ण कृष्ण भजें राधा। हमारो धन....।
श्री राधा धन कृष्ण कृष्ण धन राधा। हमारो धन....।
श्री राधा उर कृष्ण कृष्ण उर राधा। हमारो धन....।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

श्री राधामय कृष्ण कृष्णमयी राधा। हमारो धन....।
श्री राधाकृष्ण शरण न एकहुँ बाधा। हमारो धन....।
'कृपालु' सरकार कृष्ण अरु राधा। हमारो धन....।

130

अब न और तरसावो रसिया,
आओ आओ भोग लगाओ रसिया।
यद्यपि यह सच है नहिं तुम कहँ,
भूख, प्यास लागति रसिया।
तदपि भाव वश ब्रज छछिया लगि,
चोरी करत फिर्‌यो रसिया।
भाव हीन दुर्योधन व्यंजन,
नहिं टुक मन भायो रसिया।
भाव भरा केले का छिलका,
विदुरानी घर खायो रसिया।
जो रस शबरी के जूठे मुख,
बेर खाय पायो रसिया।
जनकपुरी के राज भोग महँ,
सो रस नहिं पायो रसिया।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

हौं मानत हौं भावहीन हौं,
पै सुनु खरी खरी रसिया।
कत 'कृपालु' स्तन पियो पूतनहिं
याते अब आ जावो रसिया॥

131

जेंवत मम सद्गुरु सरकार,
गावो मिलि साधक जन जेंवनार।
छप्पन व्यंजन मन नहिं भावत,
साग-पात जेंवत बलिहार।
लखत विविध पकवान मिठाइन,
आँखि दिखावत दें फटकार।
खात खात लघु बालक जनु पुनि,
मटकत बहु विधि जनहिँ निहार।
कबहुँक भोजन करत सभ्य बनि,
कबहुँक जनु शिशु सम व्यवहार।
कबहुँक दृगन मूँदि आरोगत,
जनु कर कछु गम्भीर विचार।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कबहुँक हँसत हँसावत कबहुँक,
कबहुँ बिरावत दाँत निकार।
कबहुँक खात गिरावत कबहुँक,
निज पट कबहुँक आपुन थार।
कबहुँक खात करत हठ जब कोउ,
खात जात नहिं मानत हार।
लखत 'कृपालु' भक्त जन कहि कहि,
जय हो जय सद्‌गुरु सरकार।

132

(अस रस महँ, मोहिं सद्‌गुरु बोरी)

आजु होरी है होरी है आजु होरी है।
रंग बिरंग रंग पिचकारिन, अंग अंग रँग बोरी है।
जोइ देखत सोइ हँसत कहत अस, इन्द्र धनुष छवि चोरी है।
इकटक लखतहुँ जानि सकत नहिं, को छोरा को छोरी है।
सबै दिवाने मनमाने जनु, पिये भंग रस घोरी है।
हमहुँ 'कृपालु' उच्च स्वर सों कह, सखन सखिन सँग होरी है।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

133

(अस रस महँ, मोहिं सद्‌गुरु बोरी)

रसिया सँग अलि खेलहु होरी।
जिन नैनन सों सैन चलावत, करु उन कहँ रँग सरबोरी।
जेहि मुख मुरलि बजाय बुलावत, मारहु तकि केशर घोरी।
जो भाजै तो सब अलि हिलि मिलि, घेरि लेहु चारिहुँ ओरी।
पुनि वाय बाँधि बनावहु गोरी, कहहु आजु होरी हो री।
हा हा खाय परै पैंया जब, कहहु गई कित बरजोरी।
कह 'कृपालु' पै यह जनि भूलिय, मुसकनि जाय न पिउ को री॥

134

(तू ही तू ही...)

नाचो गाओ सब साधक समुदाय,
आज गुरुदेव जन्मदिन पुनि आय।
हम सब की उमर इन्हें लगि जाय,
युग युग जियें ऐसे साधना कराय।
पुण्य पुंज से ही सब नर तनु पाय,
पुनि पुण्य पुंज से ही सद्‌गुरु पाय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

पुण्य पुंज ही तो उर श्रद्धा उपजाय,
सच्ची श्रद्धा ही तो सच्ची साधना कराय।
मन ते तो हरि गुरु स्मरण कराय,
तन धन ते जो बने सेवा भी कराय।
भुक्ति मुक्ति डाकिनी को मुँह न लगाय,
माँगो दिव्य प्रेम नित्य सेवा बलभाय।
अश्रु निष्काम मन शुद्ध कराय,
तब दे 'कृपालु' गुरु प्रेम बलभाय।।

135

(तोपै वारी वारी...)

धन्य जनक धनि जननी आज,
जेहि सुत श्री कृपालु महाराज।
नाचो झूमि झूमि तजि लाज,
कहि जय जय रसिकन सरताज।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

136

जय जय जय जय भगवति माता,
जय जय जय राम कृपाल की।

जय जय जय जय गुरुवर माता,
जय गुरुदेव कृपालु की।

137

(गुन गाओ रे मना...)

बोलो बोलो रे मना गौर हरी।
बोलो गौर हरी चैतन्य हरी।
बोलो रसिकन के सिरमोर हरी।
बोलो ब्रज बनितनि चितचोर हरी।

138

भजु गौरांग भजु गौरांग, भजु गौरांगेर नाम रे।
एइ गौरांग भजने वारे, जायँ हरि के धाम रे।
एइ गौरांग नदिया वारे, ब्रज के राधे श्याम रे।
एइ गौरांग नदिया वारे, अवध के सीता राम रे।
भीतर श्याम गौर बाहर ते, युगल रूप अभिराम रे।
श्यामा श्याम रूप होकर भी, टेरत श्यामा श्याम रे।
जगाई मधाई सम पतितन को, दीन्यो आपुन धाम रे।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ऐड़ गौरांग निज जनहूँ को, पुनि पुनि करत प्रणाम रे।
धनि गौरांग धनि उन परिजन, धनि धनि नदिया ग्राम रे।
कलिमल ग्रसित पतित सरताजहुँ, दिये प्रेम निष्काम रे।
'हरि बोल हरि बोल' बोल बोल के, किय विभोर बिनु दाम रे।
बिनु ही शस्त्र उठाये असुरन, दीन्यो आपुन धाम रे।
हिंसक सिंह व्याघ्रहूँ नाच्यो, सुनि इन मुख हरि नाम रे।
अपने दासहुँ के पद गहि कह, देहु प्रेम निष्काम रे।
एड़ अवतार असुर वध नहिं किये, दिये प्रेम निष्काम रे।
एड़ गौरांग रो रो कर कह, देहु भीख हरि नाम रे।
एड़ गौरांग सब सों यह कह, भेद न नामी नाम रे।
एड़ गौरांग बतायो कलि महँ, केवल हरि को नाम रे।
कह गौरांग नाम अपराधी, पाव न फल हरि नाम रे।
माया है नर्तकी भगा दे, उल्टा करि हरि नाम रे।
एड़ गौरांग रोम रोम ते, निकसत हरि को नाम रे।
एड़ गौरांग कह्यो नामी को, नित्य वास रह नाम रे।
भजु 'कृपालु' मन युगल एक तनु, छिन छिन आठों याम रे।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

139

(नंदनंदा सुखकंदा...)

महाप्रभु चैतन्य आनंदकंदा,
अवध बिहारी राम सोइ नँदनंदा।

महाप्रभु गौरांग महाभाव धारी,
रास बिहारी भये नदिया बिहारी।
महाप्रभु चैतन्य हरि अवतारी,
आपुनि भक्ति करें आपु मुरारी।

140

(बोलो गोर हरि)

मोर गौर हरि गौर मोर गौर हरी।
गौर हरि प्रीति हित प्रीति करी।
मोर चितचोर सोई गौर हरी।
गौर कृपा कोर मोर ओर कब री।
मोर गौर, रस सिरमोर हरी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मोर गौर, सोइ चितचोर हरी।
गौर सोई गोपी चीर चोर हरी।
बोलो रे 'कृपालु' हरी बोल हरी।

141

(रघुपति राघव)

आ जावो मम राजा राम, दे दो मोहिँ प्रेम निष्काम।
मन मंदिर के राजा राम, नैनन तपन बुझा जा राम।
निज उर मोहिँ लगा जा राम, जीवन सफल बना जा राम।
बिगरी मोर बना जा राम, प्रेम पियूष पिला जा राम॥

142

(रघुपति राघव)

आजा आजा राजा राम, मन भाजा तन छाजा राम।
आजा मन के राजा राम, तनु प्रति रोम समा जा राम।
दशरथ अजिर बिहारी राम, आजा मुनि मनहारी राम।
आजा सुख के भी सुख राम, आजा कोटि काम अभिराम।
आजा सत चित सुखघन राम, आजा दशरथ नंदन राम।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

143

(कृष्ण गोविन्द गोविन्द...)

गाने आयी मैं बधाई, प्रेम दे कौशल्या माई।
आँसुओं की भेंट लायी, दिखला दे चारों भाई।
बड़ी आशा ले के आयी, चिरजीवें चारों भाई।
निज सुत ले मो कहँ अपनाई, आशिष दे कौशल्या माई।
कौन कीन्हों पुन्य माई, जासों ऐसो सुत पाई।
जेहि अजन्मा वेद गायी, वाको तूने कैसे जाई॥
भुक्ति मुक्ति ना सुहाई, दे दे सेवा चारों भाई।
दे दे कनक भवन सेवकाई, दे दे अवध वास मोहिं माई।
तू 'कृपालु' जग माई, याते मेरी हूँ है माई।

144

(परिक्रमा)

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

श्री राम जय राम जय जय राम, श्री राम जय राम जय जय राम।
माँ कौशल्या नंदन राम, दशरथ अजिर बिहारी राम।
जगवंदन रघुनंदन राम, सुर नर मुनि मनहारी राम।
सुर नर मुनि मन हारी राम, दशरथ अजिर बिहारी राम।

जय जय दशरथनंदन राम, जय जय कोटि काम अभिराम।
तुम ही तो हो मेरे राम, मैं भी तो हूँ तेरो राम।

145

(कृष्ण गोविन्द गोविन्द...)

जय जय राम, जय जय राम,
जय जय राम, जय जय राम।
करें योगी रमन याते तेरो नाम राम।
जा ते जग जा में जग जो है जग सोइ राम।
नाचें निज छवि लखि अस मोहक राम।
तोहिं भूलूँ न भूलेहुँ पल छिन राम।
चर अचर, अचर चर किय तुम राम।
मैं हूँ पतित, पतितपावन तुम राम।
बिनु कारण करुणाकर तुम राम।
निज रिपु असुरन बधि दिय निज धाम।
दिये प्रेम गीध, शबरिहुँ तुम राम।
जूठे बेर खाय शबरिहिं किय पूर्णकाम।
किये श्राद्ध कर्म गीधहिं दिये निज धाम।
आओ भरत शत्रुघन लछिमन राम।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

लाओ जनकनन्दिनिहुँ सँग महँ राम।
जिओ जुग जुग चारिहुँ भइयन राम।
जय जय जुग जुग जिये जोरी सीता राम।
जय जय सदा सुहागिनि सीता बाम।
दोउ जल तरंग सम सीता राम।
जय जय पूर्णकाम सुखधाम सीताराम।
जय जय हमरिहुँ सुधि लो सीताराम।
टुक हेरहु मो ढिंग सीता राम।
तुमहूँ 'कृपालु' जय सीता राम।

146

(कृष्ण गोविन्द गोविन्द)

जय जय दशरथ नंदन राम ललन।
जय जय भरत लखन जय जय जय जय शत्रुघन।
जय जय अंजनि नंदन पवन सुवन।
ध्यावो राम गावो राम करि करि क्रंदन।
पावो नित नयनाभिराम राम दर्शन।
राम तेरे स्वामी सखा सुत जीवनधन।
जय जय कौशल्या सुवन राम ललन।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

147

(कृष्ण गोविन्द गोविन्द)

सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम।
मेरे राम मेरे राम मेरे राम मेरे राम।
मेरे थे मेरे हैं मेरे रहेंगे भी राम।
मेरे राजा स्वामी सखा सुत प्रियतम राम।
मेरे स्वामी भी हैं राम मेरे सखा भी हैं राम।
मेरे सुत भी हैं राम मेरे पिय भी हैं राम।

148

नृप दशरथ घर बजत बधाई।
सकल जगत को मात पिता जो,
सो कौशिल्यहिं मातु बनाई।
यह अचरज सुनि विधि हरि हर सुर,
जय जयकार करत रघुराई।
देही भये विदेह अवध महँ,
पुनि विदेह देही पद पाई।
इंद्रिय मन बुधि भये राममय,

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जड़ चेतन नहिँ परत लखाई।
राम कृपालु कृपा ते हौं हूँ,
आजु 'कृपालु' बधाई गाई।

149

(परिक्रमा)

नृप दशरथ घर अजिर बिहारी।
शरण शरण मैं तो शरण तिहारी।।
जय जय पूर्णकाम रूप रस धाम राम।
जय जय कोटि कोटि काम अभिराम राम।।
जय जय अवधपति रघुपति श्री राम।
जय जय जगतपति, सियपति श्री राम।।
आजु अवध महँ प्रकटे राम।
बोलो जय राम, जय राम जय जय राम।।
श्रुति कह जाको रूप न नाम।
सोइ नर तनु धरि प्रकटे राम।।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

150

(रघुपति राघव...)

श्री राम पूर्णब्रह्म सुखधाम,
श्री राम कोटि काम अभिराम।
दशरथ अजिर बिहारी राम,
कोटि मदन मनहारी राम।
राम नाम गुन लीला धाम,
सुमिरिय छिन छिन आठों याम।
रामहिं गाइय सुमिरिय राम,
भाव रहे उर महँ निष्काम।
मेरे ठाकुर सीताराम,
मोहिं नहिं चह बैकुण्ठ ललाम।

151

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

(परिक्रमा)

श्री राम जै राम अवध बिहारी,
शरण शरण मैं तो शरण तिहारी।
आत्मा राम पूर्णकाम अवध बिहारी,

नयनाभिराम राम शरण तिहारी।
वारी जाउँ दशरथ अजिर बिहारी,
तोहिं लखि जनक समाधि बिसारी।
शबरी के जूठे बेर खाये खरारी,
बलिहारी बलिहारी राम बिहारी।
धन्य धन्य अवध के नर अरु नारी,
जाके रोम रोम राम कह बलिहारी।

152

(परिक्रमा)

जय जय दशरथ नंदन राम।
जय जय श्री रघुनंदन राम।।
जय जय सत चित सुखघन राम।
जय जय मदन विमोहन राम।।
जय जय जानकी जीवन राम।
जय जय निज मन मोहन राम।।
जय जय आनंद घन तन राम।
जय जय अग जग जीवन राम।।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जय जय अवध बिहारी राम।
जय जय मुनि मनहारी राम।।

153

(परिक्रमा)

श्री राम जय राम, जय जय राम।
कोटि कोटि काम, अभिराम श्रीराम।।
श्री राम जय राम, जय जय राम।
पूर्णकाम नयनाभिराम श्री राम।।
श्री राम जय राम, जय जय राम।
गावो राम नाम ध्यावो, पावो सीताराम।।

154

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

भजु मन मेरे आठों याम,
जय राम जय राम जय जय राम।
नृप दशरथ नंदन श्री राम।
जनकनंदिनी सीता बाम।
इंद्रनीलमणि तनु दुति राम।

लजवत कोटि काम छवि राम।
सुख को दे सुख अस मम राम।
सतघन चितघन सुखघन राम।
शक्ति ह्लादिनी सीता बाम।
पूर्ण ब्रह्म पुरुषोत्तम राम।
आनंदहुँ आनँद दे राम।
जीवन को जीवन दे राम।
गीधहुँ हृदय लगावत राम।
दीनन को अपनावत राम।
बिनु कारण करुणाकर राम।
सबके सहज सनेही राम।
सबके ही उरपुर बस राम।
सब ईश्वर के ईश्वर राम।
राम समान एक बस राम।
राम नाम बड़ छोटो राम।
चुवत रोम प्रति रस तनु राम।
सकल विश्व स्त्रष्टा हैं राम।
सकल विश्व पालक हैं राम।
सकल विश्व संहारक राम।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

अधम उधारन हैं श्री राम।
शरणागत रक्षक हैं राम।
पतितन हृदय लगावत राम।
तुम अकिंचन के हो राम।
अशरण शरण एक तुम राम।
निर्बल के बल तुम ही राम।
निरवलंब अवलंबन राम।
तुम स्वारथ परमारथ राम।
प्रेम अकाम देहु मोहिं राम।
श्याम रूप धरि आवहु राम।
तुमहिं श्याम हो तुम ही राम।
तुम ही मम मैं भी तव राम।
विधि हरि हर तव किंकर राम।
तुम्हरी कृपा जान तोहिं राम।
परम 'कृपालु' कृपा करु राम।।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधे राधे राधे राधे राधे राधे

155

(भजु मन मेरे...)

राघवेन्द्र रघुपति श्री राम,
शोभित सीता माता बाम।
नयनाभिराम राम पूर्णकाम,
चिदघन आनँदघन तन श्याम।
प्रेम रूप रस अम्बुधि राम,
राम समान दयानिधि राम।
भुक्ति मुक्ति नहिं माँगत राम,
दे दो मोहिं प्रेम निष्काम।
नहिं चहिये बैकुण्ठ ललाम,
हमें एक रामहिं सो काम।
यदपि राम हैं पूर्णकाम,
बिके भक्त कर बिनुहिं दाम।
तुम मेरे हम तेरे राम,
पुनि मोहिं बिसरायेउ कस राम।
नहिं कृपालु कोउ अस जस राम,
गीधहुँ दीन्यों आपुनो धाम।।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

156

(मेरी बरसाने वारी...)

राम का जन्म सुनि नाचें सब चराचर,
नाचें उमा रमा सरस्वती विधि हरि हर।

157

राम राघव, राम राघव, राम राघव पाहिमाम्।
राम राघव, राम राघव, राम राघव पाहिमाम्।
भरत लक्ष्मण शत्रुहन ये रूप तुम्हरो राघव।
दाहिका सम शक्ति सीता अग्नि सम तुम राघव।
तुम ही माता, तुम पिता हो, तुम ही सर्वस राघव।
तुम हो स्वामी तुम सखा हो, तुम हो मम सुत राघव।
आत्मा को देह माना, भूल यह की राघव।
बुद्धि जाने मन न माने तुम ही मेरे राघव।
शरण में बाधक है माया वाय बरजहु राघव।
तुम न भूलो मोहिं हौं नहिं तोहिं भूलूँ राघव।
भुक्ति नहिं चह, मुक्ति नहिं चह, प्रेम चह तव राघव।
तुम अगोचर निज कृपा ते, होवो गोचर राघव।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

टुक दिखा दो बाँकी झाँकी धनुषधारी राघव।
चारों भाई जानकी माँ संग आओ राघव।
जो न देना चहहु दर्शन आके कह दो राघव।
गीध को भी उर लगाया कौन तुम सम राघव।
तुम ने तारा बानरहुँ कहँ हौं तो नर हौं राघव।
प्रेमवश शबरी के जूठे बेर खाये राघव।
शिला पर भी की कृपा अस को कृपालु राघव।
एक दिन करिहौ कृपा यह है भरोसा राघव।
देर है अंधेर नहिं है द्वार तुम्हरे राघव।
या कृपा करु या चला दो बाण निज कर राघव।
जी लिया हौं बहुत तुम बिनु अब न जीऊँ राघव।
अब न छोड़ूँ तोरा पाछा हौं हठी सुत राघव।
हौं पतित तुम पतित पावन, करहु पावन राघव।
कर कृपा तुम बिनुहि कारण बेर क्यों पुनि राघव।
तुम हो राम 'कृपालु'पुनि क्यों कृपा नहिं कर राघव।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

158

(गोविन्दा गोविन्दा...)

सीताराम सीताराम सीताराम, सीताराम सीताराम सीताराम।
पूर्णकाम अभिराम सीताराम, कोटि काम अभिराम सीताराम।
मेरे राम मेरे राम मेरे राम, मेरे राम मेरे राम मेरे राम॥
दशरथ नन्दन श्री राम, त्रिभुवन वंदन श्री राम।
असुर निकंदन राम, जन मन चंदन श्री राम।
जीवन जीवन श्री राम, कौशल्या ललन श्री राम।
सब प्राण प्राण श्री राम, चिदघन सुखघन श्री राम।
जीवों के जीव श्री राम, सुख के भी सुख श्री राम।
श्री राम श्री राम श्री राम, श्री राम श्री राम श्री राम।
जय जय अवध बिहारी राम, जय जय मुनि मनहारी राम।
मेरे नयनाभिराम श्री राम, मेरे नयनाभिराम श्री राम।
मेरे जीवनधन श्री राम, मेरे जीवनधन श्री राम।
जोइ ब्रह्म अरूप अनाम, सोइ दशरथ नंदन राम।
जोइ दशरथ नंदन राम, सोइ नँदनंदन घनश्याम।
जानकी जीवन श्री राम, प्राण सजीवन राम।
जय जय रघुनंदन राम, जय जय जग वंदन राम।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मेरे ठाकुर सीताराम, मोहिं देहु प्रेम निष्काम।
नहिं चह बैकुण्ठहुँ धाम, चह सेवा सीताराम।
सुखघन 'कृपालु' श्री राम, सुख घन तन भी श्री राम।।

159

(गोविन्दा गोविन्दा)

जय जय सीताराम सीताराम, सीताराम सीताराम।
कोटि काम अभिराम सीताराम, सीताराम सीताराम।
एक रूप द्वै नाम सीताराम, सीताराम सीताराम।
राम बने सीता सीता बनीं राम, सीताराम सीताराम।
सीता बनीं श्यामा राम बने श्याम, सीताराम सीताराम।
श्यामा श्याम कहो चाहे सीताराम, सीताराम सीताराम।
कृपा में तो जीतें सीता हारें राम, सीताराम सीताराम।
भज सीता राम सीता राम, सीताराम सीताराम।
मेरे सीता राम सीता राम, सीताराम सीताराम।
बोलो सीता राम सीता राम, सीताराम सीताराम।
ध्यावो सीता राम सीता राम, सीताराम सीताराम।
गाओ सीता राम सीता राम, सीताराम सीताराम।
आओ सीता राम सीता राम, सीताराम सीताराम।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

(गोविन्दा गोविन्दा)

राम जय जय राम जय जय राम,राम जय जय राम जय जय राम।
कोटि काम अभिराम श्रीराम, जय जय राम जय जय राम।
गावो राम ध्यावो राम पावो राम, जय जय राम जय जय राम।
सतचित आनंदघन राम, जय जय राम जय जय राम।
सब जीवन जीवन राम, जय जय राम जय जय राम।
टुक रो के पुकारो राम, भाजे अइहैं श्रीराम।
आओ राम आओ राम आओ राम, आओ राम आओ राम।

160

(राधे ठकुरानी...)

सीताराम, सीताराम, सीताराम, सीताराम,
जोई राम सोई सीता जोई सीता सोई राम।
सीताराम, सीताराम, सीताराम, सीताराम,
कभू राम बने सीता, कभू सीता बने राम।
सीताराम, सीताराम, सीताराम, सीताराम,
दोउ एक सीताराम, एक रूप द्वै नाम।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सीताराम, सीताराम, सीताराम, सीताराम,
गावहु सीताराम, सुमिरहु सीताराम।
सीताराम, सीताराम, सीताराम, सीताराम,
सुमिरहु नाम रूप गुण लीला जन धाम।
सीताराम, सीताराम, सीताराम, सीताराम,
सुमिरहु खाते-पीते आते जाते सीताराम।
सीताराम, सीताराम, सीताराम, सीताराम,
राम प्राण प्यारी सीता, सीता प्राण प्यारे राम।

161

(नथवारी रंगीली महलवारी)

त्रेता में जोइ बनि आये राम, द्वापर में सोइ बनि आये श्याम।
त्रेता में सीता बने राम, द्वापर में श्यामा बने श्याम।
त्रेता में सूधो मुकुट राम, द्वापर में टेढ़ो मुकुट श्याम।
त्रेता में अति गम्भीर राम, द्वापर में अतिशय चपल श्याम।
त्रेता में सीता सेव्य राम, द्वापर में श्यामा दास श्याम।
त्रेता में लक्ष्मण भ्रात राम, द्वापर में दाऊ भ्रात श्याम।
त्रेता में आये अवध राम, द्वापर में आये ब्रजधाम श्याम।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

त्रेता में धारे धनुष राम, द्वापर में धारे मुरली श्याम।
त्रेता में इक पत्नी व्रत राम, द्वापर में अगणित बाम श्याम।
त्रेता में धारे नेम राम, द्वापर में धारे प्रेम श्याम।
दोउ पूर्ण काम हैं श्याम राम, दोउ हैं 'कृपालु' एक राम श्याम॥

162

(ठाकुर युगल किशोर)

श्री राम जय राम जय जय राम,
श्री राम जय राम जय जय राम।
प्राणनाथ प्राणेश्वर राम,
सुमिरिय छिन छिन आठो याम।
मेरे ठाकुर सीता राम,
मोहिं नहिं चह बैकुण्ठ ललाम।

COPYRIGHT

163

RADHA GOVIND SAMITI

जय राघवेन्द्र सरकार की, जय सीता सुकुमार की।
जय सिया राम सरकार की, जय लक्ष्मण राजदुलार की।
जय राघवेन्द्र दरबार की, जय जय जय पवन कुमार की।

जय राम लक्ष्मण जानकी, जय सुधा रूप रस खान की।
जय जय जय राजा राम की, जय प्रेम रूप रस खान की।
जय जय जय राजा राम की, जय शृंग्वेरपुर धाम की।
जय जय जय सीता राम की, जय शृंग्वेरपुर धाम की।
जय जय जय सीता राम की, जय केवट रति अभिराम की।
जय सिया राम सरकार की, जय गंगा की जलधार की।
जय सिया राम सरकार की, बलिहारी केवट प्यार की।

164

(जय श्री वृषभानुदुलार की)

जय राघवेन्द्र सरकार की,जय दशरथ प्राणाधार की।
जय सतचित सुखघन सार की,जय कोटि काम बलिहार की।
जय नील जलद तनु धार की,जय कोटि काम बलिहार की।
जय सकल जगत करतार की, जय सीता के भरतार की।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

165

(भोरी भोरी मोरी किशोरी राधे)

जय सीयाराम जय जय सीयाराम।
दशरथ अजिर बिहारी राम,

जय हो जय हो अवध बिहारी राम।
जय राम जय राम जय जय राम,
जय दशरथ नंदन घनश्याम।
सदघन चिदघन सुखघन राम,
कौशल्या नंदन घनश्याम।
जीव के जीवन सुख के राम,
दे दो राम प्रेम निष्काम।

166

(प्यारी प्यारी भोरी भारी)

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
तुम तो पुकारो रोके आठों याम राम राम,
भाजे भाजे अइहैं नयनाभिराम राम राम।
रसना ते गावो राम मन ते भी ध्यावो राम,
बिनु श्रम पावो राम भाव राखि निष्काम।
बाहर भी हैं राम भीतर भी हैं राम,
वेदों में बताये राम जो भी माने पाये राम।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जय सियाराम जय श्यामा श्याम।
त्रेता में जोइ सीताराम,
द्वापर में सोइ श्यामा श्याम।
अवध बिहारी राजा राम,
वृन्दाविपिन बिहारी श्याम।
मर्यादा पुरुषोत्तम राम,
ब्रज रस रसिक शिरोमणि श्याम।
ब्रह्म एक ही है द्वै नाम,
तेहि कहु राम अथवा कहु श्याम।
एक पत्नीव्रत राजा राम,
अगनित पत्नीव्रत घनश्याम।
धर्म प्रचारक राजा राम,
प्रेम प्रचारक है घनश्याम।

COPYRIGHT
167
RADHA GOVIND SAMITI

(प्यारी प्यारी भोरी भारी)

जय हो जय हो जय हो जय हो जय हो रघुराई,
जय रघुराई जय रघुराई।

जय जय जय कौशल्या माई,
जय जय जय दशरथ नृपराई।
जय हो जय हो जय हो जय हो चारिहुँ भाई,
जय हो जय हो जय हो हनुमान गोसाई।

168

(हरे राम– श्री महाराज जी)

सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम
सीताराम सीताराम सीताराम।
जय जय सीताराम सीताराम सीताराम
सीताराम जय जय सीताराम सीताराम।
राम सीता राम सीता राम सीता राम सीता
राम राम सीताराम सीताराम।
जय जय राम जय जय राम जय जय राम
जय जय राम जय जय राम जय जय राम जय जय राम।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

169

(मेरे नंदनंदन)

जय सीताराम, जय जय सीताराम,
कोटि काम अभिराम सीताराम।
जय सीताराम, जय जय सीताराम,
चिद्घन आनंदघन सीताराम।

170

(रघुपति राघव...)

ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय।
ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय॥
धरे गोपिका भेष महेश, कृष्ण प्रेम दे दो लवलेश।
तुम्हरी कृपा कोर लवलेश, हौंहूँ पइहौं रास प्रवेश।
सुन लो भोलेनाथ उमेश, मुक्ति न चह, चह प्रेम ब्रजेश।
मंगलभवन अमंगल भेष, मोहूँ लै चलु सोइ ब्रज देश।
करौं टहल निशिदिन राधेश, उर न रहे निज सुख लवलेश।
सिखवहु तांडव नृत्य विशेष, नाचि नाचि रिझवहुँ प्राणेश।
तुम अवढर दानी विश्वेश, करहु 'कृपालुहिं' कृपा उमेश॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

171

(रघुपति राघव...)

ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय
ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय॥
भेष भयंकर पर अभयंकर, जय जय हर हर हर शिव शंकर।
मेरे माथ धरो निज हाथ, भोले भोले भोले नाथ।
भोले भोले भोले नाथ, दिखला दो मोहूँ यदुनाथ।
भोले बाबा भोले नाथ, मेरी डोरी तेरे हाथ।
जो बोले बम बम भोले, भोले वाके सँग डोले।
हर हर महादेव बोले, भोले को आसन डोले।
सबै अनाथन को है नाथ, भोले भोले भोले नाथ।
जलधारा प्रिय भोलेनाथ, लूटहू भोले भोले नाथ।
बिल्व पत्र प्रिय भोलेनाथ, जो है सब नाथन के नाथ।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

172

(रघुपति राघव...)

ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय
ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय॥

ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय, देयं कृष्ण प्रेम दीनाय।
ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय, यातु जन्म मम श्री कृष्णाय।

173

(रघुपति राघव...)

ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय,
मेरा न कोई तेरे सिवाय।
श्यामा श्याम सो मोहुँ मिलाय,
टुक ब्रज रस दो मोहुँ चखाय।
तू ही पिता अरु तू ही है माय,
नारी बनि वृन्दावन जाय।
डम डम डम डम डमरु बजाय,
आँचल ओट उमा मुसकाय।
ताण्डव नृत्य श्याम हरषाय,
प्यारी कहि हरि वाय बुलाय।
तू ब्रह्मा बनि सृष्टि रचाय,
हरि बनि रक्षा करत सदाय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

174

(कृष्ण गोविन्द गोविन्द...)

शिव शंकर हर हर बम भोले,
हर पल हर छिन हर दम बोले।

शिव शंकर हर अवढर दानी,
ब्रज रस दे दो निज जन जानी।

शिव हर हर महादेव,
गोपेश्वर गोपी प्रेम देव।

175

(कृष्ण गोविन्द गोविन्द...)

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

दीनबंधु दीनानाथ, मेरे नाथ भोले नाथ।
भोले भोले भोले नाथ, उनका हाथ मेरे माथ।
मेरे नाथ भोले नााथ, लूटो लूटो दै के माथ।
तू कैसा है भोले नाथ, तव 'कृपालु' है अनाथ।

176

(परिक्रमा)

गावो शिव ध्यावो शिव करो शिव सेवा।
माता तेरी पार्वती पिता महादेवा॥

शिव हर शंकर गौरीशं।
वंदे गंगा धरणीशं।

177

(राधे राधे गोविंदा)

जायो यशुमति लाला नाचे गावें ब्रजवाला।
जाको सब जग जायो, वाको यशुमति जायो।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

178

(नीको लागे...)

जय जय नँदनंदन , जय जय यशुदा ललन।
आज तो है तेरी छठ, दे दे टुक दर्शन।

जुग जुग जिये तेरो लाल कन्हाई।
सब मिलि गाओ आज छठ की बधाई।
नित नई लीला करे जन सुखदाई।
जय जय नंदबाबा जय जय यशुमति माई।
जय जय ब्रजवासी जिन दर्शन पाई।
कबहुँ तो लखिहौं हौं हूँ कन्हाई।

179

(जय जय पिय प्यारी)

जय जय गोपाला, गोपाला, भोला भाला गोपाला।
जय जय गोपाला, गोपाला, मोर मुकुट मुरलीवाला।
जय जय गोपाला, गोपाला, गोपाला गोकुल वाला।

180

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मेरो गोपाला, मेरो नंद लाला।
भजो मुरली मनोहर नन्द लाला।
कृष्ण गोविन्द गोविन्द गोपाला।
मुरली वाला, भजो गोपाला।

अति मतवाला, भजो गोपाला।
लकुटी वाला, भजो गोपाला।
उर वनमाला, भजो गोपाला।
बाँसुरी वाला, भजो गोपाला।
सँग ब्रजबाला, भजो गोपाला।
भोला भाला, भजो गोपाला।
देखा भाला, भजो गोपाला।
काला काला, भजो गोपाला।
कामरी वाला, भजो गोपाला।
यशोदा पाला, भजो गोपाला।
जा ने सारे जग को पाला।
गोपों ने बनाया गोपाला।

181

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

हमारो गोपाला। हमारो नंदलाला।
प्राण ब्रज बाला। वो तो बड़ा काला।
काल जेहि गाला। हृदय विशाला।
कालहुँ काला। नैन रसाला।

दीन दयाला। सैन रसाला।
परम कृपाला। लकुटिया वाला।
यशोमति पाला। बाँसुरिया वाला।
गुलाम ब्रज बाला। गड़बड़ झाला।
ब्रज का ग्वाला। कुबरी घर वाला।

182

(आजु आ जावो)

अजन्मा जनमेउ ब्रज महँ आय,
यशोदा माँ बाबा नँदराय।
पिता जेहि सब जग कह श्रुति जाय,
बनायो पिता सोइ नँदराय।
जगत पति जा कहँ वेद बताय
सोइ ब्रज महँ ब्रजराज कहाय।
सकल जग पालक जेहि श्रुति गाय,
सोइ ब्रज महँ गोपाल कहाय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधे राधे राधे राधे राधे राधे

183

(आज तो बधाई बाजे)

चलो री बधाई गाने नंद महल में।
अज को जनम भयो नंद महल में।

184

(राधा गोविन्द गीत-जन्माष्टमी)

आपका दर्शन गोविन्द राधे।
आपकी कृपा ते ही होय बता दे॥

देवकी माता जू गोविन्द राधे।
आप हो सौभाग्यशालिनी बता दे॥

नन्द के आनन्द गोविन्द राधे।
प्रकटे आनन्दकन्द बता दे॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

पुत्र जन्म सुनि नन्द गोविन्द राधे।
रोम रोम आनन्दमग्न बता दे॥

नन्द ने स्नान किया गोविन्द राधे।
सुन्दर वस्त्र आदि पहिरे बता दे॥

नन्द ने बुलवाया गोविन्द राधे।
वेदज्ञ विप्रवर गर्ग बता दे॥

गर्ग कहें श्याम लखि गोविन्द राधे।
मेरा तो जन्म हुआ सफल बता दे॥

पुनि स्वस्तिवाचन गोविन्द राधे।
किया जातकर्म संस्कार बता दे॥

सजी धजी दो लाख गोविन्द राधे।
गायें भी दी ब्राह्मणों को बता दे॥

पुनि देवताओं की गोविन्द राधे।
करवायी पूजा सविधि बता दे॥

नन्द के बन्दीजन गोविन्द राधे।
आशीर्वाद देने आये बता दे॥

दुंदुभी भेरी आदि गोविन्द राधे।
लगे बजने सब बाजने बता दे॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सब ब्रजवासी भी गोविन्द राधे।
गावें बधाई नाचें मत्त हो बता दे॥

सब ब्रजमण्डल गोविन्द राधे।
घर घर सुघर सजावे बता दे॥

ध्वजा पताका माला गोविन्द राधे।
पल्लवों की बन्दनवार सजा दे॥

गाय बैल बछड़ों को गोविन्द राधे।
तेल अरु हल्दी का लेप लगा दे॥

ब्रज के साथी ग्वाल गोविन्द राधे।
सजधज भेंट लै के आये बता दे॥

नन्द के पुत्र हुआ गोविन्द राधे।
शोर सुनि गोपियाँ विभोर बता दे॥

सब गोपी सजधज गोविन्द राधे।
नन्द घर आईं भेंट लै लै बता दे॥

नन्द घर आ आ गोपी गोविन्द राधे।
नन्दलाल को दे आशीष बता दे॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

लाला चिरजीवी हो गोविन्द राधे।
हरि करें उनकी रक्षा बता दे॥

पुनि सब गोपी मिली गोविन्द राधे।
मंगल गान गावें नाचें बता दे॥

मतवाले ग्वाले भी गोविन्द राधे।
एक दूजे पै दूध दही लुढ़का दे॥

माखन लोंदा लै लै गोविन्द राधे।
एक दूसरे पै फेंके बता दे॥

सब को ही मुँहमाँगी गोविन्द राधे।
वस्तु दी नन्द बाबा ने बता दे॥

रोहिणी भी सजधज गोविन्द राधे।
करें गोपियों का स्वागत बता दे॥

जो भी आया नन्द घर गोविन्द राधे।
सब को दिया उपहार बता दे॥

चोरी चोरी यह दृश्य गोविन्द राधे।
देखें विधि हरि हर सुर भी बता दे॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

स्वर्ग अप्सरायें भी गोविन्द राधे।
हर्ष ते नाचें विमान में बता दे॥

ब्रजराज की जय गिरिराज की जय,
जगद्गुरु श्री कृपालु महाराज की जय।

185

(राधे राधे गोविन्दा)

जय हो जय हो जय हो प्यारी, प्यारी बरसाने वारी।
जुग जुग जियो प्यारी, तोपै वारी वारी वारी।
रस बरसाने वारी, रस बरसाने आ री।
जो भी देखे कहे प्यारी, बलिहारी बलिहारी।

186

(तू ही तू ही)

आजा बरसाने वारी प्यारी प्यारी प्यारी,
आजा बरसाने बरसाने वारी प्यारी।
आजा रस बरसाने बरसाने वारी,
आजा ब्रजरस बरसाने पुनि प्यारी।
आजा आजा आजा बरसाने वारी प्यारी,
बिनुहि बुलाये भागे अइहैं बनवारी।
आजा ओ रँगीली महलनवारी प्यारी,
सँग ला बिहारी अरु सखियन सारी।
आजा आजा आजा रँगीली राधा प्यारी,
तोपै वारी वारी सब ब्रज नर नारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

187

(श्यामा श्याम गीत)

श्यामा आ गईं हैं संग लेके ब्रज बामा।
भाजे भाजे अइहैं श्याम मधुपुरि धामा॥

आईं आईं शोर चहुँ ओर ब्रज धामा।
भोरी भारी नथवारी प्यारी प्यारी श्यामा॥

ब्रह्मा, विष्णु, शिव अरु उमा रमा बामा।
हुये सब मोहित लखि छवि श्यामा॥

ब्रह्मा वेद पाठ करें बरसाने धामा।
शिव करें ताण्डव संग गोप बामा॥

भानु ने तपस्या कौन कीन्ही कौन धामा।
जाते बने बाबा शक्ति ह्लादिनी श्यामा॥

COPYRIGHT
कीरति के भाग की न समता बामा।
RADHA GOVIND SAMITI
लाली को लाड़ लड़ायो आठों यामा॥

धन्य भूप भानु धन्य कीर्ति रानी बामा।
चूमें चिपटावें दुलरावें नित श्यामा॥

धनि वृषभानु भूप धनि कीर्ति बामा।
धनि ब्रजवासी धनि बरसानो धामा॥

लाली जू की लीला लखें बड़भागी बामा।
हम भी बड़भागी लीला गुन गावें श्यामा॥

लाली जू की लीला लखें बड़भागी बामा।
हम भी बड़भागी लीला गुन गावें श्यामा॥

भानुघर भारी भीर गोप ब्रज बामा।
सब ब्रजवासी चाहें दर्शन श्यामा॥

कोऊ गावे कोऊ नाचे भानुभूप धामा।
कोउ बजावे ढोल ढप ब्रज बामा॥

तिल धरने की नाहिं ठौर भानु धामा।
भारी भीर एक स्वर बोले 'जय श्यामा'॥

गोलोक ते आईं बरसाने श्यामा।
चलो री बधाई गाने सब ब्रज धामा॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

बधाई लो बधाई लो बधाई कीर्ति बामा।
तेरी गोद प्रकट भईं ब्रह्म श्यामा॥

मणि मुक्ता थार लुटावें कीर्ति बामा।
लूटे न कोउ माँगे दर्शन श्यामा॥

मणि मुक्ता नहिं चह कीरति बामा।
कुँवरि को देखे बिनू जाउँ नहीं धामा।।

बधाई गवाई कछु ना दे कीर्ति बामा।
गोद में लै दुलराऊँ तेरी लाली श्यामा॥

कीर्ति मैया आई मैं बधाई गाने धामा।
न्यौछावर माँगूँ प्रेम निष्काम श्यामा॥

युग युग ऋणी रहौं तेरी कीर्ति बामा।
एक झलक दिखला दे लाली श्यामा॥

तेरी लाली अमर रहे ब्रज धामा।
देवें शुभकामना कीरति को बामा॥

काहु की नजर नहिं लागे ब्रज धामा।
राइ नोन वारूँ तो पै भानुलली श्यामा॥

भुक्ति मुक्ति नाहिं चह कीरति बामा।
कुँवरि को देखे बिन जाउँ नहिं धामा॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

खाली झोली लै के आई श्यामा तव धामा।
झोली भर दे दे दर्शन भीख श्यामा।।

दूर ते आई हूँ मैं तेरे धामा।
मेरी ओर लखि मुसका दे नेकु श्यामा।।

कृपा की बुलाया तूने श्यामा निज धामा।
मेरी भी उमर लग जाये तोहिं श्यामा।।

बधाई गवाई दे दे मोको कीर्ति बामा।
दिन रात सेवा करूँ धाइ बनि श्यामा।।

दिन रात गाऊँगी बधाई तव धामा।
बदले में वस्त्र धोऊँ नहलाऊँ श्यामा।।

महल में दासी बना दे कीर्ति बामा।
लोरी गाके तोरी सुलाऊँ लली श्यामा।।

बार बार गाओ बधाई न तु श्यामा।
वापस चली जायेंगी निज धामा।।

रस बरसाने आईं बरसाने धामा।
तोरे ऋण उऋण न कोउ कभु श्यामा।।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

गावो सब नाम गुन लीला अरु धामा।
यही है बधाई बालो 'जय हो जय हो श्यामा'॥

वृषभानु कीरति बरसानो धामा।
तीनों का ही अभिनन्दन करूँ श्यामा॥

दर्शन को गई बरसाने धामा।
मोहिं लखि जाने काहे मुसकाइ श्यामा॥

फूली न समाई लखि मुसकनि श्यामा।
किन्तु मुसकाई काहे सोचूँ आठु यामा॥

तोरे जन्म दिन पै भेंट का दूँ श्यामा।
मायिक मोरा तन मन धन धामा॥

मेरा तो मैं भी नहिं तेरा सब श्यामा।
तेरा तुझे दूँ तो हँसें सब ब्रज बामा॥

तू तेरा सब कुछ चिदानंद श्यामा।
'मैं' मेरा भला तेरे आवे कौन कामा॥

तोहिं भेंट का दूँ श्यामा तू तो पूर्णकामा।
आँसुओं का हार उपहार ले ले श्यामा॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

भली बुरी जैसी हूँ तेरी हूँ श्यामा।
भेंट में मुझे ही ले बना दे ब्रज बामा॥

तन मन प्राण तेरा दिया हुआ श्यामा।
देना क्या है ले ले दे दे प्रेम निष्कामा।।

सुनते थे शास्त्रों में प्रेम रूप नामा।
सोइ प्रेम रूप रूप धरि आई श्यामा॥

जब जब अवतार होवे ब्रज श्यामा।
मोहिं निज धाम में बनाना ब्रज बामा॥

ब्रज धाम में भी मिले बरसाना धामा।
बरसाना में भी मिले धाई पद श्यामा।।

श्यामा जू की देह दुति चिदानन्दधामा।
अन्धकार में भी प्रकाश करें श्यामा॥

चम्पक बरनि जैसी गौर तनु श्यामा।
नीली नीली चमकीली झँगुली ललामा॥

जब ते प्रकट हुई श्यामा भानु धामा।
महल में चहल पहल रहे आठों यामा॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

आ तो गयीं श्यामा बरसाने धामा।
देखुँ तोहिं कैसे तू तो चिदानन्द श्यामा॥

वेद बताये जगजननी हैं श्यामा।
कीरति को जननी बताये ब्रजधामा॥

वेद कहें हम नाहिं जाने कौन श्यामा।
बामा कहें चलो दिखला दें भानु धामा॥

ब्रज में प्रकट हुआ ब्रह्म बनि श्यामा।
लाली लाली कहें ब्रजवासी ब्रजधामा॥

लाली की छठी है आज बरसाने धामा।
चलो री बधाई गाने सब ब्रज बामा॥

चलो बरसाने बधाई गाने बामा।
सुनि के बधाई मुसका देंगी श्यामा।।

नाचो गाओ छठी की बधाई ब्रज बामा।
सुनि के बधाई मुसकाई कालि श्यामा॥

आओ आओ आओ बधाई गाओ बामा।
रोज रोज आवे न छठी प्यारी श्यामा॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मायिक शिशु की बधाई गावैं गामा।
तेरा तो तन मन चिदानन्द श्यामा।।

श्यामा जू को दिव्य तनु आनंद धामा।
दिव्य दृष्टि मिले तब देखे कोउ श्यामा।।

भानु को बधाई दें या दें कीर्ति बामा।
या दें बधाई श्यामा को ब्रजधामा।।

प्रथम बधाई की हैं पात्र ब्रज बामा।
जिन्हें ब्रज रस देने आये श्याम श्यामा।।

अभी तो हुई हैं छे दिन की ही श्यामा।
बाबा मैया पहिचानें अचरज बामा।।

काम, क्रोध, लोभ आदि, शत्रु छे श्यामा।
छठी को छहों को बना दे निष्कामा।।

श्यामा की छठी है चलो बरसाने धामा।
गावो बधाई पावो दर्शन श्यामा।।

श्यामा की छठी को गाओ श्यामा की बधाई।
भुक्ति मुक्ति माँगो जनि माँगो सेवकाई।।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

188

(मैं तो राधे राधे गाऊँ...)

बड़े भैया बलराम, छोटे भैया घनश्याम।
बड़े भैया बलराम, छोटे भैया घनश्याम।
गोरे गोरे बलराम, नीले नीले घनश्याम।
गोरे गोरे बलराम, नीले नीले घनश्याम।
बलि बलि जाऊँ राम, बलि बलि जाऊँ श्याम।
बलि बलि जाऊँ राम, बलि बलि जाऊँ श्याम।
नित नव नव राम, नित नव नव श्याम।
नित नव नव राम, नित नव नव श्याम।
मेरो ठाकुर राम, मेरो ठाकुर श्याम।
मेरो ठाकुर राम, मेरो ठाकुर श्याम।
आनँदघन राम, आनँदघन श्याम।
आनँदघन राम, आनँदघन श्याम।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

189

(मेरी बरसाने वारी...)

मेरे बड़े ठाकुर, गोरे गोरे हलधर।
मेरे छोटे ठाकुर, नीले नीले गिरिधर।
मेरे दोउ ठाकुर, हलधर गिरिधर।
जय हो, जय हो हलधर, जय हो, जय हो गिरिधर।
आजु प्रकट भयो ब्रज महँ हलधर।
सब हिलमिल बोलो जय हो, जय हो हलधर।
जब जब लरें दोउ हलधर गिरिधर।
जीतें बड़े भाई हलधर हारें गिरिधर।

190

(मेरे नंदनंदन)

जय हो बड़े ठाकुर, हल मूसलधर,
जय हो छोटे ठाकुर, अधर मुरलिधर।
जय हो जय हो बड़े ठाकुर मेरे हलधर,
जय हो जय हो छोटे ठाकुर मेरे गिरिधर।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

पहले सब बोलो जय हो दाऊ भैया,
पुनि पाछे सब बोलो जय हो कन्हैया।
जब जब लँगरई करत कन्हैया,
तब तब डाट लगावे दाऊ भैया।

191

(परिक्रमा)

दाउ भैया सँग कन्हैया जायँ बलि लखि मैया।
आउ मैया लै कन्हैया दुहुँन लेउ बलैया।
नाचे बलुआ सँग कनुवा तारि दें दोउ मैया।
जय हो मैया जय कन्हैया जय हो दाऊ भैया।
एक हलधर एक गिरिधर सोहे गोदिहिं मैया।
दाउ भैया सँग कन्हैया चलत दै गरबँहियाँ।

192

RADHA GOVIND SAMITI

(कुंज कदंबनि डार)

जय बलराम जय जय घनश्याम।
जय ब्रजबाम जय जय ब्रजधाम।

जय हलधर जय जय मुरलीधर।
दरस दिखा दे गलबहियाँ धर।

चलो अलि सब मिलि देय बधाई।
ब्रज अज जायो रोहिणी माई।

193

(परिक्रमा)

आज तो प्रकट भयो ब्रज बड़ो ठाकुर।
हलधर बलदाऊ नाम रण बाँकुर॥
आँखि दिखावत जब जब हलधर।
अति डरपत गिरिधर जेहि डर डर॥
दोउ भगवान कह्यौ पाराशर।
आयेउ तदपि प्रथम ब्रज हलधर॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधे राधे राधे राधे राधे राधे

194

(मन तेरो साँचो...)

जय जय रसिक जीवन, जय जय गिरि गोवर्धन।
जाके जगवन्दन नँदनंदन शरन।
जो हैं रसिकन धन श्री गोवर्धन।

195

(ठाकुर युगल किशोर...)

धनि धनि रसिकन धन गोवर्धन,
जिनको अर्चन कर नँदनंदन।
धनि रसिक जीवन धनि वृन्दावन,
धनि भानुनंदिनी नँदनंदन।
धनि रसिक जीवन धनि वृन्दावन,
धनि धनि 'कृपालु' ब्रज के रज कन।।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

196

चाकर हम श्री गोवर्धन के, अरु गोवर्धन धारी के।
विहरत नित गिरिराज तरेंटी, संग संग बनवारी के।।

197

(परिक्रमा)

द्वापर युग महँ गिरि गोवर्धन।
किये स्वर्ग सम्राट इन्द्र मद मर्दन॥

गोवर्धन सोई जोई नँदनन्दन।
जोई नँदनन्दन सोई गोवर्धन॥

सब मिलि बोलो जय गिरि गोवर्धन।
पुनि सब मिलि बोलो जय नँदनन्दन॥

गोवर्धन दिव्य दिव्य नँदनन्दन।
देखे सोई जाको दिव्य दृष्टि दें रसिकजन॥

जय जय गोवर्धन जय जय नँदनन्दन।
जय जय जय जय रसिकन धन गोपीजन॥

सात दिन रात किये इन्द्र जल बरसन।
हरि ने उठाया अँगुरिन गोवर्धन॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

हार मानि आया इन्द्र ढिग गोवर्धन।
अँगुठा दिखावे सब सखा नँदनन्दन॥

नया नाम गिरिधारी पाया नँदनन्दन।
बन्द हुआ मायिक सुरपति पूजन॥

हरि ने उठाया जब गिरि गोवर्धन।
सखा कहें लठिया लगाओ नँदनन्दन॥

गिरिधर ब्रजधर मुरली अधर धर।
तेरी गति नहीं जाने विधि हरि हर॥

गिरिधर ब्रजधर मुरली अधर धर।
धरणी धर उर धर पीताम्बर॥

गिरि को उठाया देखा राधा नँदनन्दन।
याते तनु काँपा याते काँपा गोवर्धन॥

गिरि को उठाये बीते सात दिन सात रात।
हाथ दबा दूँ आजा गिरि ले ले दूजे हाथ॥

198

(रघुपति राघव...)

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जगन्नाथ नाथों के नाथ,
दर्शन देकर करिय सनाथ।
जगन्नाथ हैं दीनानाथ,
वे ही एक अनाथन नाथ।

जगन्नाथ दीनों के साथ,
धरहु माथ मम आपुन हाथ।
जगन्नाथ तुम सम नहिं नाथ,
मोहू सम नहिं कोउ अनाथ।
जगन्नाथ हैं ऐसे नाथ,
ब्रह्मादिक सब नावें माथ।

जयति कृष्ण जय जय बलराम,
जयति सुभद्रा बाम ललाम।
जगन्नाथ स्वामी नयन पथगामी,
नयन पथगामी भव भवतु मे।

199

(जय राघवेन्द्र सरकार...)

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जय जय नृसिंह अवतार की
जय जय प्रह्लाद कुमार की।
जय जय निज जन रखवार की
जय प्रेम ह्लादिनी सार की

जय जय नर हरि सरकार की
जय जय भक्तन सरदार की।

200

(नीको लागे मोको...)

तेरा अंत न पायो कोऊ अनंत।
हारे सारे वेद, सारे शास्त्र, सारे संत।
तू भी तो न पायो अंत अपना अनंत।
माने न अनंत हम, माने तोहिं कन्त।
तेरे नाम रूप लीला, गुण हैं अनन्त।
अशरण शरण कहत तोहिं संत।
शरण शरण मैं हूँ, शरण अनंत।

201

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

(परिक्रमा)

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।
माता तो पार्वती पिता महादेवा।।
जयति गजानन गणपति देवा।
जय जय पार्वती जय महादेवा।।

202

(गाइये वृषभानु लली गुन)

गाइये गणपति जगवंदन।
सिद्धि सदन शिवशंकर नंदन।
भक्त जनन के विघ्न विनाशन।
भक्ति भाव ते करु नित अर्चन।
मन ते करु नित गणपति चिंतन।
रसना ते गाइय उन गुनगन।
जय हो जय हो गणपति त्रिभुवन वंदन।
तुम्हरो कोटि कोटि अभिनंदन।
कोउ भल गन भी ले, जग भू रज कन।
पै गणपति तव गुन नहिं सक गन।
हे गणेश गजपति लंबोदर।
कृष्ण प्रेम पाऊँ यह दो वर।
अति कृपालु तुम गौरी नंदन।
अस वर दो दे राधा दरसन।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

203

(तू ही तू ही..)

श्री गणेश लंबोदर आदि पूज्यदेवा।
माता हैं पार्वती पिता महादेवा।।

204

(परिक्रमा)

गणपतये नमः गणपतये नमः,
प्रियपतये नमः निधिपतये नमः।
जय गणेश गणपति लंबोदर,
दे दो दिव्य प्रेम दामोदर।

205

(राधा गोविन्द गीत–गोपाष्टमी)

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

छोटो सो कन्हैया गोविन्द राधे।
चल्यो है चरावन गैया बता दे।।

एक काँधे पै तो गोविन्द राधे।
धरि ली कन्हैया ने कामरी बता दे।।

दूजे काँधे पै गोविन्द राधे।
छोटी सी धरि ली लठिया बता दे॥

छोटी सी मुरली को गोविन्द राधे।
कान्ह ने खोंस ली फेंट में बता दे॥

सिर पर मोरपंख गोविन्द राधे।
कमर में पतरी करधनी बता दे॥

गल में वनमाल गोविन्द राधे।
पग में नुपूर कनक बता दे॥

कटि पीताम्बर गोविन्द राधे।
कछनी भी कछी मैया ने बता दे।।

संग में है भैया गोविन्द राधे।
मनसुख आदि सखावृंद बता दे॥

वंशीवट जाके गोविन्द राधे।
बैठे तरु छाया में बता दे॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

गैया चरन लागी गोविन्द राधे।
हरी हरी घास बड़े चाव से बता दे॥

चारों ओर सखा सब गोविन्द राधे।
बीच में बैठे कन्हैया बता दे॥

मुरली मधुर तान गोविन्द राधे।
छेड़ी कान्ह ने तबहीं बता दे॥

यह मन मोहिनी गोविन्द राधे।
झाँकी लखे विधि हरि हर बता दे॥

उत ते जो जाय सो गोविन्द राधे।
रुक जाय देखे झाँकी बता दे॥

गैयान कानन को गोविन्द राधे।
दोना बनाय सुनै तान बता दे॥

छोटे बड़े सखा सब गोविन्द राधे।
हास परिहास करें कान्ह सो बता दे॥

COPYRIGHT

ब्रज की रमणी भी गोविन्द राधे।
लखि श्याम तनु सुधि भूली बता दे॥

RADHA GOVIND SAMITI

जहाँ बैठे घनश्याम गोविन्द राधे।
तहाँ भई भीर गोपियों की बता दे॥

नभ में विमानन गोविन्द राधे।
बैठी लखें देव अंगनायें बता दे॥

भैया ने कहा कन्हैया गोविन्द राधे।
अब चलो घर भई साँझ बता दे॥

ग्वाल बाल गोपाल गोविन्द राधे।
गोपाष्टमी को गो पूजन करा दे॥

धन्य धन्य ब्रज गोप गोविन्द राधे।
ब्रह्म श्याम को भी घोड़ा बना दे॥

धनि धनसुख सखा गोविन्द राधे।
जाके रूठने पै श्याम आँसू बहा दे॥

धन्य धन्य गोपवृन्द गोविन्द राधे।
खेल में हरा हरा के कान्ह को रुला दे॥

COPYRIGHT

सखा कृष्ण नहीं कहे गोविन्द राधे।
कभू कहें कान्हा कभू कनुआ बुला दे॥

RADHA GOVIND SAMITI

ग्वारिया गवार बनि गोविन्द राधे।
ब्रह्म ग्वाल सुख हित ग्वालों को जिता दे॥

ग्राम्य ग्वाल बाल प्रेम गोविन्द राधे।
हरि से ग्राम्य लीला करवा दे॥

मनसुख श्याम से भी गोविन्द राधे।
कान पकड़ा के उठ्ठक बैठक करा दे॥

खेल से निकाल देंगे गोविन्द राधे।
ऐसा कहि धनसुख श्याम को रुला दे॥

मुरली छिना ले गाय गोविन्द राधे।
चरें नहीं बार बार मुरली बजा दे॥

सखा कहे लड्डु खा ले गोविन्द राधे।
श्याम मुख खोलैं तब अन्य को खिला दे।।

सखा खाय दहीबड़ा गोविन्द राधे।
श्याम जब माँगे सखा अँगुठा दिखा दे॥

खेल में हरा के सखा गोविन्द राधे।
सर्वद्रष्टा की आँख पट्टी बँधा दे॥

गोप बना के सखा गोविन्द राधे।
खेल में हरा के निज घोड़ा बना दे॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

धन्य भाग्य गोपवृन्द गोविन्द राधे।
जिनको सनातन मित्र ब्रह्म बता दे॥

206

(राधा गोविन्द गीत–भैया दूज)

स्वामी सखा सुत पति श्याम बता दे।
आज तो भैया कन्हैया बता दे॥

बाप और मैया हैं गोविन्द राधे।
आज तो हैं भैया कन्हैया बता दे॥

दाऊ जी के भैया हैं कृष्ण कन्हैया।
मैंने भी आज बना लिया भैया॥

रास रचैया भैया गाय चरैया।
नाग नथैया भैया लेउँ बलैया॥

COPYRIGHT

यशुमति मैया छैया दाऊ जी के भैया।
RADHA GOVIND SAMITI
लेत बलैया मैया नाचें ता ता थेइया॥

207

इक नज़र उनको देखा गज़ब हो गया,
हाले दिल अब तो मेरा अजब हो गया।
दीनो दुनिया की दौलत सँजोई थी जो,
लुट गई पल में या रब गज़ब हो गया।
तन गया मन गया अक्ल हैरान है,
दर्दे दिल बढ़ रहा है गज़ब हो गया।
वे तरस भी न खायें मेरे हाल पर,
फिर न आये दुबारा गज़ब हो गया।
दर्दे दिल में मगर ऐसा पाया मज़ा,
अब कहेंगे 'कृपालु' गज़ब हो गया।

208

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

इनकी नज़रों में मय का जाम है तोबा तोबा।
जिसने देखा हुआ नाकाम है तोबा तोबा।
दर्द देना रुलाना ही इनको आता है,
काम कड़ुवा है मधुर नाम है तोबा तोबा।

लगा के आग बुझाना तो जानते ही नहीं,
मुस्कुराने से इन्हें काम है तोबा तोबा।
इनके पहलू में कहीं दिल ही नहीं है शायद,
इसलिये ये सब अंजाम है तोबा तोबा।
ये बताते मुहब्बत में है देना देना,
ये 'कृपालु' हैं कृपा काम है तोबा तोबा।

209

ऐसी पिला दे साकी, बन जाये तू हमारा,
ख्वाहिश नहीं है मुझको, मैं भी बनूँ तुम्हारा।
नज़रो से मय का प्याला, ऐसा पिला खुदारा,
नज़रो में बस रहे इक, तेरा ही बस नज़ारा।
है खेल इक नज़र का, घटना है क्या तुम्हारा,
कर दो करम वो हमदम, भूलूँ जहान सारा।
बैठे हैं ता कयामत, दर पे लगा के नारा,
है यह 'कृपालु' नारा बस एक तू हमारा।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधे राधे राधे राधे राधे राधे

210

तेरा नाम सुन के दाता दर पर फ़क़ीर आया,
उस नाम के मुताबिक कर दे करम ख़ुदाया।
सुनते हैं जो भी आया, भर-भर के झोली पाया,
पर यह फ़क़ीर मौला झोली न संग लाया।
गर ख़ाली हाथ लौटा तो कान खोल कर सुन,
हो जायेगा जहाँ से तेरे नाम का सफ़ाया।
सामान दे या ना दे मर्ज़ी तेरी है रहवर,
झोली तो दे दे दाता ठोकर बहुत है खाया।
है देर तेरे घर में अन्धेर तो नहीं है,
आशिक 'कृपालु' ने यह राज़ है बताया।

211

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मेरे साकी ने ऐसा करम कर दिया,
मेरी रग रग में यारों नशा हो गया।
ख्वाब में भी न देखा कभी मयकदा,
मय छुआ भी न यारों नशा हो गया।

एक साकी की नज़रों का देखा नशा,
जुर्म इतना है यारों नशा हो गया।
जिसको बचना हो, नज़रों से बच के रहो,
वर्ना बोलोगे यारों नशा हो गया।
खुद को कर दे नज़र तब वो मिलती नज़र,
मुझ 'कृपालु' को या रब नशा हो गया।

212

लाखों महफ़िल जहाँ में यूँ तो,
तेरी महफ़िल सी महफ़िल नहीं है।
स्वर्ग सम्राट हो या हो चाकर,
तेरे दर पे है दर्ज़ा बराबर।
तेरी हस्ती को हो जिसने जाना,
कोई आलम में आक़िल नहीं है॥
दर बदर खाके ठोकर जो थक कर,
आ गया ग़र कोई तेरे दर पर।
तूने नज़रों से जो रस पिलाया,
वो बताने के काबिल नहीं है॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तुम जो कहते हो तुम हो हमारे,
जोड़ मुझ से ही तू नात सारे।
जान कर भी जो नाता न जोड़े,
उसके मानिंद जाहिल नहीं हैं॥
जीते मरते जो तेरी लगन में,
जलते रहते विरह की अगन में।
है भरोसा तेरा हे मुरारी!
तू दयालु है कातिल नहीं है॥
तेरे रस का लगा चस्का जिसको,
लगता बैकुंठ फीका सा उसको।
डूब कर कोइ बाहर न आया,
इसमें भँवरें हैं साहिल नहीं है॥
प्रेम में है सदा देना देना,
सोचना भी नहीं कुछ है लेना।
लेने वाला बड़ा भोला भाला,
ब्रज के रसिकों में शामिल नहीं है॥
मान ले उनको तू सिर्फ अपना,
सीख ले याद में बस तड़पना।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

वे लगा लेंगे सीने से तुझको,
दिल में बैठे हैं गाफिल नहीं हैं॥
तू पिला दे जो इक बूँद रस की,
क्या कमी है तेरे पास रस की।
फिर जो छोड़े कोई तेरा पीछा,
ऐसा जाहिल भी काहिल नहीं है॥
कर्म है उनकी निष्काम सेवा,
धर्म है उनकी इच्छा में इच्छा।
सौंप दो इनके हाथों में डोरी,
ये 'कृपालु' हैं तँगदिल नहीं हैं॥

213

सुन के आया हूँ सरकार तेरे कूचे में,
बख्शे जाते हैं गुनहगार तेरे कूचे में।
सारे आलम की है बहार तेरे कूचे में,
मुझे तो मिलता है बस प्यार तेरे कूचे में।
सरकार शाहे आलम कुछ शेर अर्ज़ है ये,
गुस्ताख़ी माफ हो पर, सुन कर बुरा न मानें।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

है तेरा नाम जैसा देखा न काम वैसा,
मयकश तरस रहे हैं मुद्दत से तू भी जाने।
पैमाने की ज़रूरत तुझको नहीं है साकी,
कर दे करम नज़र से हो जायें हम दिवाने।
दिल दे के ले ले दिलवर, यह शर्त ले ले वापस,
दिल ले के दे दे दिलवर, अब कर न कुछ बहाने।
चुप हैं ज़नाब यारों मतलब है साफ़ इसका,
देंगे, 'कृपालु' को भी, अब दो न इनको ताने।

214

सरकार माफ हो गुस्ताख़ी, कुछ खोटी खरी सुनाता हूँ,
मैं तेरा हूँ तेरा होकर, दर दर की ठोकर खाता हूँ।
तू समरथ वारिस है फिर भी, लावारिस मैं कहलाता हूँ,
तू व्यापक हर ज़र्रे में है पर, दीदार न तेरा पाता हूँ।
है करम तेरा मुझ पर बेहद, यह भी अनुमान लगाता हूँ,
पर इस चंचल मन पर रहवर, अधिकार नहीं कर पाता हूँ।
मन में रहती दुनियादारी, बगुला सा ध्यान लगाता हूँ,
तुझको खुश करने की खातिर, आँसू भी नहीं बहाता हूँ।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

**कर नज़रे इनायत करुणाकर, मैं माया से घबराता हूँ,
झूठा ही सही पर नाम 'कृपालु' लेकर तुझे बुलाता हूँ।**

215

**साकी लुटा रहा है मयखाना ए ज़माना,
भर भर के पी ले मय पर पैमाना साथ लाना।
दोनों जहाँ की ख्वाहिश दिल में रहे न तिल भर,
पैमाना ये ही लेकर मयकश कदम बढ़ाना।
इसका नशा है ऐसा उतरे न ता कयामत,
बढ़ता रहे हमेशा खाली न हो खज़ाना।
इक बात है 'कृपालु' यारों नशे में इसके,
शाहाना ठाठ बाहर भीतर मगर दिवाना।**

216

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

**हम तो तेरी अदा पर फ़िदा हो गये,
दीनो दुनिया सभी अलविदा हो गये।
अब न जन्नत की ख्वाहिश न दोज़ख का डर,
दिल की औकात क्या हम तो खुद खो गये।**

अब खुदा की इबादत की आदत गई,
हम ही तुम हो गये तुम ही हम हो गये।
बेवफा तुम सा कोई न देखा सुना,
फिर भी लौटे न वो तेरे दर जो गये।
बेवफा की ज़फा ही है सच्ची वफा,
राजदां है 'कृपालु' तेरे हो गये।

राधे राधे राधे राधे राधे राधे

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI